मध्यकालीन भारत के प्रमुख इतिहासकार

लेखक

डॉ एस एल नागोरी

एम ए (गोल्ड मैडलिस्ट) पी एच डी,

प्राध्यापक, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

राजकीय महाविद्यालय, सिरोही (राज)

प्राक्कथन लेखक

डॉ सी एम जैन

निदेशक,

पत्राचार पाठ्यक्रम निदेशालय

सुखाडिया विश्वविद्यालय,

उदयपुर (राज०)

आदिनाथ प्रकाशन

श्रादिनाथ प्रकाशन
C/o श्रीनाथ स्टोर
सिनमा रोड सिरोही (राज०)



प्रकाशक

द्वितीय सस्करण 1986

मूल्य 60 00



मुद्रक
जगदम्बे प्रिन्टस
सिरोही (राज०)

युवा शोधकर्ता के प्रेरणा स्रोत

डॉ एस आर दत्ता

चिकित्सा अधिकारी (सेवा निवृत्त)

को

सादर समर्पित

आ।
C/o
सिने।



प्रकाश

द्वितीय

मूल्य ६



मुद्रक
जगदम्बे ।
सिरोही (

प्राक्कथन

मुझे प्रसन्नता है कि डॉ एस एल नागोरी ने इतिहास विषय पर "मध्यकालीन भारत के प्रमुख इतिहासकार" नामक पुस्तक प्रस्तुत की है। सबसे पहले तो मैं डॉ नागोरी को उनके इस सराहनीय प्रयास के लिये अपनी ओर से हार्दिक बधाई देना चाहता हू कि उन्होंने इस विषय पर अत्यन्त सुबोध शैली में यह पुस्तक लिखी। डॉ. नागोरी ने अपनी इस पुस्तक मे नवीनतम शोध के आधार पर प्राप्त तथ्यों व अद्यतन विचारधाराओ का समावेश किया है। विषय के गम्भीर अध्येता होने के कारण वे अपनी बात बहुत सरल और बोधगम्य ढग से कह पाये हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि डा० नागोरी की यह पुस्तक इतिहास के विद्यार्थियों एवं गम्भीर अध्येताओ के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के प्रणयन के लिए मैं एक बार पुन डा० नागोरी को अपनी ओर से बधाई देता हू और कामना करता हू कि वे इसी लगन और उत्साह से अपने लेखन कार्य मे जुटे रहेंगे।

स्वाधीनता दिवस, 1984

डा० सी एम जैन
निदेशक
पत्राचार पाठ्यक्रम निदेशालय
सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज०)

भूमिका

मैंने 'मध्यकालीन भारत के प्रमुख इतिहासकार' नामक पुस्तक प्रामाणिक ग्रंथों को आधार बनाकर लिखी है। सम्भवत यह प्रथम कृति है जिसमे मध्यकालीन भारत के प्रमुख इतिहासकारों एव उनकी कृतियों को एक साथ समाविष्ट किया गया है एव उनका विविध दृष्टियो से विस्तृत विवेचन भी किया गया है। मेरा विश्वास है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों एव इतिहास के पाठको के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक को लिखने मे मैंने जिन ऐतिहासिक कृतियों की सहायता ली है, उन इतिहासकारो के प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य मानता हू।

मै इस अवसर पर राजनीति विज्ञान के भारत प्रसिद्ध विद्वान माननीय डा० सी एम जैन, निदेशक पत्राचार पाठ्यक्रम निदेशालय, सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हू जो मुझे लेखन काम हेतु प्रेरणा देते रहे हैं। मैं डा० जैन के प्रति इसलिए भी कृतज्ञ हू कि उन्होंने अपनी अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद मेरे अनुरोध को स्वीकारते हुए इस पुस्तक के लिये 'प्राक्कथन लिखने की कृपा की।

मैं हमारे प्राचार्य एव विद्वान लेखक प्रो श्री एच बी सक्सेना का भी हृदय से आभार प्रकट करता हू जिनका सराहनीय सक्रिय सहयोग एव मार्ग दर्शन मुझे हमेशा प्राप्त होता रहता है।

मैं अपने अभिन्न मित्र एव राजस्थान के प्रसिद्ध युवा साहित्यकार डा० डी पी अग्रवाल के प्रति भी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हू जिनसे लेखक को प्रेरणा एव प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

मैं डा० बी एल शर्मा, प्रो० राजबहादुर आझा एव प्रो० के एम जैन को भी धन्यवाद दिये बिना नही रह सकता जिन्होंने मेरा उत्साहवर्द्धन किया एव अपने अमूल्य समय एव सुझावो से इस कार्य को पूर्ण करने मे योग दिया।

श्री सी एल शर्मा के प्रति भी आभार व्यक्त करना मेरा कर्तव्य हो जाता है जिनके सहयोग के अभाव मे यह पुस्तक प्रकाशन हेतु इतनी जल्दी तैयार नही हो सकती थी।

अन्त मे यदि यह पुस्तक इतिहास जगत मे तनिक भी उपादेय हो सकी तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूगा।

स्वाधीनता दिवस 1984 | डा० एस एल नागोरी

विषय सूची

भाग (1) सल्तनत काल के प्रमुख इतिहासकार

अध्याय		पृष्ठ संख्या
1	अलबेरूनी तारीख उल हिन्द	
2	हसन निजामी, ताज उल मासिर	
3	काजी मिनहाज उस सिराज तबकात ए-नासिरी	
4	अमीर खुसरो की कृतियां	13
5	जियाउद्दीन बरनी तारीख ए फीरोजशाही एव फतवा ए-जहांदारी	20
6	शम्स ए सिराज अफीफ तारीख ए फीरोजशाही	38
7	सुलतान फीरोज तुगलक फुतूहात ए- फीरोजशाही	43
8	ख्वाजा अबू बक इसामी फुतूह-उस-सलातीन	45
9	इब्नबतूता किताब-उल रहला	49
10	यहिया बिन अहमद तारीख ए-मुबारकशाही	54
11	अहमद यादगार तारीख ए-सलातीन-ए-अफगानी	58
12	नियामतुल्ला मखजन ए अफगानी	60
13	अब्दुल्ला तारीख ए-दाऊदी	63
14	सीरत ए फीरोजशाही	67
15	ऐनुल मुल्क मुल्तानी इन्शाये माहरु	69

भाग (2) मुगल काल के प्रमुख इतिहासकार

1	बाबर बाबरनामा	1
2	मिर्जा हैदर तारीख-ए रशीदी	14
3	गुलबदन बेगम हुमायूँनामा	17
4	जौहर आफताबची तजकिरतुल वाकेआत	23
5	ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद तबकात ए अकबरी	25
6	अब्बास खां सरवानी तारीख ए शेरशाही	30
7	अबुल फजल अकबरनामा	34
8	अब्दुल कादिर बदायूनी मुन्तखब उत-तवारीख	46
9	मोहम्मद कासिम हिन्दूशाह तारीख ए फरिश्ता	54
10	जहांगीर तुजुक ए जहांगीरी	57
11	शरीफ बिन दोस्त मोहम्मद मोतमद खां इकबालनामा-ए-जहांगीरी	60

		पृष्ठ
	कामगार खां मआसिर ए जहांगीरी	63
12	अब्दुल हमीद लाहौरी पादशाहनामा	65
13	मिर्जा अमीन कजविनी पादशाहनामा	70
14	इनायत खां शाहजहांनामा	72
15	मुहम्मद सादिक शाहजहांनामा	74
16	मिर्जा मोहम्मद काजिम आलमगीरनामा	76
17	मुहम्मद साकी मुस्तईद खां मआसिरे आलमगीरी	78
18	खाफी खां मुन्तखब उल-लुबाब	79
19	मुहम्मद कासिम इबरतनामा	89
20	भीमसेन नुस्खा ए दिलकुशा	91
21	ईश्वरदास नागर फुतूहात ए आलमगीरी	94
22	सुजानराय खुलासत उत-तवारीख	95
23	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	98

भाग (१)

सल्तनत काल के प्रमुख इतिहासकार

1 | अलबेरुनी : तारीख-उल-हिन्द

अलबेरुनी का पूरा नाम अबू रेहा मुहम्मद इब्न अहमद अलबेरुनी था परन्तु इतिहास में वह अलबेरुनी के नाम से प्रसिद्ध है। वह खीवा प्रदेश का निवासी था। उसका जन्म 973 ई० में हुआ था। वह विज्ञान और साहित्य में दक्ष था इसलिये मामुनी कुल के शासक ने उसे राजमन्त्री के पद पर नियुक्त किया। उस समय गजनी पर महमूद गजनवी शासन कर रहा था। यद्यपि खीवा का शासक महमूद का रिश्तेदार था फिर भी वह उसका राज्य छीनना चाहता था। अलबेरुनी जो कि खीवा नरेश का राज्यमन्त्री था खीवा राज्य को महमूद के हथकण्डों से कई बार बचाया था। इसलिये महमूद और उसका मन्त्री अहमद इब्न हसन मैमन्दी उसे अपना शत्रु समझते थे।

अन्त में जब 1017 ई० में महमूद ने खीवा प्रदेश पर अधिकार कर लिया और मामूनी राज्य को नष्ट भ्रष्ट कर वहां के शासक और मन्त्रियों को बन्दी बना कर गजनी ले आया। उनके साथ ही अलबेरुनी भी लड़ाई के कैदियों में पकड़कर लाया गया। महमूद और उसके मन्त्री अलबेरुनी को अपना शत्रु समझते थे इसलिये उसे महमूद के दरबार में विशेष स्थान प्राप्त नहीं हो सका। महमूद के दरबार में उसे केवल ज्योतिषी के रूप में थोड़ी बहुत प्रसिद्धि मिली। महमूद को उसकी धार्मिक नीति के कारण "खलीफा के वंश का दाहिना हाथ" और 'इस्लाम का संरक्षक' आदि उपाधियां प्राप्त हुई थी। अलबेरुनी ने इस सम्बन्ध में लिखा था कि 'उसने भारत के वैभव को सर्वथा नष्ट कर दिया, और ऐसी2 घातें की कि जिनसे हिन्दू मिट्टी के परमाणुओं की भांति बिखर गये और केवल एक ऐतिहासिक गाथा रह गई।

महमूद की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र मसऊद (1030 1040 ई०) गजनी का शासक बना। उस समय अलबेरुनी ने 'अलकानूनल मसऊदी' नामक पुस्तक मसऊद को समर्पित की। इस पर मसऊद बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने अलबेरुनी की सारी शिकायतें दूर कर दी। जब गजनी के सुलतानों ने भारतवर्ष पर आक्रमण किये तब अलबेरुनी को भी राजसेना के साथ भारतवर्ष घूमने का अवसर प्राप्त हुआ।

अलबेरुनी को हिन्दुओं के विचारों का अध्ययन करने में बहुत आनन्द प्राप्त होता था। यद्यपि महमूद की दृष्टि में हिन्दू काफिर थे जिन्हें नरक की भट्टी में जलना पड़ेगा, इसलिये वह प्रतिवर्ष भारत पर आक्रमण करता था और यहाँ के मन्दिरों और मूर्तियों को नष्ट कर अपार धन सम्पत्ति लूटकर गजनी ले जाना ही उसका मुख्य उद्देश्य था। किन्तु अलबेरुनी हिन्दुओं को श्रेष्ठ तत्ववेत्ता 'उत्तम गणितज्ञ और निपुण ज्योतिर्वेद समझता था। इतना होने पर भी अलबरूनी ने हिन्दुओं के दोषों को छिपाया नहीं है और उनकी कटु आलोचना भी की है। इसके अतिरिक्त उसने हिन्दुओं के छोटे से छोटे गुण की प्रशंसा भी की है। तीर्थ स्थानों पर स्नानघाट के बारे में उसने लिखा है कि 'इस दिशा में उन्होंने बहुत उन्नति की है हमारे लोग (मुसलमान) जब घाटों को देखते है तो चकित रह जाते है वैसा बनाना तो दूर रहा उनका वर्णन करने में भी हम असमर्थ है।

अलबरूनी का भारतीय दर्शनशास्त्र की तरफ बहुत झुकाव था। उसने मूर्ति पूजा के बारे में लिखा है कि प्रतिमा पूजन का मूल कारण मृतकों के स्मरणार्थ सम्मान और जीवितों को शान्त करने की आकांक्षा थी, परन्तु बढ़ते बढ़ते अब यह एक जटिल और हानिकारक रोग बन गया है। उसने हिन्दू विद्वानों के बारे में कहा था 'उन्हें परमात्मा की सहायता है। अलबेरुनी की हिन्दुओं के प्रति सहानुभूति इसलिये थी क्योंकि भारतवर्ष की भांति खीवा देश भी महमूद के हाथों से नष्ट कर दिया गया था।

अलबरूनी ने अरबी भाषा में लगभग 20 पुस्तकें लिखी है परन्तु उनमें से तारीख उल हिन्द अधिक प्रसिद्ध है। भारतीय प्रमाणों से पता चलता है कि इस पुस्तक की रचना 30 सितम्बर 1930 ई० के बीच की गई थी। इस पुस्तक में जातिय पक्षपात का अभाव है।

अलबेरुनी गीता के उपदेशों से बहुत प्रभावित हुआ था। वह पहला मुसलमान था जिसने इस पुस्तक को मुसलमानों के सामने रखा। उसने अपनी पुस्तक में रामायण, महाभारत मानव धर्मशास्त्र सांख्य पतंजलि गीता, विष्णु और पुराण आदि संस्कृत के ग्रन्थों के अवतरणों का उल्लेख किया है। उसकी मृत्यु 1048 ई० में हुई।

तारीख उल - हिन्द

अलबरूनी ने अपनी इस पुस्तक में हिन्दुस्तान का आँखों देखा विवरण लिखा है। यह पुस्तक भारत की धार्मिक, साहित्यिक एवं वैज्ञानिक परम्पराओं पर प्रकाश डालती है। उसने अपनी पुस्तक में यहाँ की सड़कों नदियों नाप-तौल एवं सिक्कों आदि का विस्तृत वर्णन किया है। इस पुस्तक में 80 अध्याय

हैं। प्रथम अध्याय में साधारण परिचय दिया गया है। द्वितीय से बारहवें अध्याय तक धार्मिक एवं दार्शनिक विषयों का वर्णन है। तेरहवें से सतरहवें तक साहित्य रीतिरिवाजों, एवं प्रचलित अन्धविश्वासों का वर्णन है। अठारहवें से इकतीसवें अध्याय तक गणित, भूगोल एवं पौराणिक बातों का वर्णन है। बत्तीसवें से साठवें अध्याय तक ज्योतिष एवं धार्मिक परम्पराओं (नारायण और वासुदेव) का वर्णन है। तिरसठवें से छियात्तरवें अध्याय तक त्योहारों कानूनों शिष्टाचार परम्पराओं एवं हिन्दुओं के उपवास के दिनों का वर्णन है। सितत्तरवें से अस्सी अध्याय तक ज्योतिष से सम्बन्धित विषयों का वर्णन हैं।

अलबरूनी ने भारत की धार्मिक और दार्शनिक परम्पराओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि 'हिन्दू महान दार्शनिक अच्छे गणितज्ञ और ज्योतिष के जानकार थे।' उसने उनकी भूरी भूरी प्रशंसा की है। अलबेरूनी ईश्वर में श्रद्धा और विश्वास रखता था। उसने अपनी इस पुस्तक का लेखन कार्य समाप्त करते समय ईश्वर में विश्वास प्रकट करते हुए कहा था कि "यदि इसमें कोई बात सत्य वर्णित न हो तो ईश्वर उसके लिए मुझे क्षमा करें। 'उसने भारत वर्ष के हिन्दुओं की सामाजिक धार्मिक एवं दार्शनिक दशा का प्रामाणिक विवरण लिखा हैं।

1- हिन्दुओं की विदेशियों के प्रति घृणा

अलबेरूनी ने हिन्दुओं की विदेशियों के प्रति घृणा का वर्णन करते हुए लिखा है कि भारतवर्ष के हिन्दू विदेशियों को "म्लेच्छ" कहकर उनसे घृणा करते थे। वे उनके साथ खाना पीना बैठना, विवाह या अन्य किसी प्रकार के सम्बन्ध स्थापित करना नहीं चाहते थे। उनकी मान्यता थी कि वे इससे भ्रष्ट हो जायेंगे। 'अलबरूनी ने महमूद के भारतवर्ष पर किये गये आक्रमणों के बारे में लिखा है कि "महमूद ने भारत के वैभव को सर्वथा नष्ट कर दिया।" उसने आगे लिखा है कि हिन्दुओं का विश्वास था कि उनके समान कोई देश नहीं था, कोई राजा नहीं था कोई धर्म नहीं था, कोई विज्ञान नहीं लेकिन यह उनकी मूर्खता और अहंकार था। भारतवासी विदेशियों के कहने पर विश्वास नहीं करते थे और समुद्री यात्रा के समर्थक नहीं थे। इस समय हिन्दुस्तान का विदेशों से सम्पर्क टूट चुका था।

2- हिन्दुओं की सामाजिक दशा

(i) **जाति व्यवस्था** - अलबेरूनी ने लिखा है कि हिन्दू समाज का आधार जाति व्यवस्था थी। उस समय ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र ये चार वर्ण थे। व्यक्ति के जन्म से ही उसकी जाति एवं व्यवसाय निश्चित हो जाता था। उस समय जाति व्यवस्था के नियम बहुत कठोर थे। एक जाति का व्यक्ति दूसरी जाति में विवाह नहीं कर सकता था। यहां तक

कि अन्य जाति के लोगों के साथ भोजन भी नही कर सकता था। इस समय तक जाति प्रथा के गुण प्राय लुप्त हो गये थे।

(ii) वर्णाश्रम व्यवस्था - यहा की सामाजिक व्यवस्था का प्रमुख आधार वर्णाश्रम व्यवस्था थी। व्यक्ति का जीवन चार आश्रमो म (ब्रह्मचय आश्रम गहस्थाश्रम वानप्रस्थाश्रम एव स यासाश्रम) म विभाजित था। प्रत्येक आश्रम 25 वष का था। ब्रह्मचर्याश्रम म विद्यार्थी गुरु के पास रहकर वेदो तथा अ य धार्मिक ग्र थो का अध्ययन करता था। गहस्थाश्रम म विद्यार्थी विवाह कर गृहस्थी जीवन व्यतीत करता था। इसके पश्चात 50 वष की आयु म गृहस्थाश्रम को छोडकर वानप्रस्थाश्रम के लिए वन की ओर प्रस्थान कर जाते थे और अ त म मोक्ष की प्राप्ति हेतु स यास ग्रहण कर लेते थे।

अलबरूनी ने लिखा है कि उस समय समुद्री यात्रा बहुत बडा पाप माना जाता था। ब्राह्मणो का काय धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करवाना था। हिन्दू भी मास खाते थे परन्तु गो मास सवथा वर्जित था।

(iii) विवाह - अलबरूनी ने लिखा है कि 'युवावस्था म विवाह किये जाते थे जिसका प्रबन्ध माता पिता करते थे। सगोत्र और निकट के नातेदारो म विवाह करना निषेध था।' विवाह के अवसर पर जो चीजें प्राप्त होती थी वो लडकी को ही दी जाती थी। उस समय तलाक प्रथा का प्रचलन नही था। पति पत्नि केवल मरने पर ही जुदा हो सकते थे। सजातीय विवाह होता था। बहु पत्नी प्रथा प्रचलित थी। अनुलोम विवाह होते थे परन्तु प्रतिलोम विवाह नही होते थे। विधवा विवाह नही कर सकती थी। उस समय विधवाय या तो आजीवन विधवा जीवन बिताती थी या फिर सती हो जाती थी। राजाओ की रानिया सदैव सती होती थी। लोग मुल्तान पुष्कर बनारस मथुरा और थानेश्वर आदि तीथ स्थानो की यात्राएं किया करते थे।

(iv) मृतक संस्कार - मृतक शरीर को साधारण के साथ जलाया जाता था और उनकी हड्डियो को गगा म बहा दिया जाता था। तीन वष से कम आयु के बालक की मृत्यु होने पर उसे दफना दिया जाता था।

(v) अ य सामाजिक परम्परायें - हिन्दू धर्म के नाम पर उपवास करते थे एव व्रत आदि भी रखते थे। उत्तराधिकार के भी निश्चित नियम थे। पिता की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र उसका उत्तरा धिकारी होता था। उस समय न्यायालय भी थे। व्यक्ति अपनी शिकायत

न्यायाधीश के सामने प्रस्तुत कर सकता था। अलबेरूनी को हिन्दुओं के कई रीतिरिवाज बड़े अजूबे लगे, जिनका वर्णन उसने अपनी पुस्तक में किया है जैसे कि हिन्दू जब किसी दूसरे व्यक्ति के घर में प्रवेश करता था तब उस समय उसकी स्वीकृति नहीं लेता था परन्तु जाते समय स्वीकृति प्राप्त करता था।

3- धार्मिक दशा

अलबरूनी ने लिखा है कि उस समय ब्राह्मण धर्म प्रचलित नहीं था तथा शैव मत और बौद्ध मत का प्रचलन भी नहीं था। यहां के लोग विष्णु या नारायण की उपासना करते थे। हिन्दू 'ईश्वर' को सृष्टि का रचयिता मानते थे। उनका आत्मा एवं पुनर्जन्म में विश्वास था। अलबरूनी ने लिखा है कि 'हिन्दुओं का विश्वास था कि स्वर्ग और नरक की प्राप्ति उनके अच्छे और बुरे कार्यों पर निर्भर है।" हिन्दू अपनी मुक्ति के लिये हर सम्भव प्रयास करते थे। अलबरूनी ने लिखा है कि "हिन्दू अपने देवी देवताओं की आराधना करते थे।"

4 साहित्य एवं विज्ञान

अलबरूनी हिन्दुओं के विशाल साहित्य एवं विज्ञान के ग्रन्थों को देखकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने वेदों तथा अन्य ग्रन्थों का अध्ययन किया। इसके पश्चात उसने वेदों तथा पुराणों के बारे में लिखा कि "हिन्दुओं के पास विज्ञान की तमाम शाखाओं की अनेकों पुस्तकें हैं। कोई इन सबके नाम कैसे जान सकता है और खासतौर पर जबकि वह हिन्दू न हो, अपितु एक विदेशी हो।"

अलबरूनी ने अपनी पुस्तक के अंतिम अध्यायों में हिन्दुओं के ज्योतिष एवं खगोल शास्त्र के बारे में वर्णन किया है। उसने लिखा है कि हिन्दू अपनी पुस्तकें किसी खास वृक्ष की पत्तियों पर लिखा करते थे जिसको "पोथी" कहा जाता था।

अलबेरूनी ने विष्णु पुराण, रामायण, महाभारत, विष्णु धर्म, वराह-मिहीर, आर्यभट्ट आदि की पुस्तकों का वर्णन किया है। उसने कुछ उदाहरण गीता से भी दिये हैं।

5- स्थापत्य कला

अलबेरूनी मुसलमान होने के कारण उसकी कला के प्रति विशेष रूची

नही थी फिर भी उसने कही कही बौद्ध भवनो मन्दिरो और मूर्तियो के बारे म वणन किया है। अलबरुनी न उत्तरी भारत क बौद्ध विहारो का भी वणन किया ह। उसने लिखा है कि हिन्दू मन्दिरा के पास बडे बडे तालाबो का निर्माण करवाया जाता था ताकि व स्नान करने के पश्चात ही मन्दिरो म प्रवेश करे।

6- राजनीतिक स्थिति

अलबेरुनी न उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति का वणन किया है। भारतवष छोटे छोटे राज्यो म विभाजित था। उनम एकता का अभाव था। महमूद गजनवी का पजाब पर अधिकार हो चुका था। भारतीय शासको के सकीण विचार थे इसलिये उन्होने विदेशी आक्रमणकारियो को निकालने के लिये कोई सयुक्त सुरक्षा का प्रयास नही किया। आनन्दपाल युद्ध म अकेला ही लडा एव पराजित हुआ। यही हाल दूसरे शासको का भी हुआ। काश्मीर स्वतत्र राज्य था। सिध पर अरबो का अधिकार था और यह छोटे छोटे भागो मे विभक्त था। गुजरात म सोलकी राजपूत शासन कर रहे थे। महमूद के सोमनाथ पर आक्रमण का गुजरात पर कोई स्थाई प्रभाव नही पडा। मालवा पर आक्रमण का गुजरात पर कोई स्थाई प्रभाव नही पडा। मालवा पर परमार वश का शासक भोजदेव शासन कर रहा था। अलबरुनी ने राजा भोज और मालवा की राजधानी के बारे म लिखा है। कन्नौज एक अन्य महत्वपूण राज्य था परन्तु महमूद ने उसे ध्वस्तकर दिया था।

अलबरुनी न लिखा है कि कन्नौज के आस पास के प्रदेश को "मध्य प्रदेश कहा जाता था। उसने ग्वालियर और कालिजर के दुर्गों का वणन किया है साथ ही उज्जयिनी और भिलसा आदि प्रसिद्ध स्थानो का एव मराठा देश का भी वणन किया है।

अलबेरुनी न लिखा है कि पश्चिमी, पहाडी प्रदश म अफगान जातिया रहती थी। पूर्वी राज्यो मे अलबेरुनी ने बनारस पाटलिपुत्र और मुंगर का विवरण ही दिया है। उसने उत्तरी भारत की कई नदियो का वणन किया है। परतु दक्षिण के राज्यो का वणन नही किया है।

7- आर्थिक दशा

अलबरूनी ने लिखा है कि भारत आर्थिक दृष्टि से समृद्ध था। यद्यपि विदेशी व्यापार कम हो गया था। परन्तु आर्थिक दशा फिर भी अच्छी थी। मंदिरों में अपार धन संग्रहित था। आन्तरिक व्यापार का बहुत विकास हो चुका था। मुद्रा का प्रचलन था। नापतौल के लिये निश्चित पैमाने बने हुए थे। सोना एवं चांदी आदि को तौला एवं माशा में तोला जाता था।

राजा प्रजा से जो कर वसूल करता था। उसे वह जनहित कार्यों पर खर्च करता था। अलबेरूनी ने लिखा है कि "नाचने और वेश्यावृत्ति करनेवाली औरतों पर कर लगाया जाता था।" राज्य की आय का मुख्य साधन भूमिकर था, जो उपज का 1/6 भाग था। विभिन्न व्यवसायों में लगे लोगों को व्यावसायिक कर भी देना पड़ता था। ब्राह्मण वर्ग को समाज में विशेषाधिकार प्राप्त थे। संक्षेप में अलबेरूनी का विवरण सत्य और महत्वपूर्ण प्रतीत होता है।



2 हसन निजामी : ताज-उल-मासिर

ताज उल मासिर के लेखक हसन निजामी का जन्म 1164 65 ई० म हुआ था। वह निसापुर का निवासी था। उसने 1205 ई० म ग्रन्थ लिखना प्रारम्भ किया। सर्व प्रथम उसने 1191 से 1217 ई० तक का हाल लिखा और बाद म 1229 ई० तक का हाल और जोड़ दिया। इस प्रकार इस पुस्तक की पाण्डुलिपि से 1229 ई० तक की घटनाओ के बारे म जानकारी प्राप्त होती हैं।

लेखक के बारे में हम विस्तृत जानकारी प्राप्त नहीं होती। सिर्फ इतना पता चलता है कि मध्य एशिया म मुगलो का आतंक बढ़ने से वह भागकर गजनी गया किन्तु वहा नौकरी नही मिलने से वह नौकरी से वह लाहौर चला गया। इसके पश्चात इल्तुतमिश के समय वह दिल्ली म आकर बस गया और वहीं इस पुस्तक के लेखन कार्य को पूरा किया। इस ग्रन्थ से हम मुहम्मद गौरी के आक्रमण के समय की भारत की स्थिति कुतुबुद्दीन एबक और इल्तुतमिश के प्रारम्भिक वर्षों के इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

लेखक ने पुस्तक को अलंकारिक भाषा म लिखा है। यदि उसने आखो देखी घटनाओ का वर्णन लिखा है इसलिये उसके ग्रन्थ का महत्व बहुत अधिक है। उसके द्वारा दी हुई घटनाओ की तिथीया एवं उनके विषय म ऐतिहासिक तथ्य सही प्रतीत होते हैं। उसने अपनी पुस्तक मे अनेको दरबारी सामन्तो का भी वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त अनेक राजकीय समारोहो का भी वर्णन मिलता है जिससे हमे उस समय की सांस्कृतिक दशा के बारे म महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं।

ग्रन्थ के दोष -

(i) इस ग्रन्थ म ऐतिहासिक विवरण बहुत कम है।

(ii) इस ग्रन्थ की भाषा बहुत ही क्लिष्ट एवं अलंकारिक है जिससे कहीं कहीं लेखक के वास्तविक तात्पर्य को समझने म बहुत कठिनाई होती है।

मूल्यांकन - इन दोषो के होते हुए भी हम इस ग्रन्थ से पता चलता है कि उस समय के विद्वान किस प्रकार की भाषा का महत्व देते थे। इसमे हम उस समय की शासन व्यवस्था एवं सांस्कृतिक दशा के बारे म महत्वपूर्ण झांकी मिलती हैं।

— ● —

3 | काजी मिनहाज-उस-मिराज तबकात-ए-नासिरी

काजी मिराज अपने समय का बहुत बडा विद्वान था। उस समय के प्रभावशाली तुर्क अमीर उसके दोस्त थे। यही कारण था कि शम्सुद्दीन की मृत्यु के पश्चात राजनीतिक उथल पुथल में कई सुलतान बदले परन्तु उसका राजनीतिक प्रभाव बना रहा। उलुग खा की कृपा से वह राज्य का सर्वोच्च पदाधिकारी बन गया था।

मिनहाज ने तबकाते नासिरी सुलतान इल्तुतमिश के पुत्र और रजिया के उत्तराधिकारी सुलतान नासिरुद्दीन महमूद को समर्पित की। इसमे 13 अध्याय है। भारतवर्ष का इतिहास अन्तिम दो अध्यायों से प्राप्त होता है। मिनहाज ने सुलतान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के राज्यकाल से लेकर सुलतान नासीरुद्दीन के राज्यकाल के पन्द्रहवें वर्ष तक की एतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया है। इस ग्रन्थ का महत्व इसलिये अधिक है क्योकि लेखक ने घटनाओं का वर्णन स्वयं की जानकारी के आधार पर लिखा है।

मिनहाज काजिए ममालिक के पद पर नियुक्त था। साथ ही देहली के मुख्य मदरसे का अध्यक्ष भी था। जिसकी वजह से उसे राज्य की लगभग सभी घटनाओं के बारे मे जानकारी प्राप्त होती रहती थी। उसने दिल्ली के सुलतानो के साथ - साथ अमीरो तथा मलिकों का हाल भी लिखा है। उसके इस ग्रन्थ से हम अमीरो के षडयन्त्र, चरित्र विद्या तथा धर्म से प्रेम आदि के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। जिसका वर्णन अन्य मध्यकालीन इतिहासो मे बहुत कम है। इस सम्बन्ध मे उसने भावी लेखको का पथ प्रदर्शन किया है। मिनहाज सिराज बजा'तथा हिस्सा का अध्यक्ष था। 'यद्यपि वह एक धर्मनिष्ठ मुसलमान था तथापि बरनी की तरह उसने अपने ग्रन्थ मे धार्मिक कट्टरपन का प्रदर्शन नही किया है। मिनहाज ने विद्रोही हिन्दू शासको की आलोचना की है लेकिन विद्रोही मुसलमान अमीरो की भी प्रशसा नही की। -

ऐतिहासिक दृष्टि से ग्रन्थ का महत्व - मिनहाज एक लम्बे समय तक भारत देश मे रहा इसलिये उसे यहा की राजनीतिक व्यवस्था की अच्छी जानकारी थी। वह तुर्की सामन्तो के बहुत नजदीक था इसलिये उसे घटनाओं की सारी जानकारी

प्राप्त हो जाती थी। चूंकि वह समकालीन लेखक है इसलिये उसके ग्रन्थ से प्रारम्भिक तुर्ककालीन भारत के इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं। अतः ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

ग्रन्थ की प्रमुख विशेषतायें - तबकात नासिरी की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित हैं।

(i) घटनाओं का क्रमबद्ध रूप से वर्णन - मिनहाज ने यह पुस्तक स्वयं के निरीक्षण और विश्वसनीय व्यक्तियों की सूचना को आधार बनाकर लिखी है। उसने लगभग सभी घटनाओं की तिथियां सही सही लिखी है। इसके अतिरिक्त उसने घटनाओं का वर्णन क्रमबद्ध रूप से किया है।

(ii) घटनाओं की पुनरावृत्ति - यद्यपि लेखक ने घटनाओं का वर्णन सही किया है परन्तु कुछ घटनाओं का वर्णन कई स्थानों पर अनेक बार किया है। जिस वजह से तबकात नासिरी में एक ही घटना का कई बार वर्णन मिलता है।

(iii) लेखक में निष्पक्षता का अभाव - मिनहाज सिराज के दिल्ली के सुलतानों के अतिरिक्त दरबारी सामन्तों के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध थे। सुलतान इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकार के लिये जो संघर्ष हुआ उसमें दरबार दो दलों में विभाजित हो गया।

प्रथम दल ताजिक सामन्तों का एवं द्वितीय दल तुर्क सामन्तों का। मिनहाज ने तुर्क दल का समर्थन किया था। इसलिये उसने इतिहास लिखते समय पक्षपात किया इसका कारण यह था कि जब ताजिक सामन्तों का उत्थान हुआ तो उन्होंने मिनहाज को नौकरी से निकाल दिया। इसलिये उसे दो वर्षों तक बंगाल की राजधानी लखनौती में रहना पड़ा। जब तुर्क दल पुनः सत्तारूढ़ हुआ तो उसने मिनहाज को काजी के पद पर नियुक्त कर दिया। अतः उसने घटनाओं का वर्णन करते समय पक्षपात किया है।

(iv) घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन - यद्यपि मिनहाज सिराज एक समकालीन लेखक था और लगभग सारी घटनाएं उसके सामने घटित हुई थी। परन्तु फिर भी उसने घटनाओं का वर्णन विस्तृत विवरण न कर संक्षिप्त वर्णन किया है। उस समय के अन्य समकालीन ग्रन्थों के अभाव के कारण उसका यह ग्रन्थ ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

(v) दरबारी सामन्तों का वर्णन - मिनहाज सिराज ने अपने ग्रन्थ के बाइसवें अध्याय में इल्तुतमिश के दरबारी सामन्तों की जीवनियों का वर्णन किया है जिससे हमें दरबारी सामन्तों की राजनीतिक स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। उसने बलबन की जीवनी का विस्तृत विवरण दिया है

क्योंकि इल्तुतमिश मिनहाज को बहुत प्रोत्साहन देता था । एमादुद्दीन रैहान जो बलबन का विरोधी था, की जीवनी का भी विस्तृत विवरण किया है ।

मिनहाज ने जीवनियों के वर्णन में भी निष्पक्षता का प्रदर्शन नहीं किया है । इसका कारण यह था कि वह एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था इसलिए दरबार के उन सामन्तों को हीन दृष्टि से देखता था । जो नये नये मुसलमान बने थे । उसका मानना था कि सारे अधिकार उच्च वंश के तुर्कों के हाथ में रहने चाहिए । एमादुद्दीन रैहान के शक्तिशाली हो जाने से मिनहाज का चहेता स्वामी उलुग खां का पतन हो गया था जिसकी वजह से उसे काफी कष्ट भोगने पड़े । इसलिए उसने रैहान की निन्दा करते हुए लिखा कि उसके अवगुणों का मुख्य कारण यही था कि वह तुर्कवंशीय न होकर एक हिन्दुस्तानी था । अतः इसे मिनहाज सिराज का नहीं अपितु उसके समय की विशेष परिस्थिति का कारण समझना चाहिए ।

मिनहाज सिराज ने बड़ी सरल भाषा में अपना ग्रन्थ लिखा है । उसने समस्त घटनाओं का वर्णन क्रमबद्धरूप से किया है । उसके ग्रन्थ से पता चलता है कि वह घटनाओं को समझने और उनका उल्लेख करने में बहुत प्रवीण था । समकालीन राजनीति के विषय में भी उसने अपने विचार व्यक्त किये हैं । रुक्नुद्दीन की हत्या के वर्णन के बाद उसने लिखा है कि 'बादशाह में सभी बातें विद्यमान होनी चाहिए जिससे प्रजा तथा सेवकगण सन्तुष्ट रह सकें । भोगविलास एवं दुराचारियों से मेल के कारण राज्य का पतन हो जाता है । '

रजिया के बारे में उसने लिखा है कि 'उसमें बादशाह के योग्य सभी गुण विद्यमान थे किन्तु भाग्य ने उसे पुरुष न बनाया था अतः उसके समस्त गुण उसके लिए कुछ भी लाभप्रद नहीं थे । '

मिनहाज सिराज एक कुशल कवि था । सुल्तान मुइज्जुद्दीन बहराम शाह के सिंहासनारोहण की बधाई एवं सुल्तान नासीरुद्दीन के राज्याभिषेक के समय उसने कुछ कविताओं की रचना की जिनकी नकल तबकात नासिरी में है । उसने 'नासिरी नामा' नामक एक अन्य कविता की भी रचना की जो अब उपलब्ध नहीं है ।

तबकाते नासिरी की हस्तलिखित प्रतियां यूरोप तथा भारतवर्ष के समस्त पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं । इस ग्रन्थ का सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद मेजर एच० जी० रैवर्टी ने किया है । मिनहाज की यह रचना इलियट के इतिहास के द्वितीय खण्ड में अनूदित है ।

मूल्यांकन - उस समय का अन्य कोई समकालीन स्त्रोत नहीं होने से तबकाते नासिरी एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है। मिनहाज ने हसन निजामी की भांति अलंकारिक भाषा का उपयोग न कर अपनी पुस्तक को सरल एवं साधारण भाषा में लिखा है। इसलिये बाद के सभी इतिहासकारों ने उसके ग्रन्थ को आधार बनाकर अपने ग्रन्थों की रचना की। संक्षेप में आरम्भिककालीन भारत का इतिहास जानने के लिये तबकाते नासिरी एक अद्वितीय ग्रन्थ है।

4 अमीरखुसरो की कृतियां

अमीर खुसरो का वास्तविक नाम मुहम्मद हसन था जो इतिहास में अमीर खुसरो के नाम से प्रसिद्ध है। वह फारसी का सर्वश्रेष्ठ कवि था उसका जन्म इटावा जिले (उत्तरप्रदेश) के पटियाला नामक गांव में 1254 ई० में हुआ था। उसका पिता सफुद्दीन मेहमूद तुर्क था। जो इल्तुतमिश और उसके उत्तराधिकारियों के शासनकाल में उच्च प्रशासनिक पदों पर कार्य कर चुका था। उसकी माता एक उच्च पदाधिकारी इमादुलमुल्क की पुत्री थी। बाल्यकाल से ही खुसरो को फारसी भाषा में कविता करने में बड़ी रुची थी। 12 वर्ष की आयु तक वह एक परिपक्व कवि बन गया था। वह गीत लिखने में भी कुशल था।

अमीर खुसरो ने बलबन के राज्यकाल में उसके भाई किश्लीखां के यहां नौकरी कर ली एवं उसकी प्रशंसा में अनेकों कसीदों की रचना की। इसके पश्चात वह बलबन के छोटे पुत्र बुगरा खां की सेवा में चला गया जो समाना (पंजाब) का गवर्नर था। वह बलबन के बड़े पुत्र मोहम्मद के पास पांच वर्ष तक मुल्तान में भी रहा था। जब 1284 - 85 ई० में मोहम्मद मगोलो के विरुद्ध युद्ध करता हुआ मारा गया तो वह उनके द्वारा बन्दी बना लिया गया। उनकी कैद से मुक्त होने के बाद मुइजुद्दीन कैकुबाद के दरबार में कवि के पद पर नियुक्त हो गया। उसी समय खुसरो ने अपनी पहली मसनवी "किरानुस्सादैन" की रचना की।

अलाउद्दीन खिलजी ने खुसरो को "भारत तुर्क" की उपाधि प्रदान की। इस प्रकार बलबन से लेकर गयासुद्दीन तुगलक के समय तक के सुल्तानों के दरबारों में दरबारी कवि रहा था। उसने कई प्रसिद्ध रचनायें रची। वह शेख निजामुद्दीन औलिया का शिष्य था। खुसरो की 1325 ई० में मृत्यु हो गई और उसे शेख की कब्र के पास ही दफना दिया गया। वह हिन्दी भाषा का भी बहुत अच्छा कवि था परन्तु उसकी हिन्दी की रचनायें अब उपलब्ध नहीं है।

अमीर खुसरो की रचनाओं से जलालुद्दीन खिलजी से लेकर गयासुद्दीन तुगलक तक के शासनकाल की घटनाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

अमीर खुसरो की कृतियां

(1) किरानुस्सादेन - इस मसनवी (कविता) की रचना अमीर खुसरो ने सुलतान मुइजुद्दीन कैकुबाद (1287-90 ई०) के आदेशानुसार की। यह अमीर खुसरो की पहली मसनवी थी। इस रचना के समय उसकी आयु 36 वर्ष की थी। इस कविता मे उसने बंगाल के शासक बुगरा खां और उसके पुत्र सुलतान मुइजुद्दीन कैकुबाद के बीच अवध मे हुई भेंट का वर्णन किया है। इसमे हमे उस समय की सामाजिक राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दशा के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। दरबार का वैभव और ऐश्वर्य, देहली नगर की दशा दरबारी सामन्तो एवं पदाधिकारियो के पारस्परिक व्यवहार, किलोखडी नगर के राजप्रासाद का निर्माण आदि का विस्तार मे वर्णन किया गया है। यह कविता नासीरुद्दीन बुगरा खां और कैकुबाद के चरित्र पर भी प्रकाश डालती है। इसका एतिहासिक महत्व इस बात मे निहित है कि यह दरबारी सामन्तो के राजनीतिक प्रभाव पर प्रकाश डालता है। इससे पता चलता है कि उस समय दरबारी सामन्त कितने शक्तिशाली हो गये थे और बादशाह पर उनका कितना प्रभुत्व था। दास वंश के पतन की झांकी भी हमे उसकी इस रचना मे देखने को मिलती है।

इस प्रकार अमीर खुसरो ने एक साधारण घटना के वर्णन मे उस समय की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थिति को स्पष्ट कर दिया है।

(2) आशिका - आशिका को 'मन्सूरे शाही' अथवा इश्किया भी कहा जाता है। इस कविता की रचना अमीर खुसरो ने सुलतान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी (1316 20 ई०) के शासनकाल मे 1316 ई० मे की। इसमे सुलतान अलाउद्दीन खिलजी के बड़े पुत्र राजकुमार खिज्र खां और देवलदेवी (गुजरात के राजा कर्ण की पुत्री) की प्रेम कहानी का वर्णन किया गया है। जिस समय अमीर खुसरो ने इसकी रचना की उस समय खिज्रखां के साथ देवलदेवी भी ग्वालियर के दुर्ग मे कैद थी। सुलतान कुतुबुद्दीन देवलदेवी को अपनी रानी बनाना चाहता इसलिये उसने अपने भाई खिज्र खां को अंधा करवा दिया और बाद मे उसकी हत्या करवा दी। खिज्र खां की मृत्यु के पश्चात अमीर खुसरो ने इस कविता मे उसका शेष हाल भी लिखा है।

अमीर खुसरो ने 'आशिका' के प्रारम्भ मे लिखा है कि उसने इस कहानी की रचना राजकुमार खिज्र खां के आग्रह पर की। इस कहानी से सबंधित घटनाओं की जानकारी उसे महल की एक दासी ने दी। इस पुस्तक के प्रारम्भ मे अलाउद्दीन के वैभव एवं दिल्ली नगर का वर्णन किया गया है। इसके पश्चात खिज्र खां का देवलदेवी से विवाह के लिये अलाउद्दीन मे झगड़ा और उससे विवाह का विवरण दिया है। जिससे हम उस समय की सामाजिक और सांस्कृतिक

स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। अलाउद्दीन के शासा के शासन उसके बड़े बेटे खिज्र खां का पतन, मलिक काफूर द्वारा उसे अन्धा किया जाना एवं अन्त में मृत्यु का वर्णन किया गया है। जियाउद्दीन बरनी ने लिखा है कि कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी ने खिज्र खां की हत्या इसलिये करवाई थी क्योंकि उसने उसके खिलाफ षडयन्त्र रचा था परन्तु अमीर खुसरो ने इस मसनवी में स्पष्ट लिखा है कि सुलतान कुतुबुद्दीन देवलरानी को अपने हरम में सम्मिलित करना चाहता था परन्तु खिज्रखां द्वारा इन्कार करने पर उसने उसकी हत्या करवा दी।

अमीर खुसरो की इस रचना को प्रसिद्ध इतिहासकार आर० सी० मजूमदार ऐतिहासिक कृति मानने के पक्ष में नहीं है। उनका मानना है कि यह एक साहित्यकार की मनगढ़न्त कहानी है और इसमें दिये हुए तथ्य ऐतिहासिक दृष्टि से सत्य नहीं हैं। परन्तु उनका यह उनका कथन सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि फारसी भाषा में प्रेम कथाओं का लेकर मसनवी लिखना उस समय एक साधारण बात थी। अमीर खुसरो घटना का एक समकालीन कवि था और रचना के समय उसके लगभग सभी पात्र जीवित थे। इसके अतिरिक्त उसने खिज्र खां के विवाह की तिथि विवाह के समय की गई सजावट एवं उस समय उपस्थित सामन्तों के नाम एवं खिज्र खां की मृत्यु का वध आदि बातों का उल्लेख किया है। इससे इस कृति का ऐतिहासिक महत्व बढ़ जाता है। इसमें दरबारी सामन्तों के षडयन्त्र का विस्तारपूर्वक वृतान्त है। जैसे कि खिज्र खां के ससुर अल्प खां का मलिक काफूर से झगड़ा होना और काफूर द्वारा खिज्र खां को गद्दी से उतारने का प्रयास आदि घटनाओं का विस्तार से वर्णन है। यह वर्णन बरनी की तारीख ए फीरोजशाही से भी मिलता है इसके अतिरिक्त खिज्रखां और देवल रानी की प्रेम कहानी का वर्णन इब्नबतूता ने भी किया है इसलिये पुस्तक को निरा साहित्यिक रचना कहना उचित नहीं है।

(3) खजाइनुल फुतूह या तारीख-ए-अलाई - अमीर खुसरो की गद्य रचनाओं में खजाइनुल फुतूह का एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इस पुस्तक की रचना उसने 1311 ई० में की। "तारीख-ए-अलाई" एक गद्यात्मक रचना है जिसे खजाइनुल फुतूह भी कहा जाता है इस ग्रन्थ में कृत्रिमता काफी है लेकिन जो ठोस जानकारी उपलब्ध है उसे देखते हुए 'हम कृत्रिमता को क्षमा कर सकते है (1) 'लेखक ने ग्रन्थ में कई स्थानों पर हिन्दी शब्दों का प्रयोग किया है। इससे पता चलता है कि हिन्दी उसे बहुत पसन्द थी। इस बात का महत्व इसलिये अधिक है क्योंकि उस समय के मुस्लिम लेखक हिंदी शब्दों का प्रयोग करना पसन्द नहीं करते थे। खुसरो ने तिथियां नहीं दी है।

(1) इलियट एवं डाउसन भारत का इतिहास (तृतीय खण्ड) पृष्ठ 45

अमीर खुसरो प्रसिद्ध इतिहासकार बरनी का मित्र था। बरनी ने अपने ग्रन्थ में घटनाओं की पुष्टि के लिए स्थान-स्थान पर खुसरो के ग्रन्थ का हवाला दिया है। खजाइनुल फुतूह नामक ग्रन्थ निम्न पाँच भागों में विभक्त है 1- प्रस्तावना 2- प्रशासकीय सुधार और सार्वजनिक कार्य 3- मंगोलों के विरुद्ध अभियान 4 हिन्दुस्तान की विजय 5 मालवा अभियान एवं 5 मा'बर अभियान। इस ग्रन्थ में हमें अलाउद्दीन खिलजी के राज्यारोहण (1296 ई०) से लेकर माबर विजय (1310 ई०) तक की घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। ग्रन्थ का एक प्रमुख भाग दक्षिण भारतवर्ष की विजय के लिए किए गए अभियानों पर प्रकाश डालता है डा० ईश्वरीप्रसाद ने लिखा है कि खजाइन दक्षिणी अभियानों का इतिहास है यह तिथि एवं वृतान्त दोनों ही दृष्टियों से सही है और इससे हमें अलाउद्दीन के शासनकाल के तिथिक्रम निश्चित करने के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इसमें कतिपय प्रशासकीय सुधारों का भी वर्णन है परन्तु यह वर्णन अत्यन्त ही संक्षिप्त है। यह खेद की बात है कि उस युग की प्रवृत्तियों के अनुसार खुसरो भी एक कट्टर मुसलमान था और जिन लोगों को वह काफिर समझता था उनके विषय में विचार प्रकट करते हुए उसने अपनी धर्मान्धता का परिचय दिया है।

अमीर खुसरो ने यह पुस्तक बड़ी क्लिष्ट तथा अलंकारिक भाषा में लिखी है। सीधी-सीधी घटनाओं को भी उसने अलंकार युक्त शैली में लिखा है जिससे उसका आशय स्पष्ट नहीं होता। उसने मंगोलों के आक्रमणों का सही 2 वर्णन नहीं किया है। इसका अर्थ यह नहीं कि खुसरो की रचना का महत्व कम हो गया है। उसने घटनाओं की जो तिथियाँ दी हैं, वे सही हैं इस पुस्तक का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि खुसरो समकालीन कवि है और बरनी के इतिहास की घटनाओं की तिथियाँ भी इसमें ज्ञात हो जाती हैं।

(4) नूह सिपहर - अमीर खुसरो की यह मसनवी (कविता) ऐतिहासिक तथ्यों से पूर्ण होने के कारण काफी महत्वपूर्ण है नूह सिपहर का अर्थ होता है 'नव आकाश' चूंकि इस कृति के नौ भाग है इसलिए अमीर खुसरो ने इसका नाम नूह सिपहर रखा। अमीर खुसरो ने 67 वर्ष की आयु में सुल्तान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी के शासनकाल में 1318 ई० में इस ग्रन्थ की रचना की। पुस्तक के प्रथम भाग में उसने अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया की प्रशंसा सुल्तान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी का शासक बनना कविता लिखने का कारण एवं मुबारकशाह का अपने दास खुसरु खां के साथ देवगिरि पर अभियान आदि घटनाओं विस्तारपूर्वक का वर्णन किया है। द्वितीय भाग में कुतुबुद्दीन द्वारा दिल्ली में निर्मित भवन वारंगल एवं तेलंगाना पर आक्रमण एवं दिल्ली नगर की प्रशंसा

का सविस्तार वर्णन है। तृतीय भाग महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ सरस बड़ा है। खुसरो ने इसमें भारतवर्ष की जलवायु, पशु पक्षी धार्मिक विश्वासों और जन भाषा का उल्लेख किया है। उसने भारत की तुलना स्वर्ग के उद्यानों से की है। वही 2 तो वह भारत को अन्य देशों से श्रेष्ठ ठहराता है। यहा की भूमि के उपजाऊपन मार्ग और जलवायु की प्रशंसा करता है। यहा की बहुत सी चीजें उसे पसन्द थी। उसे यहा (भारत) का निवासी होने का गौरव प्राप्त था। उसने लिखा है कि भारतवर्ष मे अनेक भाषाओं को जानने वाले लोग रहते हैं। फिर भी उनमे कोई वैमनस्य नही है।

वह फारसी के साथ साथ हिन्दी का भी बहुत अच्छा कवि था। उसने लिखा है कि भारतवर्ष ज्ञान का भण्डार है। यहा बड़े बड़े विद्वान व्यक्ति निवास करते हैं। इसीलिए विदेशो के लोग यहा पर अध्ययन करने के लिए आते हैं जबकि इस देश का कोई भी व्यक्ति बाहर नही जाता। गणित शास्त्र का जन्म भारतवर्ष मे हुआ। इसका जन्मदाता आसा नामक ब्राह्मण था। इसलिए अरबी भाषा मे गणित शास्त्र को "हिन्दसा" कहते हैं। शतरंज नामक खेल भी भारत वर्ष मे आरम्भ हुआ जिसका संस्कृत नाम चतुरंग था। इसमे दोनो पक्षो के मैदान के मोहरे एव सुसज्जित सेना की भांति रखे जाते हैं।

इस भाग मे यहा के धार्मिक विश्वास रीतिरिवाज, एव मौसम की प्रशंसा की गई है। संस्कृत भाषा के बारे मे उसने लिखा है कि न्याय के अतिरिक्त विश्व की सारी ज्ञान की पुस्तकें संस्कृत भाषा मे हैं लेकिन हिन्दू इस ज्ञान का लाभ नही उठाते। यही उनके पतन का कारण है। अमीर खुसरो संस्कृत भाषा नही जानता था। इसलिए उसने वेदों के बारे मे लिखा है कि उनमे प्राचीन कहानियां लिखी हुई हैं।

चौथे भाग मे अमीर खुसरो ने बादशाह एव साधारण जनता के लिए उनके उत्तरदायित्व के अनुसार शिक्षाओं का वृत्तान्त दिया है।

पांचवे भाग मे उसने दरबारी सामन्तो को बादशाह के प्रति स्वामीभक्त रहने की सलाह दी हैं। इस भाग मे उसने बादशाह की सैर शिकार, एव भारतवर्ष की शरद ऋतु का तथा अग्यारसवार का वर्णन किया है।

छठे भाग मे मुबारकशाह के पुत्र राजकुमार मोहम्मद के जन्म का वृत्तान्त है। सातवें भाग मे बसंत ऋतु एव राजकुमार मोहम्मद के जन्म समारोह के समय की बिजली की सजावट का वर्णन है।

आठवें भाग मे अध्यात्मवाद का उल्लेख है जबकि नवें भाग मे दिल्ली के समकालीन कवियो तथा उनकी मसनवी (कविता) की विशेषताओं का वृत्तान्त है।

यह मसनवी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमे देवगिरी वारगल एव तेलगाना के शाही अभियानो तथा उस समय की शासन व्यवस्था के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। चकि बरनी ने इन अभियानो का सक्षिप्त वर्णन किया है। अत नूह सिपहर का महत्व और भी बढ जाता है।

(5) तुगलक नामा - इस मसनवी (कविता) की रचना अमीर खुसरो ने 75 वर्ष की आयु मे सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक के आदेशानुसार की। इसमे सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक और खुसरो के बीच हुए युद्ध का वृतान्त मिलता है। यह मसनवी सुलतान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी के शासनकाल से प्रारम्भ होती है। इसमे मुबारकशाह की विलासप्रियता खुसरो खा की पदोन्नती, खुसरो खा का विश्वासघात एव छल द्वारा सुलतान की हत्या का वर्णन है। इसके पश्चात गयासुद्दीन तुगलक जो पजाब का गवनर था, ने अपने स्वामी की हत्या का बदला किस प्रकार लिया उसका विस्तृत वर्णन हैं। गयासुद्दीन तुगलक का दिल्ली पर अधिकार एव खुसरो की पराजय गयासुद्दीन तुगलक का दिल्ली मे प्रवेश का वर्णन है। इस मसनवी के अन्त मे गयासुद्दीन तुगलक के राज्याभिषेक का वर्णन है।

यह मसनवी अमीर खुसरो ने बहुत सरल भाषा मे लिखी है इसमे उसने साहित्यिक सौन्दर्य के अतिरिक्त ऐतिहासिक तथ्य भी दिये हैं। उसने युद्ध का आखो देखा हाल लिखा है जिसकी जानकारी हमे अन्य ग्रन्थो मे नही मिलती। अमीर खुसरो ने युद्ध मे दोनो पक्षो की ओर से भाग लेने वाले सामन्तो के नाम दिये है। जिससे उस समय की राजनीतिक स्थिति के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। अमीर खुसरो ने इस मसनवी (कविता) मे हि[illegible] का प्रयोग किया है। उसने युद्धस्थल के [illegible] किया है जैसे उसकी यह पक्ति "हाय हाय तीर मारा'।

यद्यपि मसनवी (कविता) ऐतिहासिक सामग्री से भरपूर है परन्तु इसका सबसे बडा दोष यह है कि इसमें गयासुद्दीन तुगलक की आवश्यकता से अधिक प्रशसा की गई है। इसके अनुसार वह अपने अपार साहस के कारण ही खुसरो खा को पराजित करने मे सफल हुआ। जबकि बरनी की तारीख ए फीरोजशाही मे पता चलता है कि खुसरो खा की हार इसलिये हुई क्योकि घटना के समय तथा उसके पूर्व अनेका माम ने अपनी सेना को हटाकर ने समय फिर उसके साथ विश्वास घात किया। इसके अतिरिक्त खुसरो खा की सेना मे योग्य सेनानायक नही थे। अमीर खुसरो ने खुसरो खा पर बहुत आरोप लगाये है और उसकी सच्चाइयो का वर्णन नही किया है।

इन त्रुटियों के बावजूद भी यह मानना पड़ेगा कि इस मसनवी का बहुत अधिक ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि यह समकालीन कवि के द्वारा लिखी गई है जो इतिहास की आवश्यकता को समझता था। बाद के इतिहासकारों ने खुसरू खां की घटना के लिये तुगलकनामा को आधार बनाकर अपने ग्रन्थों की रचना की है।

इसके अतिरिक्त अमीर खुसरो के लैला मजनू, शीरी व फरहाद एवं आईने सिकन्दरी आदि ग्रंथों की रचना की थी।

खुसरो का हिन्दी के क्षेत्र में योगदान

अमीर खुसरो सम्भवत पहला भारतीय मुसलमान लेखक था जिसने अपनी रचनाओं में हिन्दी के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया। उसका दृष्टिकोण उदार था। उसने भारतीय विषयों पर भी अपने विचार व्यक्त किये हैं।

संगीतज्ञ के रूप में - अमीर खुसरो प्रसिद्ध संगीतज्ञ भी था। उसे भारतीय संगीत से प्रेम था। उसने संगीतकला पर "आवाजे खुसरवी" नामक ग्रन्थ लिखा। इसमें अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी संगीतकारों का विवरण दिया है। खुसरो ने भारतीय और ईरानी संगीत के सिद्धान्त को समन्वय कर कुछ नये रागों का प्रचलन किया था। उसने कव्वाली का आविष्कार किया था। कविता गीतों, लोकगीतों एवं गजलों के लिये भी वह प्रसिद्ध है। उसने जिलाफ सजगीरी, सरपर्द तराना एवं ख्याल जैसी नयी रागें प्रचलित की। अमीर खुसरो ने भारतीय वीणा और ईरानी तम्बूर को मिलाकर सितार और तबले का आविष्कार किया था। मध्यकालीन सांस्कृतिक समन्वय में खुसरो का सराहनीय योगदान रहा।

अमीर खुसरो की रचनायें अलीगढ़ से प्रकाशित हुई है। शिबली ने अपनी पुस्तक शेर-उल अजम (द्वितीय खण्ड) में उसकी जीवनी एवं रचनाओं का आलोचनात्मक वर्णन किया है। इलियट एवं डाउसन कृत भारत का इतिहास (तृतीय खण्ड) में खुसरो की कृतियों के उद्धरण उपलब्ध होते हैं। प्रो० ई० जी० ब्राउन कृत 'हिस्ट्री ऑफ पर्शियन लिटरेचर' के अतिरिक्त प्रा० मोहम्मद हबीब कृत अमीर खुसरो और उसके संरक्षक सन्त निजामुद्दीन औलिया ग्रन्थ भी रोचक हैं। फारसी साहित्य के प्रत्येक इतिहास में खुसरो की रचनाओं का वर्णन है।

—*—

5 जियाउद्दीन बरनी : तारीख-ए-फीरोजशाही एवं फतवाए जहांदारी

प्रो० हबीब के अनुसार "व्यक्तिगत दोषों के रहते हुए भी बरनी ही हमारा तुगलककालीन भारत का मुख्य इतिहासकार है। उसके दोषों त्रुटियों का उल्लेख किया जा सकता है किन्तु उसके इतिहास की उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि उसके अभाव में हमारे मध्यकालीन इतिहास संस्कृति के ज्ञान में बहुत कमी हो जायगी जिसकी पूर्ति असम्भव है।"

बरनी का संक्षिप्त जीवन परिचय

बरनी का जन्म 1285 86 ई० में हुआ। उस समय सुल्तान बलबन शासन कर रहा था। बरनी ने अपनी पुस्तक 'तारीख-ए-फीरोजशाही' की रचना 1357 ई० में पूरी की। उस समय उसकी आयु 74 वर्ष की थी। इसमें बलबन के शासनकाल के प्रारम्भ से लेकर फिरोज तुगलक के शासनकाल के छठे वर्ष (1357 ई०) तक का ऐतिहासिक विवरण है। बरनी का नाना सिपहसालार हुसामुद्दीन बलबन का विश्वसनीय व्यक्ति था उसके पिता मुइद्दुल मुल्क और चाचा अलाउलमुल्क का जलालुद्दीन एवं अलाउद्दीन खिलजी अच्छा सम्मान करते थे।

जियाउद्दीन बरनी ने बाल्यकाल में बड़े बड़े विद्वानों से शिक्षा प्राप्त की। वह अमीर खुसरो का मित्र था और खुसरो के गुरु शेख निजामुद्दीन औलिया का वह बड़ा भक्त था। यद्यपि बरनी एक धार्मिक व्यक्ति था तथापि उसकी धार्मिकता मुसलमानों के पक्ष में थी। वह धर्मनिरपेक्षता में विश्वास नहीं करता था। बरनी ने लिखा है कि उसे फीरोज तुगलक के शासनकाल में शत्रुओं के कारण बड़े कष्ट भोगने पड़े। उसकी अत्यन्त दीन अवस्था हो गई। कुछ समय तक उसने बन्दीगृह में रहकर कष्ट भोगे। (1)

बरनी ने अपने ग्रन्थों की रचना फीरोजशाह के शासनकाल में की और अपनी पुस्तक फीरोजशाह को समर्पित की किन्तु सुलतान ने बरनी को आर्थिक सहायता नहीं दी जिस वजह से उसको जीवन के अन्तिम समय में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। भाग्य की विचित्र विडम्बना है कि जब बरनी की मृत्यु हुई उसके पास कफन तक के लिए पैसा नहीं था शोचनीय अवस्था में ही उसकी मृत्यु हो गई।

बरनी ऐतिहासिक स्रोत के रूप में

तुगलक वंश का मुख्य इतिहासकार बरनी है। उसने लिखा है कि 'इस तारीख-

---

1 Barani says Even the birds and fish are happy in their homes but I am not Now I am old and blind and confined to my corner helpless and poor with nothing but my regrets to feed upon and nothing to carry with me to the other world except my unfulfilled desires

-ा-फीरोजशाही का मवन्तनवर्ती 17 वर्ष 3 मास मव सुलतान मुहम्मद के दरबार का सेवक रह चुका है। उसे सुलतान द्वारा अत्यधिक इनाम तथा धन सम्पति प्राप्त हुआ करती थी। "एक अन्य स्थान पर उसने लिखा है कि" सुलतान मुहम्मद न मुझे आश्रय प्रदान किया। वह मेरा पोषक है, उसके द्वारा जो इनाम इकराम मुझे प्राप्त हो चुका है इतना न इससे पूर्व मैंने देखा है और न इसके उपरान्त स्वप्न म भी देखगा।

बरनी न इस बारे म कुछ नहीं लिखा कि वह मुहम्मद तुगलक के दरबार मे किस पद पर नियुक्त था। सम्भवत वह नदीम के पद पर होगा। बडे बडे अमीर और उच्च पदाधिकारी उसके माध्यम से ही सुलतान को प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर सकते थे। फीरोज, मलिक कबीर एव अहमद आयाज ने देवगिरी पर विजय की बधाई सुलतान को बरनी के माध्यम से दी थी। मुहम्मद बिन तुगलक कठिन परिस्थितियों म उससे सलाह लेता था। जब सुलतान ने देवगिरी के विद्रोह को दबाने के पश्चात तगी म युद्ध करने के लिये प्रस्थान किया तो उसने मार्ग म विद्रोहियों के बारे म बरनी से सलाह मांगी। इस बारे मे बरनी न लिखा है कि 'मैं सुलतान की सेवा म यह निवेदन नहीं कर सकता था कि प्रत्येक दिशा म विद्रोह, अशान्ति का फैलना सुलतान के हत्याकाड का फल हैं। यदि वह कुछ समय तक हत्याकाड को रोक दे तो सम्भव है कि लोग शात हो जाय और साधारण तथा विशेष व्यक्ति उससे घृणा करना कम कर दें।'

बरनी ने आगे लिखा है कि 'मैं सुलतान के क्रोध से भय करता था उपयुक्त बात न कह सकता, किन्तु हृदय म सोचता था कि यह एक विचित्र बात है कि जिस बात स उसके राज्य मे उथल पुथल विनाश हो रहा है वही बात राज्य तथा शासन को सुव्यवस्थित करने व उसके उपकार के लिये सुलतान मुहम्मद के हृदय म नही आती।"

देवगिरी सुलतान मुहम्मद तुगलक के हाथ से निकल जाने के बाद उसकी बरनी स जो वार्ता हुई, उसका बरनी ने अच्छा विवरण दिया है। उस समय उसने सुलतान को स्पष्ट शब्दों म चेतावनी देते हुए कहा था कि – "राज्य के रोगो म सबस बडा घातक रोग यह है कि राज्य के साधारण एव विशेष व्यक्ति बादशाह स घृणा करने लगे तथा प्रजा का विश्वास बादशाह पर न रहे। उसने ऐतिहासिक तथ्य के प्रकरण म सुलतान को राज्य त्याग देने का परामर्श दिया।

बरनी ने इतिहास की उपयोगिता इतिहासकार के कर्तव्य आदि के

बारे मे तारीख ए फीरोजशाही की भूमिका म विस्तार से लिखा है। इतिहासकार की धर्मनिष्ठता के बार म बरनी न लिखा है कि — "उसे बादशाह की प्रतिष्ठा, गुणो उत्तम बातो, न्याय नकिया का उल्लेख प्रबन्ध करना चाहिये किन्तु साथ ही उनकी बुरी बातों एव अनाचार को नही छिपाना चाहिए। किसी प्रकार का पक्षपात नहीं करें और जो कुछ उचित दसे उसे यदि स्पष्ट नही तो सकेता स बुद्धिमानो एव ज्ञान सम्पन्न व्यक्तियो को सचेत कर देना चाहिय। यदि किसी भय या डर के कारण समकालीन बादशाह के विरुद्ध कुछ भी लिखना सम्भव नही हो तो वह अपन आपको विवश समझ सकता है किन्तु पिछले शासो के विषय म सच सच लिखे। यदि इतिहासकार को बादशाह मन्त्री या किसी भी व्यक्ति स कष्ट हो तो उस पर ध्यान न देकर, अच्छाई अथवा बुराई को सत्य के विरुद्ध नही लिखना चाहिये और न ऐसी घटनाओ का उल्लेख करना चाहिये जो कभी नही घटी हो।[1]

बरनी न यथासम्भव अपनी कृति "तारीख ए फीरोजशाही म इस नियम का पालन किया है। उसने लिखा हैं कि मैंने इस तारीख ए-फीरोजशाही मे उन सब घटनाओ का उल्लेख किया है जो वर्तमान सुलतान फीरोजशाह के समय मे हुई हैं। इसके पश्चात यदि ईश्वर ने मुझे आयु दी तो इस पुस्तक के अन्तिम प्रकरण मे आगे की घटनाओ का वृत्तान्त लिखूगा। मैंने इस इतिहास के लिखने मे बडा परिश्रम किया है और मुझे आशा है कि इसको पाठक पसन्द करेंगे। जो केवल इसको इतिहास समझकर ही पढेंगे उनको इसम बडे बडे सुलतानो और विजेताओ के कार्यों का वर्णन मिलेगा। यदि पाठक इसम प्रशासन के नियम और आज्ञा पालन कराने के साधन ढूंढेंगे और प्रशासको के लिय इसम क्या चेतावनी है तो वे भी जितनी पूर्णरूप से इसमे मिलेगी अन्यत्र नही मिलेगी। [1]

जहा पर तबकात ए नासिरी समाप्त होती है वही स बरनी का इतिहास शुरु होता हैं। 'तारीख ए फीरोजशाही गयासुद्दीन बलबन के समय से शुरु होती है। इसम आठ सुलतानो का इतिहास है। बलबन से फिरोज के शासक बनने के बीच म जिन तीन सुलतानो न केवल तीन या चार माह तक ही शासन किया, उनका वर्णन बरनी न नही किया है। ग्रन्थ म जिन सुलतानो के राज्यकाल का वर्णन मिलता है उनकी सूचि बरनी के वर्णन के आधार पर इलियट एव डाउसन न भारत का इतिहास (ततीय खण्ड) म दी है।

बरनी न इतिहास लेखन के बारे मे लिखा है कि इतिहासकार को तथ्यो को कभी विकृत नही करना चाहिय। डा० ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है कि

1- इलियट एव डाउसन — भारत का इतिहास (ततीय खण्ड) पृष्ठ 63

"मध्यकालीन इतिहासकारों में ऐसी ही श्रेष्ठ एवं व्यक्ति है जो सत्य पर जोर देता है और चाटुकारिता तथा मिथ्यावर्णन से घृणा करता है।" [1]

डा० रिजवी के अनुसार बरनी ने यथासम्भव तारीख ए फीरोजशाही में उपर्युक्त नियम के पालन का प्रयत्न किया है। उसने युद्धों और विजयों के वर्णन की अपेक्षा बादशाह तथा अमीरों के पूर्ण व्यक्तित्व का प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। किन्तु लोगों के गुणों की प्रशंसा और दोषों का उल्लेख करते समय वह इतना उत्साहित हो जाता है कि अपने ही निर्धारित किये हुए नियमों की उपेक्षा करने लगता है। [2]

बरनी खिलजी वंश के ऐतिहासिक स्त्रोत के रूप में

बरनी ने खिलजी वंश का इतिहास स्वयं के निरीक्षण के आधार पर लिखा है। उसने लिखा है कि जिस समय जलालुद्दीन खिलजी का शासन था, उस समय उसने कुरान पढ़ना समाप्त किया और अलाउद्दीन खिलजी के समय वह जवान हो चुका था। इसके अतिरिक्त खिलजी शासकों के निकटतम सहयोगियों से भी उसे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती रहती थी।

बरनी का चाचा अलाउलमुल्क था जो अलाउद्दीन खिलजी का विश्वसनीय सलाहकार था। उसने उसे दिल्ली के कोतवाल के पद पर नियुक्त कर रखा था। अमीर खुसरो जो कि अलाउद्दीन और जलालुद्दीन का दरबारी कवि था, उसका घनिष्ट मित्र था और उनके समय का बहुत कुछ हाल उसने अमीर खुसरो से सुनकर लिखा था। उदाहरण के लिये — बरनी ने लिखा है कि 'सीदी मौला के के षडयन्त्र के समय वह दिल्ली में स्वयं उपस्थित था और अनेक बार सीदी मौला द्वारा आयोजित प्रीतिभोज में जाया करता था। फिर भी उसने सीदी मौला के चरित्र के बारे में जो कुछ लिखा है वह पूर्णतः विश्वसनीय नहीं है। जैसे कि सीदी मौला सोना बनाने की कला जानता था। इसे सही नहीं माना जा सकता।

बरनी का अलाउद्दीन खिलजी से सम्बन्धित इतिहास विश्वसनीय है। परन्तु उसने सुल्तान के दरबार हरम एवं गुप्त गोष्ठियों के बारे में जो कुछ लिखा है उसे तब तक विश्वसनीय नहीं माना जा सकता जब तक कि इसकी पुष्टि किसी अन्य समकालीन ऐतिहासिक स्त्रोत द्वारा नहीं हो जाती। इसका कारण यह है कि जब बरनी ने इस इतिहास को लिखा उस समय अलाउद्दीन खिलजी

1- डा० ईश्वरी प्रसाद — भारतीय मध्य युग का इतिहास (1200-1526 ई०) पृष्ठ 23

2- रिजवी, एस ए, ए — तुगलक कालीन भारत (प्रथम भाग) पृष्ठ "ग"

ग्रौर उसके ग्रपरागी मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे इसलिये डा० पी० एम० हबीबुल्ला, प्रो० मोहम्मद हबीब एवं प्रो० नुरुल हसन का यह मानना है कि बरनी ने ग्रपनी कृति में कई स्थानों पर मनगढ़न्त बातें लिखी हैं। ग्राश्चर्य इस बात का है कि हम यह पता नहीं चलता कि बरनी ने ग्रलाउद्दीन खिलजी का ग्रालोचनात्मक इतिहास क्यों लिखा है जबकि इतिहासकार को निष्पक्ष ग्रौर तटस्थ होकर इतिहास लिखना चाहिये।

बरनी द्वारा लिखित खिलजी कालीन इतिहास बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें जिन घटनाग्रों का वर्णन किया गया है उनका वर्णन किसी ग्रन्य समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थ में नहीं मिलता है उदाहरणार्थ – बरनी द्वारा लिखित सुलतान ग्रलाउद्दीन खिलजी का बाजार नियंत्रण एवं मंगोलों के आक्रमण ग्रादि। यद्यपि समकालीन इतिहासकार ग्रमीर खुसरो ने ग्रपनी पुस्तक "खजाइनुल फुतूह" में सुलतान ग्रलाउद्दीन खिलजी का इतिहास लिखा है परन्तु बाजार नियन्त्रण एवं मंगोलों के ग्राक्रमणों का वर्णन नहीं किया है। इसका कारण यह हो सकता है कि मंगोलों ने उस समय उत्तर पश्चिम सीमा पर ग्रातंक फैला रखा था ग्रौर सुलतान ने उनके ग्राक्रमणों को रोकने के लिये कोई व्यवस्था नहीं की थी।

बरनी द्वारा लिखित सुलतान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी का इतिहास महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि इस बारे में ग्रमीर खुसरो ने ग्रपनी कृतियों में बहुत कम लिखा है। बरनी की सुलतान कुतुबुद्दीन मुबारकशाह खिलजी के प्रति सहानुभूति थी लेकिन फिर भी उसके द्वारा लिखित इतिहास विश्वसनीय है। बरनी द्वारा लिखित खिलजी वंश का इतिहास निम्न दो कारणों से महत्वपूर्ण स्थान रखता है –

(I) बरनी समकालीन इतिहासकार है ग्रौर उसने ग्रपनी कृति को ग्रालोचनात्मक दृष्टिकोण से लिखी है।

(II) उस समय के समकालीन इतिहासकार मौलाना कबीरुद्दीन द्वारा लिखित ग्रन्थ "फतहनामा" में यह इतिहास उपलब्ध नहीं है।

बरनी तुगलकवंश के इतिहास का प्रमुख स्त्रोत

गयासुद्दीन तुगलक - बरनी ने गयासुद्दीन तुगलक का इतिहास लिखा है जिसमें हम गयासुद्दीन की धर्मनिष्ठता न्याय ग्रौर सैनिक सुधार, जनहितकारी कार्य, करनीति नानपूय, खुसरो खां द्वारा लुटाये गये धन को वापस प्राप्त करने का प्रयास ग्रादि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। उसने सुलतान की निन्दा करने वालों की कटु ग्रालोचना की है।

बरनी ने उलुग खां की दक्षिण विजय एवं जाजनगर की विजय का हाल बहुत संक्षिप्त लिखा है। जाजनगर की विजय का वर्णन तो उसने दो पंक्तियों में ही दिया। मंगोलो के आक्रमणों को भी उसने संक्षेप में लिखा है। नासीर खां ने गुजरात की परामो जाति पर आक्रमण किया और इस जाति के द्वारा उसकी हत्या कर दी गई। इस घटना का वर्णन बरनी ने नहीं किया है और जानबूझकर उसने छिपाया है। इसका कारण यह हो सकता है कि वह परावा जाति को नीच समझता था। लेकिन जब इस जाति की युद्ध क्षेत्र में विजय हुई तो उसने इस घटना को लिखना उचित नहीं माना होगा। अफगानपुर के महल के धराशायी होने से गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु हो गई परन्तु बरनी ने इस घटना का बहुत संक्षिप्त लिखा है। इसलिये बरनी पर यह दोष लगाया जा सकता है कि उसने इस दुर्घटना का विस्तार से वर्णन इसलिये नहीं किया क्योंकि वह सुलतान फीरोजशाह तुगलक के पक्ष में था।

मुहम्मद बिन तुगलक - मुहम्मद बिन तुगलक का इतिहास लिखते समय बरनी ने लिखा है कि "यदि मैं उसके राज्यकाल के प्रत्येक वर्ष का हाल लिखू जो कुछ उस वर्ष में हुआ, उसका सविस्तार उल्लेख करूं तो कई ग्रन्थ हो जायगें। मैंने इस इतिहास में सुलतान मोहम्मद की राज्य एवं शासन व्यवस्था का संक्षिप्त वर्णन किया है। उसने आगे लिखा है कि "प्रत्येक विजय के आगे पीछे घटने तथा प्रत्येक हाल अथवा घटना के प्रथम या अन्त में घटना पर ध्यान न दिया है क्योंकि बुद्धिमानों को शासन नीति एवं राज्य व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों के अध्ययन से शिक्षा प्राप्त होती है।

बरनी ने अपनी कृति के माध्यम से समकालीन उच्च वर्ग के लोगों का मार्गदर्शन किया है। उसने सुलतान फीरोजशाह के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करने के उद्देश्य से "फतवाए जहान्दारी" नामक पुस्तक लिखी थी। बरनी ने मुहम्मद बिन तुगलक का इतिहास सुलतान फीरोजशाह तुगलक के शासनकाल में लिखा। वह फीरोज पर आश्रित था। उसे फीरोज से बहुत सी आशायें थी लेकिन उसे काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के चरित्र का बड़ा विशद् चित्रण किया है। बरनी स्पष्ट रूप से मुहम्मद बिन तुगलक के गुण दोषों का वर्णन करता है। एक ओर वह सुलतान की योग्यता, विद्वता बुद्धिमता, और धर्मनिष्ठा से बहुत अधिक प्रभावित था तो दूसरी ओर सुलतान द्वारा निर्दोष व्यक्तियों को दिये जाने वाले दण्ड से वह दुखी था। उसने मुहम्मद बिन तुगलक के विरोधाभासी गुणों का मिश्रण देखकर उसे संसार का अद्भुत प्राणी कहा है।

बरनी ने मुहम्मद बिन तुगलक का इतिहास निम्न पांच भागों में लिखा है

1. सुलतान के चरित्र की समीक्षा
2. प्रारम्भिक शासन प्रबन्ध
3. सुलतान की योजनायें
4. राज्य में विद्रोह तथा अशांति
5. मुहम्मद बिन तुगलक का अब्बासी खलीफा के साथ सम्बन्ध

बरनी ने अपनी पुस्तक की भूमिका में सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के चरित्र की समीक्षा की है। अन्य स्थानों पर भी उसके चरित्र के बारे में लिखा है। बरनी ने सुलतान के अत्याचारी बनने के कारणों पर भी प्रकाश डाला है। उसने लिखा है कि वह युवावस्था में उद्दंड कवि के प्रभाव में आने से निर्दयी बन गया था। उसने उन आलियों की भी आलोचना की है जो प्राण के भय से एवं धन के लोभ के कारण सुलतान को सत्य बातें नहीं कहते थे।

बरनी ने लिखा है कि "हम जैसे कुछ कृतघ्न जो भी थोड़ा बहुत पढ़े लिखे थे उस विद्या को समझते थे जिससे मनुष्य को यश प्राप्त होता है। संसार के लोभ, लालच में व पाखण्ड करते थे, सुलतान के विश्वासपात्र होकर शरा के विरुद्ध हत्याकाड के सम्बन्ध में सत्य बात सुलतान के समक्ष में नहीं कहते थे। प्राणों के भय से जो नश्वर है, धन सम्पत्ति में स्नेह जो पतनशील है, आतंकित रहते हैं और टके, जीतल, विश्वासपात्र बनने के लोभ में धर्म के आदेशों के विरुद्ध उसके आज्ञा की सहायता करते। उनमें से दूसरा का तो मुझे ध्यान नहीं किन्तु मैं देख रहा हूं कि मुझ पर क्या बीत रही है। जो कुछ कर चुका या कर चुका हूं उसका बदला मुझे इस वृद्धावस्था में इस प्रकार मिल रहा है कि मैं संसार में लज्जित, अपमानित और पतित हो चुका हूं। न मेरा मूल्य है न मुझ पर कोई विश्वास करता है। मैं दर दर की ठोकरें खाता हूं, अपमानित होता रहता हूं मैं नहीं समझता कि कयामत के दिन मेरी क्या दुर्दशा होगी, कौन कौन से कष्ट भोगने होंगे।"

बरनी ने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक की अच्छाई, बुराई, न्याय एवं रक्तपात का अच्छा वर्णन किया है। उसने सुलतान के प्रारम्भिक शासन प्रबन्ध के सम्बन्ध में खिराज की वसूली तथा कर की अधिकता के बारे में लिखा है। उसने इस सम्बन्ध में पूरा विवरण नहीं दिया है। बरनी ने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक की निम्न छः योजनाओं का वर्णन किया है —

(1) दोआब में कर वृद्धि (2) राजधानी परिवर्तन (3) तांबे की मुद्रा (4) खुरासान विजय (5) सैनिकों की भर्ती एवं (6) कराचिल पर आक्रमण

चौथी तथा पांचवी योजना एक ही है। अन्य योजनाओं को क्रमबद्ध रूप से वर्णन नहीं किया गया है। इसी प्रकार राज्य में हुए विभिन्न विद्रोहों का वर्णन क्रम से नहीं किया गया है। बरनी ने केवल चार घटनाओं की तारीख दी हैं —

(1) मुहम्मद बिन तुगलक का सिंहासनारोहण 725 हि०
(2) अब्बासी खलीफा का मनशूर प्राप्त होना 744 हि०
(3) मुहम्मद तुगलक का गुजरात के युद्ध के लिये प्रस्थान 745 हि०
(4) मुहम्मद तुगलक की मृत्यु 752 हि०।

बरनी ने लिखा है कि "यद्यपि सुलतान मुहम्मद तुगलक के समय के षड्यन्त्र, विद्रोहों तथा अत्याचारों का उल्लेख क्रमानुसार नहीं किया गया है, तिथियां नहीं दी गई है, और न ही विस्तार वर्णन किया गया है किन्तु वे सब बातें लिख दी है, जिससे पाठक के उद्देश्य की पूर्ति हो सके।" उसने आगे लिखा है कि विद्रोहों का मुख्य कारण सुलतान का अत्याचार, निष्ठुरता, एवं हत्याकाड था। उसके इतिहास से स्पष्ट है कि जनता का विश्वास खो देने पर इस युग में भी राज्य करना कठिन था। प्रजा म आतंक फैलाकर राज्य अधिक समय तक अपने अधिकार म रखना सम्भव नहीं था।

बरनी ने 'तारीख ए फीरोजशाही म कुछ विद्रोहों का वर्णन नहीं किया है। जैसे — बहाउद्दीन गुर्शास्प का विद्रोह। बदायूँनी के अनुसार ये मुहम्मद तुगलक के समय का प्रथम विद्रोह था। इसी प्रकार उसने मसऊद खा (मुहम्मद तुगलक का सौतेला भाई) के विद्रोह का वर्णन नहीं किया है। बरनी न दोआब का विद्रोह तथा उसके शासनकाल के अंतिम वर्षों मे व्याप्त अशान्ति का वर्णन विस्तार से किया है। अकाल से जनता का पीडित होना, एव सुलतान द्वारा प्रजा की भलाई के लिये उठाये गय कदमो का विस्तृत वर्णन किया गया है। बरनी ने सुलतान की कृषि उन्नति सम्बन्धी योजना का मजाक उड़ाया है परंतु उसकी कृति से मालुम होता है कि यह योजना इतनी असम्भव नहीं थी, जितनी लोगों न समझ ली थी।

मुहम्मद तुगलक ने अब्बासी खलीफा के प्रति जिस प्रकार का नम्रतापूर्ण व्यवहार किया, उस पर बरनी तथा अन्य समकालीन इतिहासकारों ने आश्चर्य प्रकट किया है। परदेशियो के प्रति सुलतान का उदारतापूर्ण-व्यवहार भी उचित लगता है। बरनी न गयासुद्दीन एव मुहम्मद तुगलक की तुलना करते हुए लिखा है कि मुहम्मद तुगलक अपने पिता की अपेक्षा धर्म के क्षेत्र म अधिक स्वतन्त्र था। गयासुद्दीन के दान की प्रशंसा एव संयम तथा सन्तुलन का महत्व देते हुए मुहम्मद के दान को अपव्यय बताता है।

सुलतान फीरोजशाह तुगलक - बरनी ने तारीख ए फीरोजशाही में फीरोज शाह के शासनकाल की प्रथम छः वर्ष (1351 से 1357 ई०) की घटनाओं का विवरण लिखा है। उसने 74 वर्ष की आयु में इस ग्रंथ की रचना की थी। उसको फिरोज तुगलक ने आर्थिक सहायता नही दी जिस वजह से उसकी दरिद्रता में ही मृत्यु हो गई।

बरनी ने फीरोजशाह के चरित्र, शासन प्रबन्ध, दानपुण्य, एवं दरबार के प्रमुख सामन्तों का विवरण दिया है। उसने सुलतान की उदारता की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि मुहम्मद गौरी से लेकर उस समय तक हुए सुलतानो में से फीरोजशाह सर्वोत्तम सुलतान था। शायद बरनी अपनी रचना को बादशाह के समक्ष प्रस्तुत कर इनाम, इकराम आदि उसमें प्राप्त करना चाहता था ताकि उसकी गरीबी दूर हो जाय। बरनी ने घटनाओं का वर्णन करने के साथ साथ उन समस्याओं का भी वर्णन किया है, जिनसे उसका सम्बन्ध था।

(ii) फतवाए-जहांदारी - बरनी अपनी कृतियों के माध्यम से समकालीन उच्च वर्ग को मार्गदर्शन देना चाहता था और अपने समकालीन सुलतान फीरोज शाह के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहता था। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये उसने 'फतवाए जहांदारी' नामक कृति की रचना की। इस पुस्तक में राज्य व्यवस्था सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण बातों का वर्णन किया गया है। बरनी महमूद गजनवी को आदर्श बादशाह मानता था और उसने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि प्रत्येक गुण जिसका वर्णन उसने 'फतवाए-जहांदारी' में किया है महमूद में विद्यमान था। अतः महमूद की सन्तान अर्थात मुसलमान बादशाहों को उसका अनुसरण करना चाहिये।[1]

बरनी ने फतवाए जहांदारी में आदर्श शासक के बारे में अपने विचार व्यक्त किये हैं। चूंकि बरनी एक कट्टर मुसलमान था इसलिये उसकी दृष्टि में जो शासक काफिरों का विनाश करता था। वही आदर्श था। वैसे बरनी ने आदर्श शासक सम्बन्धी अनेक ऐसे विचार भी प्रस्तुत किये हैं जिनमें शासन व्यवस्था की कुशलता और लोकप्रियता में वृद्धि सुनिश्चित है। बरनी के फतवाए जहांदारी के विवरण को प्रतापसिंह ने निम्न प्रकार से लिखा है।

1- बुद्धिमान वह है जो ईर्ष्या द्वेष रखने वाला और दुष्टो की धूर्तता तथा विश्वासघात से सुरक्षित रहे और उनके जाल में न फंसे।

2- मुसलमानो के बादशाहों को कुरान पर दृढ़ विश्वास होता है उन्हें लोगो की

1- रिजवी एस ए -तुगलककालीन भारत भाग (2) पृष्ठ "घ" (अनुदित ग्रन्थो की समीक्षा)

धूतता, विश्वासघात, और अन्य कष्टों का भय नहीं होता। बादशाह अपने ... अपने देश तथा राज्य को कुरान के पाठ द्वारा सुरक्षित रखता है।

3 मुसलमान बादशाहों के कार्यों की अच्छाई और बुराई इस बात पर निर्भर है कि वे उन्हें किस तरह सम्पादित करते हैं और बादशाह के विचार उत्कृष्ट है या कलुषित। यदि बादशाह का नबियों द्वारा प्राप्त दैवी पुस्तकों पर दृढ़ विश्वास है तो उसके राज्य सम्बन्धी सभी कार्य अच्छी तरह सम्पन्न होंगे और इससे प्रजा की आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहेगी। यदि बादशाह का मोहम्मद साहब के धर्म मे दृढ़ विश्वास हो वह इबादत (उपासना) और रोजा करता हो, अधिक इबादत तथा रोजा नमाज न कर पाने पर भी इस्लाम के सिद्धान्तों की रक्षा में लीन हो और अन्य लोगों द्वारा इस्लाम के सिद्धान्तों का पालन कराता हो तो ऐसा बादशाह समाज का कुतुब (आधार) है।

4 - बादशाह को शरीयत का पालन करना चाहिये। उसे हर सूरत में इस प्रकार का प्रबन्ध करना चाहिये कि उसके राज्य में कोई शरह द्वारा वर्जित कार्य खुल्लम खुल्ला न हो सके।

5 - बादशाह के "दीनपनाह" (इस्लाम की रक्षा करने वाला) होना चाहिये। यदि बादशाह रोजा नमाज में कमी करें और विलासप्रिय हो तो भी दीनपनाही के कारण दण्डनीय नही होता।

6 - बादशाह को स्वयं भोगविलास में लिप्त रहने पर भी शरह के आदेशों का पालन कराने में कोई ढिलाई नही करनी चाहिये। उसे इस्लाम की वृद्धि का यथा सम्भव प्रयत्न करते रहना चाहिये। उसे अपनी शक्ति ऐसी बातों में लगानी चाहिये जिससे इस्लामी प्रथाओं की उन्नति होती हो। जो बादशाह दीनपनाही में कमी करते हैं अर्थात इस्लाम की रक्षा में ढिलाई करते हैं वे कयामत में दण्ड के पात्र होते हैं। उसे इस्लाम के समस्त 72 सम्प्रदायों में शरह के आदेश जारी करवाने चाहिये।

7 - बादशाहों को चाहिये कि वे अपनी राजधानी नगरों प्रदेशों, और कस्बों में कठोर स्वभाव वाले मुहतसिब (गैर इस्लामी बातों को रोकने वाले अधिकारी) और निष्ठुर अमीर दाद (सुलतान की अनुपस्थिति में दीवान मजलिस का अध्यक्ष और काजी के फैसलों का पालन करने वाला) नियुक्त करें ताकि दुराचारों की रोकथाम हो सके। जो लोग खुल्लम खुल्ला पाप तथा दुराचार करते हो। उन्हें कठोर दण्ड दें और पाप करने वालों को नाना प्रकार के कष्ट में रखें। मदिरा पान करने वालों गायकों तथा जुआ खेलने वालों को पाप करने से रोकें बादशाह

को समुचित दण्ड द्वारा नीच लोगों के बुरे कार्यों की रोकथाम करनी चाहिए। उन्हें चाहिए कि व भोगविलास के गृहों का निर्माण न होने दें और यदि उनका निर्माण हो चुका है तो उन्हें समाप्त करा दें। जो लोग गुप्त से गुप्त बड़े पाप करते हों उन्हें मुसलमानों के नगरों में रहने न दें। जो लोग छिप छिप कर वर्जित कार्य करते हैं उनके बारे में अधिक पूछताछ करना उचित नहीं है। गुप्त रूप से होने वाले कार्यों की खोज तथा उनको स्पष्ट कराने के प्रयत्न में बादशाहों को अपनी शक्ति नष्ट नहीं करनी चाहिये।

8 बादशाह को धार्मिक पदों पर सावधानी से नियुक्तियाँ करनी चाहिए उसको ध्यान रखना चाहिए कि कोई यहूदी ईसाई नीच तथा विधर्मी उसके राज्य में अपने मिथ्या धर्म का प्रचार न कर सके। न्याय के लिए ऐसे अधिकारियों की नियुक्ति होनी चाहिए जो धर्मनिष्ठ हों क्योंकि तभी बादशाह का नाम रोशन होता है।

9 बादशाहों को समझना चाहिए की मुहम्मद साहब ने धर्म के विरोधियों तथा शत्रुओं के विनाश में इतना अधिक पुण्य है कि इसका उल्लेख सम्भव नहीं है।

10 बादशाहों को सत्परामर्श का महत्व समझना चाहिये। जिन बादशाहों के पास उच्च बुद्धि नहीं होती वे अनुभवी हितैषियों के परामर्श से राज्य व्यवस्था और शासन प्रबन्ध कर सकते हैं। मनुष्य अपनी कामना के अनुसार मनमाना कार्य करना चाहता है। बादशाह की कामना में उसके अपार अधिकारों के कारण हजारों मस्त हाथियों की शक्ति होती है। यदि बादशाह उस शक्ति और मस्ती को अपने वशवर्ती रखे तथा हितैषी परामर्शदाताओं के परामर्श के अनुसार कार्य करे तो उसे न केवल ईश्वर की दया प्राप्त होगी बल्कि उसकी राज्य व्यवस्था भी भली भाँति पूर्ण होगी। बादशाहों के महान कार्यों और सुदृढ़ नियमों की स्थापना राज्य के हितैषियों के परामर्शों पर अवलम्बित है। 'बादशाहों को यह समझना चाहिए कि सत्परामर्श शासन प्रबन्ध की पूँजी है। ठीक राय को सर्व महत्व देना चाहिये। *सत्परामर्श के कारण वजीर बादशाह के समान हो जाता है* और राज्य व्यवस्था सम्बन्धी सभी कार्य उसके मतानुसार सम्पन्न होते हैं। बादशाह के लिए बुद्धिमान वजीर से बढ़कर गर्व की कोई वस्तु नहीं होती क्योंकि बुद्धिमान वजीर के बिना बादशाह के कार्य भलीभाँति सम्पन्न नहीं हो पाते।' प्राचीन कहावत के अनुसार बादशाह बुद्धिमान वजीर के बिना निराधार और बिना नमक की रोटी के समान होता है।'

11 - बादशाह को सत्सङ्कल्प वाला होना चाहिए। सत्सङ्कल्प बादशाही का स्तम्भ तथा राज्य व्यवस्था का रूप है। सत्सङ्कल्प राज्य व्यवस्था के लिये अनिवार्य है।

बादशाह की राज्य व्यवस्था तथा महान कार्यो में मतसंकल्प से राज्य में अव्यवस्था नही होती।

12 - बादशाहो द्वारा समयानुसार आतंक का प्रदर्शन होना चाहिये। उन्हें न्याय परायण होना चाहिये। बादशाही आतंक के प्रदर्शन और न्याय से इस्लाम की उन्नती होती है। सुव्यवस्था और सुशासन स्थापित होता है तथा विरोधियो और अवज्ञाकारी हतोत्साहित होते हैं। बरनी लिखता है कि "बादशाही का अनिवार्य गुण न्याय है।"

13 - बादशाह को न्याय सम्बंधी सावधानी रखनी चाहिये। "यदि बादशाह अपने सहायकों तथा मित्रो के न्याय में स्वार्थ से प्रेरित हो जाता है तो उसके कार्य खतरे में पड जाते है।

14 - बादशाह के कार्यो में सन्तुलन बना रहना चाहिये। ऐसे बादशाह को ही पूर्ण रूप से बुद्धिमान कहा जा सकता है। जो विशेष व्यक्ति और सर्वसाधारण से जो व्यवहार करे वह असन्तुलित न हो। (अर्थात बादशाही व्यवहार में सतुलन बना रहे) बादशाह के दान पुण्य, उसके अधिकारियो के सम्मान आदि में कोई बात बेजोड (असन्तुलित) न हो। 'बादशाह को पदो के वितरण में भी सन्तुलन बनाये रखना चाहिये। उसे यह समझना चाहिये कि दरबार के पदो में वजीर से द्वारपाल तक सन्तुलन कायम रहे।'

15 - बादशाह को हशम (सेना तथा परिजन) की अधिकता और एकता बनाये रखना चाहिये। जिस किसी को भी ईश्वर ने राज्य व्यवस्था और धर्म की रक्षा द्वारा सम्मानित किया है (यानी बादशाहो को) उसे समझना चाहिये कि बादशाही करना, शासन प्रबन्ध करना, दिग्विजय करना, संसार को अपने अधीन कर लेना, विरोधियो तथा विद्रोहियो को कुचलना, अवज्ञाकारियो तथा आदेशों का पालन नही करने वाले को अपना आज्ञाकारी बनाना, झगडा करने वालो के झगडो का अन्त करना, मुहम्मद साहब के धर्म के शत्रुओ का विनाश करना, सच्चे धर्म को लोगो में स्पष्ट करना, इस्लाम के 72 सम्प्रदायों में शरह के आदेश जारी करना, विधर्मियो से टकसीम प्राप्त तथा विलायतें, तलवार के जोर से प्राप्त करना, इस्लाम के गाजियों योद्धाओ तथा दीन मुसलमानों के लिये अत्यधिक धन सम्पत्ति एकत्र करना, दीन तथा राज्य के शत्रुओ के विरोध के द्वार बन्द करना तथा उचित रूप से बादशाही एवं शासन करना, हशम की अधिकता, शक्ति तथा दृढ़ता के बिना सम्भव नही होता। बादशाह को सेना की एकता सम्बन्धी नियमो और सेना रखने से सम्बन्धित आवश्यक बातो की पूरी जानकारी रखनी चाहिये। सेना को बेकार नही रखना चाहिये। बल्कि [illegible] न

किसी काम म लगाये रखना चाहिय और वह सन्तुष्ट रहे, इसका भी ध्यान रखना चाहिय । '

16 - बादशाह को बाजार भाव सस्ते रखने चाहिये क्योंकि तभी सवसाधारण को सन्तोष और सुख मिल सकता है । 'बादशाह को अपनी राज्य की दृढ़ता का सम्बन्ध तथा सवसाधारण की दृढ़ता से सम्बन्धित समझना चाहिय । अकाल के समय प्रजा की सहायता के लिये बादशाह को तत्पर रहना चाहिय तथा क्रय विक्रय पर नियन्त्रण रखना चाहिय ।

17 - बादशाह को समय की कीमत पहचाननी चाहिये । जो बादशाह समय की बचत नहीं करता और समय का मूल्य नहीं पहचानता उसके समान कोई भी कृतघ्न नहीं हो सकता । जब तक बादशाह अपने समय का विभाजन नहीं करता प्रत्येक काय म व्यस्त रहने का समय निर्धारित नहीं करता, निश्चित काय को निश्चित समय पर नहीं करता तथा अन्य कार्यों म हाथ डालता है तो उसके जहाँदारी के काय सम्पन्न नहीं हो सकते है ।

18 काफिरों का विनाश और अपमान बादशाह का कर्तव्य है । यदि बादशाह केवल खिराज और जजिया लेने से सन्तुष्ट हो जाता है काफिरों का विनाश नहीं करता तथा उन्हे मुसलमान नहीं बनाता तो वह बादशाही कर्तव्यों का उचित निर्वाह नहीं करता ।

19 - बादशाहों को अत्याचारियों का दमन करना चाहिये न्याय के लिये अधिकारियों की नियुक्ति करनी चाहिय और क्षमा तथा दण्ड के नियमों को समझना चाहिये । कृपा, प्रोत्साहन दान, कठोर दण्ड अपमान पदच्युति धन-सम्पत्ति आदि उपायों से सुव्यवस्था स्थापित होती है । ये प्रजा के प्रति बादशाह के व्यवहार के तरीके है । बादशाहों को जानना चाहिये कि अपराधियों के अपराध कई प्रकार के होते है । मुसलमानों की हत्या करते समय बड़े सोच विचार की आवश्यकता है । मृत्यु दण्ड देते समय कभी सीमा से आगे नहीं बढ़ना चाहिये एक व्यक्ति के अपराध के लिये दस व्यक्तियों की हत्या न करनी चाहिय । यदि बादशाह ससार म सिफारिश का द्वार बन्द कर देगा तो कयामत में उसके लिये भी सिफारिश के द्वार बन्द हो जायेंगे । सिफारिश के द्वार खुले रखने म अनेकों लाभ हैं ।'

20 - बादशाहों को समझना चाहिये कि महान काय बिना अधिनियमों के जो विधान और बुद्धिसंगत हो सम्पन्न नहीं हो सकते । राज्य व्यवस्था का उद्देश्य वर्तमान का उपचार और भविष्य के लिये भलाई करना है । अतः राज्य के

के अधिनियमों को बनाने का काय किमी कमीने या दुष्ट व्यक्ति को नहीं सौंपना चाहिये। बादशाह को चाहिये कि वह ऐसे अधिनियमों की व्यवस्था करें जिससे न्याय म वृद्धि होती हो। अधिनियमो के प्रयोग और उनकी दृढ़ता के बिना राज्य व्यवस्था के काय म बाधायें उपस्थित होती हैं। राज्य व्यवस्था सम्बन्धी सभी कार्यों में काफी सोच विचार और वाद विवाद के बाद हाथ डालना चाहिये। अधिनियमों को बनाते समय चार बातो पर विशेष ध्यान देना चाहिये। य अधिनियम शरह के आदेशो के विरुद्ध न हो। अधिनियमो की ओर विशेष व्यक्तियों का आकर्षण हो और सवसाधारण म आज्ञा का सचार हो तथा लोगो म नम्रता का प्रसार हो। किसी को उनके प्रति घृणा न हो। अधिनियमो से सम्बन्धित धर्मनिष्ठ बादशाहों के उदाहरण उपलब्ध हो। अधर्मी तथा क्रूर बादशाहो के नियमो का पुनरुद्धार न हो। अधिनियमो म कोई बात मुस्लिम के विरुद्ध न हो और इन पर आचरण करने से प्रतिवासी जनता का भला न होता हो। "जब तक अधिनियम निर्माता पूर्ण बुद्धिमान योग्य तथा अनुभवी नहीं होंगे, पिछले सुलतानों के अधिनियमों से परिचित नहीं होंगे और उनकी बुद्धि भोगविलास तथा क्रोध से प्रभावित नहीं होगी अथवा सामाजिक सुख की अभिलाषा करते होंगे उनके अधिनियम बनाने के कारण राज्य म बड़ी कठिनाईयां उत्पन्न हो जाने का भय है।"

21 - बादशाह म स्वाभाविक रूप से उच्च साहस तथा श्रेष्ठता होनी चाहिये। हताश तथा कमीना के लिये राज्य करना सम्भव नहीं। बादशाही की सबसे बड़ी आवश्यकता श्रेष्ठता की अभिलाषा है श्रेष्ठता, कजूसी, तथा कृपणता द्वारा उत्पन्न नहीं हो सकती। बादशाही दो स्तम्भो पर आधारित है। कृपा एव क्रोध। हताश व्यक्ति न तो कृपा प्रदर्शित कर सकता है और न ही क्रोध। कजूस व्यक्ति प्रजा के पास जो उत्तम वस्तुए देखता है अथवा जिन उत्तम वस्तुओ के विषय म सुनता है उनका लालच करने लगता है। साहसहीनता के कारण जिस प्रकार सम्भव होता है प्रजा की उत्तम वस्तुए तथा धन सम्पत्ति प्राप्त करने का प्रयत्न करता है जो कठिन काम उपस्थित होते हैं, उनमे धन व्यय नहीं करता अपितु अपनी शक्ति सवदा अत्याचार करने म लगाता है। साहसी वही कहा जा सकता है जो बाह्य तथा आन्तरिक गुणो म अन्य लोगो से श्रेष्ठ हो। यह श्रेष्ठता साहसहीन लोगों को प्राप्त नहीं हो सकती।

22 - बादशाहो को शान्त होना चाहिये अभिमानी होने तथा किसी बात की चिन्ता न रखने से राज्य म बहुत से रोग उत्पन्न हो जाते है। बुद्धिमान बादशाह रोगो का उपचार शीघ्रता शीघ्र करते हैं कभी कभी ऐसा होता है कि यदि राज्य के महल की दस ईंटें भी अस्तव्यस्त हो जाये तो समस्त सेना के प्रयत्न से भी वे ठीक नहीं होती। यदि दो ईंटो म ही गड़बड़ी हुई हो और उसकी ओर शीघ्र ध्यान दे

दिया जाय तो उसका उपचार हो जाता है। महामारी, अकाल आदि के समय बादशाह को चाहिये कि वह प्रजा की खिराज और जजिया में कमी करके सहायता करें। यथासम्भव दरिद्रों और भिखारियों को राजकोष से सहायता दें। व्यापारियों को अन्य प्रदेशों से अनाज लाने के लिए प्रोत्साहन दें तथा कम मूल्य पर अनाज बिकवाये। कहना न होगा कि वर्तमान में सरकार द्वारा सस्ते की सर्व दुकानों की व्यवस्था में बरनी की व्यवस्था की झलक मिलती है। बरनी के अनुसार राज्य में अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं। यथा-प्रजा से अत्यधिक धन प्राप्त करने का प्रयास किया जायें। वर्तमान में अधिकाधिक टैक्स लगाकर (कठोरता और मृत्यु दण्ड में अधिकता हो जाये, खिराज अधिक लिया जावे आदि। इन अवस्थाओं में सेना और प्रजा बादशाह से घृणा करने लगती है। विद्रोह होने लगते हैं और बादशाह के आदेशों की अवज्ञा को प्रोत्साहन मिलता है। बादशाह को चाहिये कि इन रोगों का समय रहते उपचार करें तथा इनसे बचें। राज्य में अन्य गम्भीर दुर्घटना इस प्रकार होती है कि कोई शक्तिशाली शत्रु बादशाह के राज्य पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न आरम्भ कर दें। दुर्भाग्यवश कतिपय पड़ौसी देशों का रवैया भारत के लिए ऐसा ही रहा है। राज्य के लिये महान् दुर्घटना है जिसका तुरन्त उपचार किया जाना चाहिये। शत्रु के सेनापतियों और विश्वासपात्रों के विनाशकारी प्रभाव को को युक्तिपूर्वक जैसे उपहार तथा नाना प्रकार की वस्तुएं भेजकर) घूस या कूटनीति द्वारा समाप्त कर देना चाहिय। अपनी सेना को सुदृढ़ बनाना चाहिये अपने साधनों और अनाज प्राप्ति में अधिक वृद्धि का प्रयत्न करना चाहिये। शत्रु के प्रवेश मार्गों को नष्ट कर देना चाहिये। पुलों को तुड़वा देने चाहियें और जलाशयों का खाली करा देने चाहिये शत्रु से बचने का अन्य साधन यदि उपयुक्त हो उससे सम्बन्ध स्थापित कर लेना है। यदि शक्तिशाली शत्रु से बचना किसी प्रकार सम्भव न हो तो बादशाह को चाहिये कि राजधानी को छोड़कर अन्य किसी प्रदेश में चला जाये। (जैसा कि वर्तमान में निर्वासित (सरकारें कायम हो जाती है) किसी भी आक्रमण की अवस्था में बादशाह को अपनी राजधानी तथा किले की रक्षा करनी चाहिये ताकि उसकी और प्रजा के विशेष व्यक्तियों की रक्षा हो सके। महान युद्धों में बहुत बड़ा खतरा होता है अतः यथा सम्भव बड़े युद्धों में हाथ नहीं डालना चाहिये। युद्ध तराजू के दो पलड़ों के समान होता है। एक पलड़े का भारी होना चाहे वह थोड़ा ही क्यों न हो उस पलड़े को भारी ही रखना है और संसार छिन्न भिन्न हो जाता है। वंश तथा परिवार का विनाश हो जाता है और वे दूसरों के अधिन हो जाते हैं। बरनी ने इस चेतावनी में मानवता को महायुद्धों से बचने की चेतावनी स्पष्ट रूप से गूंजती है।

23 - बादशाह को अत्यधिक मान से बचना चाहिये और राज सम्बन्धी कार्यों में ईश्वर का अनुसरण करना चाहिये क्योंकि वह ईश्वर का प्रतिनिधि तथा खलीफा होता है। बादशाह में विरोधाभासी गुणों की आवश्यकता है। "बादशाह में जो सभी का हाकिम तथा नायब है क्रोध तथा कृपा एश्वर्य तथा दया, कठोरता तथा नम्रता, अभिमान तथा आश्रय जो एक दूसरे के विरुद्ध गुण हैं पूर्णरूप से विद्यमान होने चाहिये। यदि बादशाह में केवल क्रोध ही हो और दया न हो तो अवज्ञाकारी प्रजा की क्या दशा हो जायगी यदि उसमें केवल दया ही दया हो और कठोरता न हो तो विद्रोही, विरोधी उपद्रवी तथा अवज्ञाकारी विरोध तथा विद्रोह एवं अवज्ञा से बाज नहीं आ सकते। कठोरता के स्थान पर बादशाह को दया प्रदर्शित नहीं करनी चाहिये और न दया के स्थान पर कठोरता। ईश्वर का प्रतिनिधि एवं खलीफा होने के योग्य वही व्यक्ति होता है जिसमें स्वाभाविक रूप से विरोधाभासी गुण पाये जाते हैं।

24 - बादशाही का अर्थ प्रभुत्व है। प्रभुत्व के कारण ही वह बादशाह कहलाता है बादशाह और प्रभुत्व सम्बन्धी बरनी के विचारों में हमें आधुनिक "सार्वभौमिकता के दर्शन होते हैं। बरनी लिखता है कि" बादशाही का अर्थ प्रभुत्व है। चाहे कोई व्यक्ति किसी इक्लीम पर जबरदस्ती आक्रमण द्वारा प्रभुत्व कर ले चाहे वह उसे अपने अधिकार में ले ले, चाहे मुतगल्लिब हो, चाहे उसका कोई अधिकार न हो प्रभुत्व के कारण वह बादशाह कहलाता है। यदि बादशाह के पुत्रों विश्वासपात्रों, स्त्रियों तथा दास दासियों में से कोई अधिकार प्राप्त करले और बादशाह के लिये उनकी बातों तथा इच्छा का उल्लंघन सम्भव न हो तो प्रभुत्व की स्थिति उठ जाती है। आदेश देने वाला व्यक्ति आदेश का पालन करने वाला प्रभुत्वसम्पन्न व्यक्ति सेवक बन जाता है। राज्य में प्रजा के गुण उत्पन्न हो जाते हैं। यदि कोई बादशाह पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करले तो इससे उसका अन्त नहीं हो जाता। बादशाह पर धर्म तथा मजहब के विरुद्ध बातें सिखाने वालों, जादू कीमिया, कानून, औषधियों की शिक्षा देने वालों का प्रभुत्व हो जाता है। बादशाह को वे प्रभावित कर लेते हैं और अपने धर्म का प्रचार करने लगते हैं। वे बादशाह को मार्ग भ्रष्ट कर देते हैं।"[1]

यदि हम बरनी के आदर्श नायक के बारे में दिये गये विचारों में से मजहबी संकीर्णता सम्बन्धी विचार निकाल दें तो निःसन्देह ये विचार किसी भी शासन व्यवस्था के लिये आदर्श सिद्ध हो सकते हैं।

1 प्रतापसिंह मध्यकालीन भारत (पृष्ठ 515 से 521 तक)

समीक्षा

बरनी एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था जिसके विचारों की छाप उसकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। यह सत्य है कि उसने जो कुछ लिखा है वह अपनी जानकारी के आधार पर लिखा है। उसने तिथियाँ बहुत कम दी हैं वो भी सही नहीं हैं। फिर भी उसने घटनाओं का बड़े ही विलक्षण तरीके से वर्णन किया है और तीखे व्यंग किये हैं।

बरनी की निष्पक्षता और ईमानदारी पर सन्देह प्रगट करते हुए इलियट एवं डाउसन ने लिखा है कि 'जियाउद्दीन बरनी अन्य अनेक इतिहासकारों की भांति अपने समकालीन शासकों के आदेश में उनके सामने लिखा करता था इसलिये वह ईमानदार इतिहासकार नहीं है। बहुत सी महत्वपूर्ण घटनायें बिल्कुल छोड़ दी गई है या उनका साधारण मानकर थोड़ा सा स्पष्ट किया है। अलाउद्दीन के राज्यकाल में मुगलों के कई आक्रमण हुए, परन्तु उसने उनका उल्लेख नहीं किया है। मुहम्मद तुगलक ने भीषण हत्या और बेइमानी से राज्य प्राप्त किया था। इसका भी उल्लेख नहीं किया गया है। मुहम्मद तुगलक का अपने समकालीन सुलतानों से निकट सम्बन्ध था। इसको ध्यान में रखकर ही यह बात छिपाई गई है। मुगलों के आक्रमण के विषय में यह कहा जा सकता है कि एशिया और यूरोप के पश्चिमी लेखकों ने भी कई बड़े महत्वपूर्ण आक्रमणों का वृतान्त नहीं लिखा है। फरिश्ता ने उनका वर्णन किया है और बरनी पर वह यह आरोप लगाता है कि उसने इस सत्य को छिपाया है। फरिश्ता की जानकारी के साधन निःसन्देह उत्तम थे। उसकी पुस्तक की प्रशंसा की जाती है। जियाउद्दीन बरनी के इतिहास में सुलतान की स्तुति सी की गई है जिससे सिद्ध होता है कि बरनी ने जान-बूझकर इन आक्रमणों का वृतान्त नहीं लिखा है। डॉ० गुडनीज डॉ० हरबिलाट और प्राइस ने जिन लेखों को उद्धत किया है वे भी इन आक्रमणों का उल्लेख नहीं करते।[1]

इलियट एवं डाउसन ने भारत का इतिहास तृतीय खण्ड नामक पुस्तक में बरनी के अनेक उदाहरण दिये है। डा० रिजवी ने भी बरनी की कृति तारीख-ए-फीरोजशाही के अधिकांश भाग का हिन्दी अनुवाद किया है।

बरनी की कृति निःसन्देह अत्यन्त मूल्यवान है जिसने बाद के इतिहासकारों को प्रेरणा दी है। 17वीं शताब्दी के महत्वपूर्ण इतिहासकारों जैसे-निजामुद्दीन अहमद, बदायनी फरिश्ता हाजी उद्दवीर आदि ने बरनी के इतिहास

1 इलियट एवं डाउसन भारत का इतिहास, तृतीय खण्ड पृष्ठ 63

का अवलोकन करने के बाद अपनी रचनाएं लिखी हैं। बरनी ने तारीख ए फीरोज शाही एवं फतवाए-जहांदारी के अतिरिक्त इनायतनामा ए इलाही, हसरतनामा, सना ए-मुहम्मदी, सलावत-ए-कबीर आदि ग्रंथ लिखे हैं परन्तु बरनी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तक "तारीख-ए फीरोजशाही" है जो उसके पाण्डित्य और विद्वता का अमर संग्रह है।



6 | शम्स-ए-सिराज अफीफ : तारीख-ए-फीरोजशाही

जहां से बरनी की तारीख ए फीरोजशाही समाप्त होती है वहीं से अफीफ की तारीख ए फीरोजशाही प्रारम्भ होती है। अफीफ ने इस कृति में केवल फीरोज तुगलक का 1357 ई० से 1388 ई० तक का इतिहास सविस्तार लिखा है।

अफीफ ने अपनी पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि सुलतान फीरोज शाह तुगलक के ठट्टा अभियान की वापसी के समय उसकी आयु 12 वर्ष थी। इस आधार पर आधुनिक इतिहासकारों ने अफीफ का जन्म 1350 ई० का माना है किन्तु अभी तक सभी विद्वान इस बात पर एक मत नहीं हैं कि फीरोज तुगलक 1361 ई० में ही ठट्टा के अभियान से वापस आया था। अफीफ का पिता सिराजुद्दीन अफीफ फीरोजशाह के दरबार में अनेक पदों पर कार्य कर चुका था। वह दीवाने वजारत में भी कार्य कर चुका था। इसके अतिरिक्त उसके पिता ने सुलतान के साथ जाजनगर और नगरकोट के अभियानों में भी भाग लिया था।

अफीफ स्वयं दीवाने वजारत में कार्यरत था। इससे इस बात की पुष्टि हो जाती है कि उसने दरबारी सामन्तों का वर्णन अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर लिखा है। सुलतान के बहुत नजदीक होने के कारण ही उसने अमीरों तथा प्रशासन के बारे में निम्नत विवरण दिया है।

अफीफ ने तारीख ए फीरोजशाही के अतिरिक्त कुछ अन्य ग्रन्थों की भी रचना की है जिसके बारे में उसने अपनी पुस्तक में लिखा है। ये रचनाएं अब उपलब्ध नहीं हैं। अफीफ तारीख ए फीरोजशाही नामक ग्रन्थ की रचना 1411-12 ई० में कर चुका था। इस पुस्तक में पांच भाग हैं। प्रत्येक भाग में 18 अध्याय हैं परन्तु पांचवें भाग में केवल 15 अध्याय हैं। इससे यह पता चलता है कि यह पुस्तक अपूर्ण रह गई है। ऐतिहासिक महत्त्व के आधार पर यह पुस्तक पांच भागों में विभाजित कर सकते हैं —

1– फीरोजशाह का चरित्र

2– फीरोजशाह के अभियान

3– शासन प्रबन्ध का विवरण
4– फीरोजशाह की धार्मिक नीति
5– फीरोजशाह के दरबारियों की जीवनी का विवरण

1 फीरोजशाह तुगलक का चरित्र

अफीफ ने फीरोजशाह तुगलक के चरित्र के गुणों और दोषों का अच्छा विवरण दिया है। उसने लिखा है कि सुलतान बहुत दयालु और धर्मपरायण व्यक्ति था। "अफीफ ने फीरोजशाह के धार्मिक विचारों की काफी प्रशंसा की है क्योंकि सुल्तान और वह दोनों ही शेख निजामुद्दीन औलिया के भक्त थे। अफीफ ने फीरोजशाह की दयालुता का वर्णन करते हुए लिखा है कि " सुलतान अक्सर अपराधियों को क्षमा कर दिया करता था और उसने दरिद्रों के लिये अनेकों सस्थाएं दिल्ली तथा साम्राज्य के अनेक भागों में खोली थी। सुलतान को दानपुण्य आदि में बड़ी रुचि थी तथा वह मुसलमानों का बड़ा शुभचिन्तक था जिसके अनेकों उदाहरण उसने पुस्तक में दिये हैं।"

अफीफ ने अपनी कृति में फीरोज तुगलक के बारे में यहां तक लिखा है कि "वास्तव में सुलतान एक सन्त था जो अपने सिर पर राजमुकुट पहिने था। किन्तु उसकी यह प्रशंसा सही प्रतीत नहीं होती क्योंकि उसने सुलतान की प्रशंसा के अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखा है। अफीफ की रचना से पता चलता है कि फीरोजशाह तुगलक एक कुशल सैनिक नहीं था। उसने जितने भी अभियान किये उनमें या तो वह असफल रहा अथवा शत्रुओं से समझौता कर लिया। फीरोजशाह तुगलक का सौभाग्य ही था कि उसके समय में मंगोलों ने आक्रमण नहीं किया।

2 फीरोजशाह के अभियान

जब फीरोजशाह शासक बना तब दक्षिणी भारतवर्ष के राज्यों ने दिल्ली के सुलतान की अधीनता मानने से इन्कार कर दिया। बंगाल एवं सिन्ध स्वतन्त्र राज्य बन चुके थे। फीरोजशाह ने दक्षिण के किसी भी राज्य पर अधिकार करने का प्रयास नहीं किया। बंगाल, कांगड़ा एवं सिन्ध के अभियानों में वह बिना विजय प्राप्त किये ही यह सोचकर वापस आ गया कि युद्ध में असंख्य मुसलमानों की व्यर्थ में ही हत्या होगी। इससे स्पष्ट है कि उसमें कुशल सेनानायक के गुण नहीं थे। उसने 38 वर्ष के शासनकाल में केवल तीन या चार अभियान किये। इसका परिणाम यह हुआ कि सेना कमजोर हो गई और साम्राज्य में अराजकता एवं अव्यवस्था के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे।

3 शासन प्रबन्ध का विवरण

अफीफ ने अपनी पुस्तक में सुलतान के समय के शासन प्रबन्ध का अच्छा

विवरण दिया है। उसने लिखा है कि उसके साम्राज्य में भ्रष्टाचार और रिश्वत खोरी का बोलबाला था। नायक से लेकर उच्च पदाधिकारी तक सभी रिश्वतखोर थे। अफीफ ने सुलतान की राजस्व नीति सिंचाई विभाग, एवं उसके द्वारा बनवाई गई नहरों का अच्छा वर्णन किया है। अफीफ की पुस्तक इसलिए महत्व रखती है क्योंकि हम केन्द्रीय शासन व अन्तर्गत अनेकों विभागों के शासन प्रबन्ध के बारे में केवल उसी की पुस्तक में जानकारी प्राप्त होती है।

4 फीरोजशाह की धार्मिक नीति

अफीफ ने फीरोजशाह की धार्मिक नीति के बारे में लिखा है कि 'सुलतान रोजा नमाज का बड़ा पाबन्द था। दरबार तथा महल में भी सदैव दरबार के बड़े बड़े काजियों और विद्वानों के साथ रहता था। उसने अपने समय में शरियत विरुद्ध जितने कर थे उनको समाप्त कर दिया। उसने दिल्ली के ब्राह्मणों जिनसे जजिया नहीं लिया जाता था लेना प्रारम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त दिल्ली तथा साम्राज्य में अनेकों ऐसे मुसलमान व सम्प्रदाय थे जो कट्टर सुन्नी मुसलमानों के बड़े विरोधी थे। जैसे शिया इस्नाआइली तथा बिहार के अन्य सम्प्रदाय के लोग, सुलतान ने उन्हें बन्दी बनाकर उनकी हत्या करवा दी। इसी सन्दर्भ में उसने दिल्ली के एक ब्राह्मण का उल्लेख किया है जिसको जीवित आग में सुलतान ने इसलिये जलाया कि उसने इस्लाम धर्म स्वीकार करना नामंजूर कर दिया।'

अफीफ के वर्णन से पता चलता है कि फीरोजशाह एक कट्टर सुन्नी शासक था परन्तु अमीर खुसरो ने अपनी पुस्तक 'सियरुल औलिया' में लिखा है कि सुलतान शरा के कई नियमों का पालन नहीं करता था। उसने एक स्थान पर लिखा है कि एक बार जब कुछ काजी सुलतान से मिलने के लिये आये तो उन्होंने देखा कि सुलतान शराब के नशे में धुत होकर अपनी शय्या पर वस्त्रहीन पड़ा हुआ था। अतः अफीफ का यह कहना कि फीरोजशाह एक आदर्श मुसलमान शासक था, उचित प्रतीत नहीं होता। अन्य धर्मों के लोगों के प्रति उसके अत्याचार का विवरण हम अन्य पुस्तकों में भी मिलता है।

5 फीरोजशाह के दरबारियों की जीवनी का विवरण

अफीफ ने अपनी कृति के पांचवे भाग में सुलतान के दरबार के सामन्तों की जीवनी का वर्णन किया है जिससे पता चलता है कि उन सामन्तों की दरबार में कैसी स्थिति थी। इससे हमें दरबारी राजनीति और सुलतान के स्वभाव के में जानकारी प्राप्त होती है।

रिजवी ने लिखा है कि "वह (अफीफ) सुल्तान फीरोजशाह की धर्मनिष्ठता तथा कोमलता से अत्यधिक प्रभावित था। वह स्वयं अपने समकालीन सूफियों का मुरीद था और सुल्तान फीरोजशाह को उसने एक आदर्श मुसलमान बादशाह के रूप में उजागर किया है। उसने केवल युद्ध तथा अभियानों का ही उल्लेख नहीं किया है अपितु सुल्तान फीरोजशाह के राज्यकाल की अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं तथा शासन प्रबन्ध का भी विवरण दिया है। सुल्तान के सार्वजनिक निर्माण कार्यों, भवनों नहरों इत्यादि के निर्माण से वह अपने समकालीनों की भांति प्रभावित था। उसका विवरण सुल्तान फीरोजशाह के मुख्य अधिकारियों के विषय में भी बहुत ही महत्वपूर्ण है। उसके इतिहास से समकालीन सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति के विषय में भी स्पष्ट संकेत मिलते हैं। वह अपने इतिहास में सुल्तान फीरोजशाह तथा उसके अधिकारियों का विवरण देते हुए कहीं कहीं इतिहासकार की निष्पक्षता को भूल जाता है और इस ओर विशेष ध्यान नहीं देता। उसने अपना विवरण काव्यमयी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। अतः उसकी प्रशंसा एवं भाषा के उलझाव से ऐतिहासिक निष्कर्ष निकालना कठिन हो जाता है। फिर भी सुल्तान फीरोजशाह के समकालीन इतिहासकार होने के कारण उसके विवरण की उपेक्षा नहीं की जा सकती।[1]

ग्रन्थ के दोष –

ग्रन्थ के प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं –

(1) घटनाओं का वर्णन क्रमबद्ध रूप में नहीं किया गया है।

(2) लेखक ने कुछ ऐसी घटनाओं का वर्णन भी किया है जिनका ऐतिहासिक दृष्टि से कोई महत्व नहीं है।

(3) अफीफ को निष्पक्ष इतिहासकार नहीं कहा जा सकता क्योंकि उसने निष्पक्ष इतिहासकार की भांति अपनी पुस्तक नहीं लिखी है।

(4) उसने अपनी कृति काव्यमयी भाषा में लिखी है इसलिये उसकी प्रशंसा एवं दोषों को पढ़ने के बाद ऐतिहासिक निष्कर्ष निकालना कठिन हो जाता है।

समीक्षा

इन दोषों के होते हुए भी अफीफ के विवरण की उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि वह सुल्तान फीरोजशाह का समकालीन इतिहासकार था। उसने घटनाओं का वर्णन बहुत विस्तार से किया है। उसके इतिहास से उस समय की सामाजिक एवं आर्थिक दशा के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इसका महत्व

1 रिजवी एस ए ए तुगलककालीन भारत का भाग (2) पृष्ठ छ एवं ज

इसलिये भी अधिक है क्योकि बाद में इतिहासकारो ने भी उस समय का इतिहास अफीफ की पुस्तक को आधार बनाकर लिखा है।

डा० ईश्वरी प्रसाद ने अफीफ की कृति के बारे मे लिखा है, "अफीफ म बरनी जैसी न तो बौद्धिक उपलब्धि है और न ही इतिहासकार की योग्यता, सूझबूझ तथा पैनी दृष्टि ही, अफीफ एक घटना को तिथीक्रम से लिखने वाला सामान्य इतिहासकार है जिसने प्रशसात्मक दृष्टि से अपने विचार व्यक्त किये हैं। वह अत्यन्त अतिशयोक्तिपूर्ण शैली म सुलतान की प्रशसा करता है। उसम इतनी अतिशयोक्ति है कि फीरोज ने सत्कार्यो के वर्णन को पढकर सर हेनरी इलियट ने उसकी तुलना अकबर से कर डाली है।[1]

1– डा० ईश्वरी प्रसाद – भारतीय मध्ययुग का इतिहास, पृष्ठ 27



7 | सुलतान फीरोजशाह तुगलक : फुतूहाते फीरोजशाही

तुगलक वंश के ऐतिहासिक स्त्रोतों में फीरोज तुगलक द्वारा लिखित पुस्तक "फुतूहाते फीरोजशाही" महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह बहुत संक्षेप में लिखी हुई है। सुलतान ने इसे पुस्तक के रूप में न लिखकर दिल्ली की जामा मस्जिद में मीनार पर खुदवा दिया था जो अब नष्ट हो चुकी है। इस रचना के माध्यम से सुलतान ने अपने को एक धर्मपरायण शासक सिद्ध करने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त इसमें उसने अपने द्वारा बनाये गये कानूनों और रचनात्मक कार्यों का अच्छा विवरण दिया है।

निजामुद्दीन ने अपनी कृति "तबकात अकबरी" में फीरोजशाह की इस रचना के बारे में लिखा है कि "सुलतान ने अपने राज्यकाल की घटनाओं को स्वयं संकलित करके फुतूहाते फीरोजशाही नामक पुस्तक की रचना की थी। निजामुद्दीन ने फीरोजशाह की इस पुस्तक को देखा था और अपनी कृति में फीरोजशाह का इतिहास लिखते समय वह इससे काफी लाभान्वित भी हुआ था। उसने लिखा है कि "सुलतान फीरोजशाह ने फीरोजाबाद के निकट एक अष्टाकार गुम्बद के आठों ओर इस पुस्तक के आठ अध्याय पत्थर पर खुदवा दिये थे।" (तबकात अकबरी)

निजामुद्दीन ने फीरोज की पुस्तक में से राजनीति, राजस्व व्यवस्था और जनहित कार्यों के कई उदाहरण अपनी कृति में दिये हैं। किन्तु अब इस गुम्बद का पता नहीं, और न ही पूरी पुस्तक ही कहीं उपलब्ध हुई है। अफीफ ने भी सुलतान की इस रचना के बारे में अपनी कृति में लिखा है।

इस रचना का मूल्यांकन डा० रिजवी ने इस प्रकार किया है - 'फुतूहात फीरोजशाही 1885 ई० में देहली से प्रकाशित हुई थी और इसकी हस्त लिखित प्रतियां भी मिलती हैं। किन्तु इसमें से सुलतान फीरोजशाह के राज्यकाल की घटनाओं का अधिक विवरण नहीं है। केवल राजनीति, अर्थ व्यवस्था, शासन प्रबन्ध, तथा सार्वजनिक निर्माण कार्यों का संक्षिप्त उल्लेख मिलता है। इसमें फीरोजशाह ने अपने कारनामों का जो विवरण दिया है, उससे पता चलता है कि

वह धर्मनिष्ठ सुन्नी मुसलमान के रूप में जीवन व्यतीत करने तथा शासन प्रबंध को भी उसी ढांचे में ढालने का प्रयास करता था। हिन्दू, मुसलमान तथा इस्लाम के अन्य फिरकों से उसे कोई सहानुभूति नहीं थी। शरा के विरुद्ध बहुत सी बातों को जो हिन्दुओं के साथ तथा दोनों जातियों के घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण मुसलमानों के जीवन का विशेष अंग बन गई थी और जिनका शरा के कथित पुजारी अन्य बादशाह अंत तक भी कभी निराकरण न करा सके, रोकने का सुलतान फीरोजशाह ने भी यथासम्भव प्रयत्न किया। यद्यपि सुलतान फीरोजशाह का उद्देश्य इस विवरण से तो यही था कि वह यह दिखाये कि किस प्रकार उसने शरा को उन्नति प्रदान की। किन्तु उसके विवरण से उस समय की सामाजिक दशा की भी झांकी मिल जाती है। जबकि हिन्दुस्तान में मुसलमानों ने अपने वातावरण से प्रभावित होकर बहुत सी प्रथाओं का, जो इस्लाम में स्वीकृत न थी अंगीकार कर लिया था और इस्लाम की अपेक्षा देश के हित के विषय में सोचने लगे थे।[1]

समीक्षा

सुलतान फीरोजशाह तुगलक ने इस पुस्तक को मस्जिद में इसलिये खुदवाया था ताकि जनता उसकी धार्मिक भावनाओं से परिचित हो सके। अतः अधिकांश इतिहासकारों का यह मानना है कि यह पुस्तक विश्वसनीय नहीं है परन्तु यह मत सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि अन्य इतिहासकारों ने अपने ग्रन्थों में उसमें दिये गये तथ्यों की पुष्टि की है। अफीफ ने भी इस पुस्तक के बारे में अपनी कृति में लिखा है इस ग्रन्थ से हमें फीरोज तुगलक की धार्मिक कट्टरता के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। समकालीन ग्रन्थ होने के कारण इसका ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्व है।

1– रिजवी, एस ए ए – तुगलककालीन भारत भाग ( ) पृष्ठ 6



8 ख्वाजा अबु बक इसामी: फुतूह-उस-सलातीन

इसामी मुहम्मद बिन तुगलक का समकालीन था। उसका जन्म 711 हि० (1311-12 ई०) में लगभग हुआ था। उसने फुतूह उस सलातीन की रचना 27 रमजान 750 हि० (9 दिसम्बर 1349 ई०) को प्रारम्भ की और 6 रबी उल अव्वल 751 हि० (14 मई 1349 ई०) को पांच मास नौ दिन में इसे पूर्ण कर लिया। उसने फारसी पद्यों में यह पुस्तक लिखी है। इसको "शाहनामा-ए-हिन्द" भी कहते हैं। इस ग्रन्थ में सुलतान महमूद गजनवी के समय से लेकर सुलतान अलाउद्दीन बहमनशाह तक के शासनकाल का विवरण है।

इसामी ने लिखा है कि "मैंने जो कुछ लोगों से सुना एवं पुस्तकों में पाया उसे इस पुस्तक में लिखा। प्राचीन कहानियों की सत्यता के अन्वेषण में मैंने बड़ा परिश्रम किया। हिन्दुस्तान के बादशाहों का हाल, बुद्धिमान मित्रों द्वारा ज्ञान कराया। सभी विषयों में इतिहास पढ़ा।"[1]

इससे स्पष्ट होता है कि इसामी ने जो कुछ लिखा है वह बड़ी छानबीन के बाद लिखा है। इसके द्वारा पता चलता है कि बहुत से ग्रन्थ, जो इसामी को उपलब्ध थे, अब अप्राप्य हैं अतः यह रचना बहुत महत्वपूर्ण है।[2]

बरनी की अपेक्षा इसामी ने सुलतान गयासुद्दीन तुगलक के राज्यकाल की घटनाओं का वर्णन विस्तारपूर्वक लिखा है। सम्भवतः इसामी से प्राप्त जानकारी के आधार पर उलुग खां (सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक) के तेलंगाना पर आक्रमण के सम्बंध में कई महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं। उलुग खां का जाजनगर पर आक्रमण एवं मंगोल आक्रमण का भी उसने विस्तार से वर्णन किया है। गाज़ी का गुजरात पर आक्रमण, पराओं की वीरता तथा गाज़ी की हत्या, का इसामी ने अच्छा वर्णन किया है। बरनी ने सम्भवतया इस घटना को जान बूझकर छिपाया था।

1– रिजवी एस ए ए – तुगलककालीन भारत, भाग (1) पृष्ठ 6

2– रिजवी एस ए ए – " " " ज

गयासुद्दीन तुगलक ने मुगलो द्वारा सुनाम गये धन को पुन प्राप्त करने का प्रयास किया था उसी के अन्तर्गत उसने इसामी के पूवजो के भी ग्राम भी जब्त कर लिये थे। इसामी का मानना था कि उन ग्रामो को उस सूचि में सम्मिलित नही किया जो सम्भवतः था। अत उसने इस काय की आलोचना की है। यद्यपि गयासुद्दीन तुगलक के शासन की काफी प्रशसा की है। अत इसामी के पूर्वजो के ग्रामो का छीना जाना पूर्णतया अन्याय बताना कठिन है।

सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक ने जब दिल्ली से देवगिरी राजधानी स्थानान्तरित की तो इसामी भी अपने दादा के साथ दिल्ली से देवगिरी गया। रास्ते मे उसके दादा की मृत्यु हो गई। अन्य लोगो के साथ वह भी कष्ट भोगता हुआ देवगिरी पहुचा। अत वह मुहम्मद तुगलक से अत्यन्त नाराज था। इस कारण उसका सुलतान के प्रति क्रोध पैदा स्वाभाविक है। इसामी के अनुसार अफगानपुर के महल की दुघटना निम्न दो कारणो से हुई थी —

1- हाथियो को दौडाना

2- *उलुग खा ने षडयन्त्र रचकर ऐसा महल बनवाया कि सुलतान जैसे ही उसके नीचे बैठे, वह छत बिना किसी प्रयास के गिर जाय।*

बरनी ने मुहम्मद बिन तुगलक के राज्यकाल के प्रारम्भ की कुछ घटनाओ का वर्णन नही किया है उनका वर्णन इसामी ने किया है। नगरकोट विजय तथा गुर्शास्प के विद्रोह का वर्णन अन्य समकालीन ग्रन्थो मे नही मिलता। इसामी ने गुर्शास्प के विद्रोह का वर्णन विस्तारपूर्वक लिखा है। इस सम्बन्ध मे इब्नबतूता का विवरण इसामी से मिलता है समकालीन इतिहासकारो मे केवल इसामी ही ऐसा इतिहासकार है जिसने गढियाना की विजय का वर्णन किया है। उसने बहराम आयबा के विद्रोह के सम्बन्ध मे कुछ ऐसी बातो का वर्णन किया है जो समकालीन इतिहास के ग्रन्थो मे नही मिलती।

यद्यपि इसामी कवि था परन्तु उसमे ऐतिहासिक घटनाओ को शुद्ध एव तिथिक्रम से लिखने की आश्चर्यजनक क्षमता थी। 'मुहम्मद तुगलक के राज्यकाल मे उसे अत्यत कष्ट और पीडा का सामना करना पडा था। अन्य सब लोगो की भाति उसे भी दौलताबाद जाने और उस लम्बी यात्रा के कष्ट उठाने के लिये बाध्य होना पडा था। सम्भवत इसीलिये वह मुहम्मद तुगलक का कटु आलोचक है और उसे एक ऐसे अत्याचारी शासक के रूप मे चित्रित करता है जिसे अपनी जनता के दुख दर्द की कोई चिन्ता नही थी। उसने सुलतान के निष्ठुर कृत्यो को अपनी आखो से देखा था और वह स्वय उसके कुशासन और विद्रोहो से ऊब गया था।' [1]

1– डा० ईश्वरी प्रसाद – भारतीय मध्ययुग का इतिहास, पृष्ठ 27

इसामी ने दिल्ली से देवगिरी परिवर्तन के पश्चात सुलतान के विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं की। जहां कहीं भी सुलतान का नाम आता है, उसका क्रोध उबल पड़ता है। उसने सभी विद्रोहों का समर्थन किया है तथा विद्रोहियों की काफी प्रशंसा की है तथा सुलतान की सहायता करने वालों को वह अत्याचारी की सहायता करने वाला कहता है। सुलतान की आज्ञा का पालन करने वालों एवं उसका विरोध न करने वालों की भी वह आलोचना करता है। उसने लिखा है कि "यदि देहली वाले उसके आदेशों का पालन नहीं करते तो वे इतने कष्ट में नहीं पड़ते। इन लोगों को इसी प्रकार का फल भोगना पड़ता है जो कोई अत्याचारी पर दया करता है तो वही उसका सिर मिट्टी में मिला देता है। लोगों ने एक उपद्रवी को अपना बादशाह बना लिया और उसी समय से युद्ध नहीं किया। यदि कोई सरदार उस उपद्रवी के विरुद्ध किसी प्रदेश में अपनी पताका उठाता है तो बहुत से अयोग्य उस उपद्रवी (सुलतान) की सहायता करने लगते हैं और उस व्यक्ति का साथ नहीं देते। यह दुष्ट अत्याचारी (सुलतान) संसार भर में अकाल तथा अत्याचार उत्पन्न कर रहा है। यदि इस देश के सब लोग संगठित हो जायें और उस पर आक्रमण कर दें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, यदि उसका सिर मिट्टी में मिल जाय।'

इस प्रकार राज्य के विरुद्ध विद्रोह करने के लिये उत्साहित करने की शिक्षा इसामी के अलावा अन्य किसी इतिहासकार ने शायद ही दी होगी। डा० रिजवी के अनुसार 'इसामी ने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध अंधाधुंध दोषारोपण किये हैं।"1

इसामी ने तांबे के सिक्कों के बारे में लिखा है कि इस नई मुद्रा के कई कुप्रभाव दृष्टिगोचर हुए। अब्बासी खलीफा के द्वारा अधिकार पत्र मिलने से पहले सुलतान ने शुक्रवार और ईदों की नमाज पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। इसका वर्णन इसामी ने निम्न प्रकार से किया है - "उसने इस्लाम के नियम त्याग दिये थे और कुफ्र प्रारम्भ कर दिया था। उसने अजान बन्द करवा दी थी। मुसलमान रात दिन उसमें घुला करते थे। उसने जुम्मे की जमाअत (नमाज) भी रुकवा दी थी।'

परन्तु इसामी का यह कथन सही प्रतीत नहीं होता क्योंकि इब्नबतूता इस कथन की पुष्टि नहीं करता है। इब्नबतूता ने लिखा है कि सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक धार्मिक प्रवृति का व्यक्ति था और नमाज नहीं पढ़ने वाले व्यक्तियों की वह हत्या करवा देता था। प्रत्येक वर्ष ईद के अवसर पर दरबार में शानदार समारोह आयोजित किये जाते थे। इसामी ने हिन्दुस्तान की प्रशंसा की है तथा

(1) रिजवी एस ए ए तुगलक कालीन भारत भाग प्रथम पृष्ठ क

ग्रलाउद्दीन खिलजी से मुहम्मद तुगलक की तुलना की है। उसने ग्रलाउद्दीन खिलजी की काफी प्रशंसा की है और मुहम्मद बिन तुगलक की घोर निन्दा की है। इसामी सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक से नाराज था। ग्रत उसके द्वारा सुलतान के चरित्र के बारे मे जो कुछ लिखा गया है, उसे एकदम सही नही माना जा सकता।"

डा० रिजवी ने लिखा है कि "इस काल से सम्बधित इसामी की कृति का सबसे ग्रधिक महत्वपूर्ण भाग दक्षिण का इतिहास है। सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक ने देवगिरी के शासन सम्बन्धी सभी ग्रधिकार ग्रपने गुरु कुतलुग खा को प्रदान कर दिये थे। कुतलुग खा की वीरता तथा योग्यता की बरनी ने बडी प्रशसा की है। इसामी भी उसके गुणो से बडा प्रभावित था। कुतलुग खा द्वारा ग्रनेको विद्रोहो को शान्त किये जाने का उल्लेख इसामी ने बडे निष्पक्ष भाव से किया है। हसन काग़ू द्वारा बहमनी राज्य की स्थापना तथा बहमनी राज्य का प्रारम्भिक हाल, इसामी ने बडे विस्तार से लिखा है। बहमनी राज्य के ग्रमीरो की उसने बडी प्रशसा की है। उनके कारनामो का उसने बडा विशद चित्रण किया है। उसने ग्रपनी रचना सुलतान ग्रलाउद्दीन बाहमनशाह को समर्पित की। वह उसे देवगिरी का मुक्तिदाता समझता था।[1]

डा० इश्वरी प्रसाद ने लिखा है कि इसामी की प्रवाहमयी शैली प्रभावोत्पादक है किन्तु इन सबसे ग्रधिक प्रभावोत्पादक है उसकी उपयुक्तता।[2]

ग्रन्थ के दोष (1) इसामी ने ग्रपनी कृति मे घटनाग्रो की तिथिया बहुत कम दी है इसलिये तिथियो के लिये हमे ग्रन्य रचनाग्रो पर निर्भर रहना पडता है। (2) इसामी तुगलक वश के सुलतानो से रुष्ठ था। ग्रत उसने उनकी बहुत बुराइया की हैं।

मूल्याकन इन दोषो के बावजूद भी यह स्वीकार करना पडेगा कि ऐतिहासिक दृष्टि से उसकी कृति का बहुत ग्रधिक महत्व है। उस समय न तो कोई बादशाह की बुराई कर सकता था ग्रौर न ही उसके खिलाफ लिख सकता था। परन्तु हम उसके इतिहास से सुलतानों के ग्रालोचको का मत भी जान सकते हैं।

इसामी ऐतिहासिक घटनाग्रो को मानवीय शक्तियो द्वारा प्रेरित नही मानता था। उसका यह मानना था कि "इतिहास मे जो कुछ होता है वह ईश्वर की इच्छा से होता है तथा उस पर मनुष्य मात्र का कोई वश नही है।'

1– रिजवी एस ए एस तुगलक कालीन भारत, भाग प्रथम पृष्ठ ग्र

2– डा० ईश्वरी प्रसाद - भारतीय मध्य युग का इतिहास, पृष्ठ 27

=✱=

9 | इब्नबतूता : किताब-उल-रहला

इब्नबतूता तानजीर का निवासी था। पूर्वी देशो के लोग उसे शम्सुद्दीन के नाम से पुकारते थे। "वह अरब तथा अरबी बोलने वाले मुसलमान यात्रियों की विस्तृत श्रृंखला की एक कडी था। जो मध्यकाल म समय समय पर भारतवष से आते रहे और जिन्होंने भारतवष के विषय मे अपनी यात्राओं के विवरणो तथा भूगोल एव इतिहास की पुस्तको मे कुछ लिखा। वह चौदहवी ईस्वी का बडा ही महत्वपूर्ण यात्री था।"

इब्नबतूता 1325 ई० मे तानजीर से मक्का के लिय रवाना हुआ। 15 अगस्त 1331 ई० को मक्का पहुचा। इसके बाद 1333 ई० मे वह कई स्थानो का भ्रमण करता हुआ दिल्ली पहुचा। मुहम्मद तुगलक के दरबार मे उसका अच्छा सम्मान था। सुलतान ने उसे 1342 ई० मे चीन म राजदूत बनाकर भेज दिया। मराको के सुलतान अबू इनआन मरीनी ने इब्नबतूता को विशेष प्रोत्साहन दिया था। जिन जिन देशो को उसने देखा था, उनका हाल लिखने का उसे आदेश दिया। इब्नबतूता की यात्राओ का सकलन 756 हि० (1355-56 ई०) म पूर्ण हुआ। एक हस्तलिखित पोथी के अनुसार इस यात्रा को "तुहफत उन-नुज्जार' फी गराइबिल अमसार अजाईबुल असफार "नाम दिया गया।[1]

इब्नबतूता मुहम्मद तुगलक के दरबार म 8 वष तक रहा था। उसने भारत के भूगोल, शासन प्रबन्ध, डाक व्यवस्था, और सुलतान के दरबार आदि का विस्तृत विवरण दिया है। डा० एस ए ए रिजवी ने इब्नबतूता के विवरण को सक्षिप्त रूप से निम्न प्रकार लिखा है –

भौगोलिक विवरण - इब्नबतूता ने भारतवष की भौगोलिक स्थिति, यहा जलवायु, फल-फूल वनस्पति, पशुओ तथा वेशभूषा और रहन सहन कृषि एव व्यापार के विषय मे विस्तार से लिखा है। वह जिस नगर म भी पहुचा उसको उसने बडी गहन दृष्टि से अध्ययन किया। उसकी यात्रा के विवरण के द्वारा भारतवष के अनेक समकालीन नगरो के विषय म पर्याप्त जानकारी प्राप्त हो

1– रिजवी, एस ए ए तुगलककालीन भारत भाग (1) पृष्ठ ठ

जाती है। इब्नबतूता ने देहली का हाल बड़े विस्तार से लिखा है। नगर की चार दीवारी, विभिन्न द्वार, देहली की जामा मस्जिद, देहली की कब्रा, तथा देहली के शहर के बड़े हौजों का बड़ा ही विस्तृत उल्लेख किया गया है। उसके भौगोलिक ज्ञान का मूल आधार उसका व्यक्तिगत निरीक्षण है और यह किसी ग्रन्थ में इस सम्बन्ध में प्रकाशित नहीं हुआ है। आरम्भ में ही उसने विभिन्न नगरों की दूरी तथा उत्तर और के अन्तर का उल्लेख किया।

शासन प्रबन्ध - इब्नबतूता का सम्बन्ध ग्रामों के शासन प्रबन्ध तथा न्याय व्यवस्था और वक्फ (धर्म संस्थाओं) के इन्तजाम में विशेष रूप से रहा। उसकी यात्रा के विवरण से समकालीन ग्रामों के शासन प्रबन्ध पर भी प्रकाश पड़ता है जिसकी चर्चा अन्य समकालीन ऐतिहासिक ग्रन्थों में कम ही मिलती है।

सुलतान तथा उच्च पदाधिकारियों की गतिविधि से वह पूर्ण रूप से परिचित था। अतः उसने उनके कर्त्तव्यों एवं उनसे सम्बन्धित राजकीय सेवाओं का उल्लेख विस्तार से किया है। उसके पर्यटन लेख द्वारा अनेकों पारिभाषिक शब्दों के विषय में भी ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इसलिये कि अन्य समकालीन इतिहासकारों ने, जो इसी शासन प्रबन्ध में रहते चले आये थे उन शब्दों की व्याख्या की आवश्यकता नहीं समझते थे। किन्तु इब्नबतूता ने मध्यकालीन भारतीय इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने वालों की कठिनाई का बहुत कुछ निवारण कर दिया है। केन्द्र के शासन प्रबन्ध की दृढ़ता के ज्ञान के साथ साथ उसकी यात्रा के विवरण के लेख से यह भी पता चलता है कि देहली से थोड़ी ही दूर पर जलाली में किस प्रकार अव्यवस्था थी और इब्नबतूता को अपनी जलाली की यात्रा में कितने कष्ट भोगने पड़े। यद्यपि डाक का प्रबन्ध बड़ा ही उचित था और बड़े ही द्रुतगामी समाचारवाहक राज्य के भिन्न भागों में फैले हुए थे। किन्तु फिर भी ग्रामों में अधिक शांति न थी। इब्नबतूता ने बड़े बड़े अधिकारियों के घूस लेने की चर्चा की है क्योंकि घूस के कारण उसे स्वयं कुछ समय कष्ट भोगने पड़े और उसका ऋण जिसकी अदायगी का सुलतान द्वारा आदेश हो चुका था, अदा न हो सका।

दरबार - इब्नबतूता सुलतान के दरबार से विशेष रूप से सम्बन्धित था। उसने दरबार की प्रत्येक वस्तु को बड़ी गहन दृष्टि से देखने तथा दरबार की प्रथाओं को समझने का विशेष रूप से प्रयत्न किया है। वह सुलतान के जुलूस में भी सम्मिलित होता रहता था। अतः उसने जो कुछ भी साधारण तथा विशेष अवसर पर होने वाले दरबारों और सुलतानों के जुलूसों के विषय में लिखा है। उसे मध्यकालीन भारतीय इतिहास का अमर अध्याय समझना चाहिये।

डाक प्रबन्ध - इब्नबतूता जब हिन्दुस्तान पहुंचा तो यह देखकर कि किस प्रकार

साधारण से साधारण बात सुलतान तक तेजी से पहुचाई जाती थी, बडा प्रभावित हुआ। उसने सुलतान के डाक की व्यवस्था का उल्लेख बडे विस्तार से किया है। उसने राज्य के गुप्तचरो का हाल भी लिखा है और एनुलमुल्क के विद्रोह के सम्बन्ध म बताया है कि किस प्रकार लोगो के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित बातें भी सुलतान के पास पहुच जाती थी और लोगो के अपराध किसी प्रकार छिपे नही रह सकते थे।

समकालीन राजनीतिक घटनायें - इब्नबतूता ने अपनी यात्रा के विवरण म देहली के पूववर्ती सुलतानो का इतिहास इस देश के विश्वसनीय लोगो से सुनकर लिखा है। उसके आने के पूव सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के राज्यकाल म जो घटनायें घटी थी, उनकी भी उसने बडी विस्तृत चर्चा की है। देहली के विनाश का उसने बडा ही मार्मिक ढग से उल्लेख किया है। बहाउद्दीन के विद्रोह तथा कम्पिला के राय का उसकी सहायता हेतु अपना सवस्व बलिदान कर देने का हाल तथा किश्लू खा के विद्रोह एव उसकी हत्या की चर्चा इब्नबतूता ने बडी विस्तृत रूप से की है। कराचिल की दुघटना, माबर तथा दक्षिण के अन्य विद्रोहो का हाल भी इब्नबतूता ने लिखा है। एनुलमुल्क के विद्रोह के समय वह स्वय उपस्थित था। उसके विवरण द्वारा पता चलता है कि किस प्रकार सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक युद्ध के समय अपने राज्य के हितैषियो से परामश किया करता था। विद्रोहो के अतिरिक्त उस समय के अकाल का हाल इब्नबतूता ने बडे विस्तृत रूप से दिया है।

सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक का चरित्र - इब्नबतूता ने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के चरित्र का गहन अध्ययन किया था। सुलतान द्वारा उसे विशेष प्रोत्साहन प्राप्त होता रहता था। सुलतान उस पर बडी कृपा दृष्टि रखता था। इब्नबतूता की यात्रा के विवरण से पता चलता है कि किस प्रकार सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक परदेसियो का सम्मान किया करता था और उन्हें अत्यधिक इनाम प्रदान करता रहता था। सुलतान जिस प्रकार योगियो म मिलता जुलता और योग सिद्धियो म रुची लेता, उसका भी उल्लेख इब्नबतूता ने किया है। सम्भवतया इसी आधार पर इसामी ने उसकी कटु आलोचना की है। इब्नबतूता मुहम्मद बिन तुगलक की न्यायप्रियता से बडा प्रभावित था। उसके यात्रा विवरण से पता चलता है कि न्याय के सम्बन्ध में सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक को अपने निकटतम सम्बन्धियो तथा उच्चपदाधिकारियो को भी कठोर दण्ड देने म कोई सकोच नही होता था। सुलतान की न्यायप्रियता के साथ-साथ जब इब्नबतूता उसके अत्यधिक अत्याचारो एव हत्याकाड को देखता था तो उसे बडा ही आश्चर्य होता था। जियाउद्दीन बरनी की तारीख ए फीरोजशाही के समान इब्नबतूता के

यात्रा विवरण से भी सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक का चरित्र एक जटिल समस्या बन गया है। दोनों ही उसके विरोधाभासी गुणों का स्पष्ट स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। इब्नबतूता की यात्रा के विवरण के द्वारा भी सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक की महत्वाकांक्षाओं पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

आलिम तथा सूफी - इब्नबतूता स्वयं एक धार्मिक व्यक्ति था। उसे अपने धर्म से बड़ा ही प्रेम था। उसने अपनी यात्रा के विवरण में जिन सूफी सन्तों से भेंट की, इनके विषय में भी उसने अपने पर्यटन लेख में चर्चा की है। वह देहली के समकालीन आलिमों के सम्पर्क में भी आया और उसने उनके विषय में भी अपनी यात्रा के विवरण में विभिन्न स्थानों पर लिखा है।

लोगों का रहन-सहन - इब्नबतूता ने भारतवर्ष के रीतिरिवाज लोगों के रहन सहन, तथा वेशभूषा का भी उल्लेख किया है। मुसलमानों के विवाह की भारतीय प्रथाओं का इब्नबतूता ने बड़ा ही विशद् विवरण दिया है। उसने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक की बहिन से अमीर सैफुद्दीन के विवाह का हाल बड़े विस्तार से लिखा है। वह अमीर सैफुद्दीन का घनिष्ट मित्र था। अतः उसे इस विवाह के सम्बन्ध में साधारण से साधारण बात का ज्ञान था। मुसलमानों में तत्कालीन मृतक क्रियाएं क्या क्या थी और उनका पालन किस प्रकार होता था यह सब इब्नबतूता को अपनी पुत्री के मृतक संस्कार के अवसर पर स्वयं देखने का मौका मिल गया था।

मनोरंजन तथा आमोद प्रमोद - इब्नबतूता भारतवर्ष के विभिन्न भागों में नाना प्रकार की दावतों तथा भोजों में सम्मिलित हुआ था। शाही भोजन का प्रबन्ध तथा साधारण भोजनों के नियम भी उसने विस्तार से लिखे हैं। भोजन तथा मिठाइयों के विस्तृत उल्लेख भी इब्नबतूता के यात्रा विवरण द्वारा प्राप्त हो जाते हैं। पान खाने का महत्व तथा उसकी विशेषता का उल्लेख भी इब्नबतूता ने किया है। भारतवर्ष के कुछ नगरों बाजारों तथा उनकी चहल पहल, सजावट, और तत्सम्बंधी अन्य बातों का उल्लेख इब्नबतूता के विवरण में पाया जाता है। सुलतान के अभियानों के उपरान्त राजधानी में लौटने के समय और विशेष अवसरों पर किस प्रकार मनोरंजन तथा नगर किस प्रकार सजाया जाता था इसका भी इब्नबतूता की यात्रा विवरण में बड़ा विशद् चित्रण हुआ है। सूफियों के सामने नृत्य एवं अन्य संगीतों तथा नृत्यों का हाल भी यात्रा विवरण से ज्ञात होता है। दौलताबाद के गायकों तथा गायिकाओं के बड़े बाजार का भी इब्नबतूता ने विवरण दिया है।

व्यापार - जब इब्नबतूता को राजदूत बनाकर चीन की ओर भेजा गया तो उसने विभिन्न स्थानों के व्यापारों का भी अध्ययन किया। भारतवर्ष के समुद्रीय

तट के बन्दरगाहों के व्यापार, नौकाओं, जहाजों तथा अन्य देशों के व्यापारियों से सम्पर्क का हाल भी इब्नबतूता ने बड़े विस्तार से दिया है। नारियल, काली मिर्च तथा बन्दरगाहों में उत्पन्न होने वाली अन्य वस्तुओं का भी उल्लेख इब्नबतूता ने किया है।

इब्नबतूता का चरित्र - इब्नबतूता को यात्रा से बड़ी रुचि थी। उसने संसार के बहुत बड़े भाग की यात्रा की और वह नाना प्रकार के लोगों के सम्पर्क में आ चुका था। प्रत्येक नई बात को गहन दृष्टि से देखने तथा गम्भीरतापूर्वक उस पर विचार करने की उसकी आदत सी पड़ गई थी। वह बड़ा ही जिज्ञासु प्रवृति का था। यदि उसमें यह गुण न होता तो सम्भवतया छोटी छोटी और साधारण बातों का ज्ञान जो हम उसकी यात्रा विवरण के द्वारा प्राप्त हो जाता है, न प्राप्त हो सकता। वह बड़ा स्पष्ट वक्ता था और अपने हृदय की किसी बात को छिपाना न जानता था। उसे अपनी त्रुटियों का भी स्पष्ट रूप से उल्लेख कर देने में किसी प्रकार की लज्जा का अनुभव न होता था। वह बड़ा अपव्ययी था। सुलतान द्वारा उसे जो कुछ भी प्राप्त होता, वह उसे शीघ्रातिशीघ्र उड़ा देता। ऋण लेना तो उसके स्वभाव का एक अंग बन गया था। सुलतान ने इस हेतु उसे एक बार चेतावनी भी दी। उसने अपनी यात्रा का विवरण बड़ी ईमानदारी से दिया है। यह सम्भव है कि पिछली घटनाओं के सम्बन्ध में जो कुछ उसे अपने सूत्रों से ज्ञात हुआ, उसका कुछ भाग निराधार हो। जिसे उसने बिना किसी निरीक्षण के स्वीकार कर लिया हो। किन्तु उस पर घटनाओं को तोड़ मरोड़ कर वर्णन करने का दोष नहीं लगाया जा सकता। जो बातें उसके अपने ज्ञान तथा स्वनिरीक्षण पर आधारित हैं। उनके विषय में तो यह कहा जा सकता है कि सम्भव है उसे समझने में भूल हुई हो किन्तु उसे झूठा सिद्ध करना कठिन है"[1]

निष्कर्ष - इब्नबतूता को एक अच्छे इतिहासकार का दर्जा प्राप्त है क्योंकि उसने स्वनिरीक्षण के आधार पर घटनाओं का वर्णन किया है। उसने अपने विवरण में घटनाओं की तिथियां बहुत कम दी हैं। फिर भी तुगलक वंश के इतिहास के लिये वह एक बहुत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत है।

1- रिजवी, एस ए ए - तुगलककालीन भारत, भाग (1) पृष्ठ द एवं घ



10 | यहिया बिन अहमद तारीख-ए-मुबारकशाही

इस ग्रन्थ में मुहम्मद गोरी के शासनकाल से सैय्यद वंश के तीसरे सुलतान मुहम्मद तक के शासनकाल का वर्णन मिलता है। सुलतान फीरोज और उसके उत्तराधिकारियों के इतिहास के सम्बन्ध मे यहिया बिन अहमद की यह रचना विशेष महत्वपूर्ण है। सैयद वंश के इतिहास की जानकारी का एकमात्र समकालीन ग्रन्थ यही है और बाद के निजामुद्दीन अहमद, बदायूँनी आदि इतिहासकारों ने भी सैयद वंश के इतिहास के लिये इसी ग्रन्थ को अपना आधार बनाया। लेखक का पिता अहमद और अहमद का पिता अब्दुल्ला सरहिन्दी था। सरहिन्द पहले सिहरिन्द कहलाता था और इसी नाम का उसने उपयोग किया है।[1] इसीलिये लेखक को यहिया बिन अहमद सिहरिन्दी कहते हैं।

यहिया ने अपने ग्रन्थ मे खुद के बारे मे कुछ नही लिखा है। श्री के० के० बासू ने "तारीख ए मुबारकशाही' का अंग्रेजी मे अनुवाद किया है। इसके प्राक्कथन लेखक सर जे० एन० सरकार ने लिखा है कि केवल यहिया शीआ मत का अनुयायी था जबकि अन्य इतिहासकार सुन्नी मत के अनुयायी थे। इसलिये उसका इतिहास काफी दिलचस्प हो गया है। हमे यह पता नही चलता कि सर जे० एन० सरकार को यह बात किस स्रोत से ज्ञात हुई है क्योकि न तो यहिया ने ऐसा संकेत अपने ग्रन्थ मे दिया है और न ही किसी बाद के इतिहासकार ने इस सम्बन्ध मे कुछ लिखा है।

यहिया ने अपने इतिहास की भूमिका मे मुहम्मद साहब की प्रशंसा के उपरान्त जिस प्रकार चारो खलीफाओ की प्रशंसा की है उससे पता चलता है कि वह शीआ नहीं था और सर जे० एन० सरकार का यह निष्कर्ष भ्रममात्र ही प्रतीत होता है।[2]

यहिया बिन अहमद ने अपनी कृति को सैयद वंश के शासक मुइज्जुद्दीन अबुल फतह मुबारकशाह (1421-1433 ई०) को समर्पित की। ऐसा प्रतीत

1– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 5

2– रिजवी एस ए ए - उत्तर तैमूरकालीन भारत, भाग (एक) पृष्ठ ■

होता है कि लेखक ने कुछ अन्य ग्रन्थों को आधार बनाकर ही अपनी कृति लिखी होगी परन्तु ये ग्रन्थ अब उपलब्ध नही होते हैं। यहिया ने गयासुद्दीन तुगलक के बारे म लिखा है कि वह दयालु, न्यायप्रिय, योग्य, बुद्धिमान बादशाह था। दिन मे पाचों बार नमाज जमाअत के साथ पढता था। सोने के समय की नमाज जब तक वह नही पढ लेता था, अन्त पुर मे नही जाता था।

यहिया ने लिखा है कि अमीरो, मलिकों, इमामों, सयदों, काजियों, आदि की सब सम्मति से गयासुद्दीन तुगलक का 26 अगस्त 1321 ई० को राज्याभिषेक हुआ। उसने अमीरो, और मलिको को पद, सम्मान, तथा अक्ताए प्रदान की। इसके अतिरिक्त अपने सम्बन्धियो को भी उच्च पद पर नियुक्त किया एव उपाधिया प्रदान की। इससे हमे गयासुद्दीन के तेलगाना जाजनगर एव लखनौती अभियान के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। यहिया बिन अहमद ने गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के बारे म लिखा है कि "जब वह अफगानपुर पहुचा जहा एक महल मे जो दरबारे आम के लिये शीघ्रतातिशीघ्र बनवाया गया था और गीला था, दरबार किया और आदेश दिया कि जो हाथी लखनौती के विध्वस के द्वारा प्राप्त हुए हैं उन्हें एक साथ दौडाया जाय। महल गीला था। पवत रूपी डीलडौल वाले हाथियो के दौडने के कारण महल हिल गया और गिर पडा। सुलतान गयासुद्दीन तुगलकशाह एक अन्य मनुष्य के साथ महल के नीचे दब गया और शहीद हो गया। यह घटना फरवरी माच 1325 ई० मे घटी।"

तारीख ए-मुबारकशाही से पता चलता है कि 1326-27 ई० म मुहम्मद बिन तुगलक ने देवगिरी की ओर प्रस्थान किया। इसके अतिरिक्त गर्शास्प बहराम आयबा, मलिक निजाम (कडा का सूबेदार) एनुलमुल्क एव तगी आदि के विद्रोह के बारे म जानकारी प्राप्त होती है। यहिया न मुहम्मद तुगलक की कर वृद्धि, राजधानी का दिल्ली से देवगिरी स्थानातरण सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन, एव कराचल पर आक्रमण आदि योजनाओ का विस्तृत वर्णन किया है। उसने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के बारे म लिखा कि 'जब उसके अत्यधिक अत्याचार के कारण उसके राज्य के काय तथा शासन प्रबन्ध मे विघ्न पड गया तो सुलतान इसी सोच म रुग्ण हो गया।' इसी वजह से उसकी 20 माच 1351 ई० मे मृत्यु हो गई।

यहिया बिन अहमद ने तैमूर के आक्रमण के पश्चात देहली सल्तनत की दुदशा का वणन करते हुए लिखा है कि "तैमूर के चले जाने के उपरात देहली के आसपास तथा उन समस्त स्थानो मे, जहा से होकर उसकी सेना गुजरी थी, महामारी तथा कुछ लोगो की भूखमरी के कारण मृत्यु हो गई। देहली दो मास

तक यही ही अव्यवस्थित तथा शोचनीय दशा में रही।"

तारीख ए मुबारकशाही में नुसरतशाह का राज्य प्राप्ति हेतु प्रयास महमूद का कन्नौज पर आक्रमण, तातार खां द्वारा नासिरुद्दीन महमूदशाह की उपाधि धारण करना, महमूद द्वारा देहली पर अधिकार मुबारकशाह का 20 मई 1421 ई० को राज्याभिषेक एवं उसकी विजयों के बारे में विस्तृत विवरण है।

डा० ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है कि "यहिया एक सजग इतिहासकार हैं, जिनकी शैली प्रतिरंजना और विशेषणों से मुक्त है। वह सीधे सादे ढंग से लिखता है। फीरोज तुगलक के राजत्व की घटनाओं का वर्णन करने के उपरान्त वह यह कहता है कि इसकी परवर्ती सामग्री उसके वैयक्तिक अनुभवों तथा विश्वसनीय व्यक्तियों द्वारा प्राप्त जानकारी पर आधारित है। तारीख ए मुबारकशाही केवल एक मौलिक समकालीन रचना है जो सैयद युग की जानकारी के लिये उपयोगी है। अन्य अनेक चीजों के लिये लेखक नई जानकारी प्रदान करता है। वह मुहम्मद तुगलक के राज्यकाल के विषय में कुछ तिथियाँ देता है जिससे यह ज्ञात होता है उसने बरनी की तारीख ए फीरोजशाही के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों का भी अवलोकन किया होगा। उसने घटनाओं का बड़ी ईमानदारी से वर्णन किया है और फीरोज की मृत्यु के उपरान्त होने वाले उपद्रवों के लिये उसका ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक है। उसने उस समय देश की शान्ति भंग करने वाले विद्रोहों का विस्तार से वर्णन किया है।[1]

डा० रिजवी ने तारीख ए मुबारकशाही का अनुवाद किया है। इलियट एवं डाउसन ने भारत का इतिहास चतुर्थ खण्ड में इसका अधिकांश अनुवाद किया है। गायकवाड़ ओरियंटल ग्रन्थमाला ने इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित कर दिया है। **निष्कर्ष** - यहिया बिन अहमद का ग्रन्थ ऐतिहासिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि फीरोज तुगलक के उत्तराधिकारियों और सैयद सुल्तानों के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला यह एक मात्र ग्रन्थ है। उसने घटनाओं का क्रमबद्ध रूप से वर्णन किया है।

शेख निजामुद्दीन औलिया ने गयासुद्दीन तुगलक का विरोध किया था।

1- डा० ईश्वरी प्रसाद - भारतीय मध्य युग का इतिहास पृष्ठ 28 - 29

इस घटना का सवप्रथम वणन यहिया ने अपने ग्रन्थ मे किया। बाद के इतिहासकारो ने उसी का अनुसरण किया है। उसने सुलतान मुहम्मद बिन तुगलक के समय घटित घटनाओ की तिथिया भी दी हैं।

यहिया बिन अहमद ने सैयद सुलतानो के उत्थान और पतन का विस्तृत विवरण दिया है। यदि यहिया का ग्रन्थ हमे उपलब्ध नही होता तो सम्भवत 1380 से 1434 ई० तक के इतिहास से हम वचित रह जाते और 55 वर्ष म घटित घटनायें अन्धकार के गभ म ही समायी रहती।

निजामुद्दीन और फरिश्ता ने यहिया बिन अहमद के विवरण को घटा बढाकर लिख दिया है। यद्यपि वह सैयद सुलतानो पर आश्रित था परन्तु उसने अपने ग्रन्थ मे उनकी अनावश्यक प्रशसा नही की है। इसके अतिरिक्त उसकी कृति म हमे निष्पक्षता के दशन होते हैं।



11 अहमद यादगार : तारीख-ए-सलातीन-ए-अफगानी

अहमद यादगार ने " तारीख ए-सलातीन ए अफगानी " म लिखा है कि वह सूर बादशाहो का प्राचीन सेवक था। उसकी कृति से पता चलता है कि उसका पिता बाबर के तीसरे पुत्र असकरी का वजीर था। अहमद यादगार ने तारीख-ए सलातीन ए अफगानी अथवा तारीख ए शाही की रचना अफगान शासक दाऊद बिन सुलेमानशाह के आदेशानुसार की। इस कृति का लेखन काय जहांगीर के राज्यकाल म पूरा हुआ। इसमे 1451 से 1554 ई० तक लगभग 103 वष तक का इतिहास है। इसमे सुलतान बहलोल लोदी, इब्राहिम लोदी, शेरशाह, इस्लामशाह, फीरोजशाह, आदिलशाह, इब्राहिम सूर, सिकन्दर शाह आदि शासकों की उपलब्धियो का विवरण है। इस प्रकार यह लोदी एव सूर वश के इतिहास जानने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

यद्यपि लखक का मुख्य उद्देश्य अफगान सुलतानों का इतिहास लिखना था परन्तु उसने बाबर, हुमायू तथा अकबर के शासनकाल की घटनाओ का वणन भी किया है। उसने अपनी कृति म बहुत सी अलौकिक घटनाओ का विवरण भी दिया है। कुछ घटनाएँ तो पूणत 'वाकेआते मुश्ताकी' से ली गई प्रतीत होती है। अहमद यादगार ने 'तारीखे निजामी' और 'मादेनुल अखबार' को आधार बनाकर अपनी कृति की रचना की है।

अहमद यादगार ने लिखा है कि सिकन्दर लोदी की कविता म रुचि थी। सुलतान इब्राहिम लोदी का अपने भाई जलालुद्दीन से विश्वासघात, उसके द्वारा ग्वालियर विजय, अमीरो के प्रति दमन की नीति इस्लाम खा के विद्रोह का दमन राणा सागा से युद्ध, हुसैन खा द्वारा राणा सागा से सधि एव आजम हुमायूँ को ग्वालियर म बुलाकर उसकी हत्या करवाना आदि घटनाओ का विवरण उसने अपनी कृति म दिया है। सुलतान बहलोल लोदी के शहजादे तथा अमीरो की नामावली भी तारीख ए सलातीन ए अफगानी मे दी हुई है।

ग्रन्थ के दोष –

इस ग्रन्थ के प्रमुख दोष निम्नलिखित हैं –

(1) इस ग्रन्थ म वर्णित घटनाएँ अधिक विश्वसनीय नही मानी जा सकती क्योंकि

लेखक ने सुनी सुनाई बातें अधिक लिखी हैं। उदाहरणार्थ - अहमद यादगार ने लिखा है कि शेरशाह और महारथ जमीदार के बीच हुए युद्ध का कारण श्याम सुंदर नामक हाथी था जबकि युद्ध का दूसरा ही कारण था। ऐसा मालुम होता है कि अहमद यादगार ने शेरशाह के शासनकाल की अनेक घटनाओं का वर्णन करने से पूर्व आवश्यक जांच पड़ताल नहीं की।

(2) उसने घटनाओं की तिथियां बहुत कम दी है।

इन दोषों के होते हुए भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उसने अपनी कृति में शेरशाह के कुछ छोटे छोटे अभियानों का वर्णन किया है जो अन्य किसी ग्रन्थ में उपलब्ध नहीं होते हैं। अहमद यादगार ने लिखा है कि मुहम्मद तुगलक की भांति शेरशाह ने भी तांबे की सांकेतिक मुद्रा चलाई थी, जो सफल हुई।

 

12 नियामत तुल्ला: मखजन-ए-अफगानी

ख्वाजा नियामत तुल्ला ने भी अफगान सुलतानों का इतिहास लिखा। अफगान शासकों का इतिहास जानने के लिये इसका ग्रन्थ काफी महत्वपूर्ण समझा जाता है। वह जहांगीर (1605-1627 ई०) के समय का प्रसिद्ध इतिहासकार था। "मखजन ए अफगानी और तारीख ए खानजहां लोदी (तारीख खानेजहानी) को प्रायः अलग अलग ग्रन्थ माना जाता है। किन्तु वास्तव में यह एक ही ग्रन्थ है। तारीख मे खानजहां लोदी (जहांगीर के बड़े प्रसिद्ध सरदारों में से एक) के संस्मरण भी हैं। इसी से इसका यह नाम पड़ा। इसमें जहांगीर का भी थोड़ा सा इतिहास है। किन्तु और सभी तरह से यह मखजन की ही आवृति मालूम पड़ती है।" [1]

नियामत तुल्ला जहांगीर के दरबार का वाकयानवीस था। उसने नवाब खानजहां लोदी की आज्ञा से 1018 हि० में यह ग्रन्थ लिखना प्रारम्भ किया। भारत में अफगानों का यह एक सामान्य इतिहास है जो सुलतान बहलोल लोदी के समय से आरम्भ होकर ख्वाजा उसमान की मृत्यु तक (1612 1613 ई०) की जानकारी देता है। जबकि अफगान सत्ता पूरी तरह समाप्त हो गई और उन्होंने जहांगीर को आत्मसमर्पण कर दिया। [2]

पुस्तक की भूमिका में उन ग्रन्थों की सूची दी गई हैं जिनकी सहायता से लेखक ने अपने इतिहास का संकलन किया। कुछ प्रमुख ग्रन्थों के नाम ये गिनाये हैं - *तारीखें तबरी तारीखें गुजि। तारीखें अससाफ अल खलायक,* मजमअल अ साब तारीखें निजामशाही अकबरनामा, तारीखें शेरशाही वाकियाते मुश्ताकी, तारीखें इब्राहिमशाही, तारीखें जहान्शाय जुवैनी मतलउल अनवार, मआदने अखबार, अहमदी नियामत तुल्ला ने पुस्तक को सात भागो मे लिखा है। प्रत्येक भाग का विषय इस प्रकार हैं [3]

1– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 58

2– निगम एस बी पी (डा०) - सूरवंश का इतिहास पृष्ठ 8 9

3– निगम एस बी पी (डा०) - सूरवंश का इतिहास पृष्ठ 8 9

भाग - 1, अफगानों का अरब में निवास और वहां से निष्कासन अफगानिस्तान में निवास।

भाग - 2, अफगानों के पूर्वज खालिद पुत्र वालिद का इतिहास।

भाग - 3, भारतवर्ष में लोदी सुल्तानों का इतिहास, बहलोल लोदी से इब्राहिम लोदी तक।

भाग - 4, शेरशाह सूर और उसके उत्तराधिकारियों का इतिहास।

भाग - 5, खानजहां लोदी और उसके पूर्वजों का इतिहास।

भाग - 6, अफगानों की जातियों का वर्णन।

भाग 7 नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीर का इतिहास 1605 ई० से 1613 ई० तक।

समाप्ति अफगान संतों का जीवन चरित्र जो भारतवर्ष में रहे।

मखजन ए अफगानी और तारीख ए खानजहां लोदी एक ही ग्रन्थ के दो नाम है। इलियट एवं डाउसन ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि 'शेरशाह के इतिहास के बारे में तारीख ए-खानजहां लोदी में उतना ही विस्तार है जितना मखजन-ए-अफगानी में। केवल ख्वास खां और हाजी खां की प्रशंसात्मक दो लम्बी कवितायें अधिक है और शेरशाह के कुछ नियम भी अधिक हैं। जो राज्य के अंत में लिखे गये हैं। इसमें वही क्रम है जो मखजन में है। किन्तु इसमें उससे अधिक अन्तर है और उसकी अपेक्षा निम्नस्तर का है। इस भाग में उसने तारीख ए शेरशाही अथवा, तारीखे निजामी, मासिर ए अकबर, और अकबर नामा से उद्धरण लिये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मानों लेखक को इस बात का निश्चय नहीं है कि वह किस ग्रन्थ का अनुसरण करें क्योंकि कई स्थल इसमें परस्पर विरोधी है। इस्लामशाह का इतिहास ठीक शाऊनी से मिलता जुलता है और मखजन से बिल्कुल नहीं मिलता। अदाली का राज्य ठीक मखजन जैसा है। शुजायल, बाजबहादुर ताज और इमाद किरानी के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा गया है वह भी ऐसा ही है। पूर्व में अफगान राज्य का अगला इतिहास और नीचे तक चला गया है और बंगाल के दाऊद और 1021 हि० तक का पूरा इतिहास दिया गया है। साधुओं के इतिहास का वही हाल नहीं है। यह भी लगभग अक्षरशः वही है, किन्तु कुछ जीवनीयां जैसे ख्वाजा याहिया कबू की जीवनी का विस्तार से वर्णन किया गया है। मखजन का कुछ भाग इसमें से निकाल दिया गया है और कुछ और बातें जो भद्दी और बचा जैसी है वे इसमें लिख दी गई हैं। डार्न ने डाक्टर लीज की प्रति से लेकर जो कुछ अपने नोटों में जोड़ा है लगभग वही मेरी प्रति में भी पाया जाता है। इससे स्पष्ट है कि दोनों एक ही हैं। दोनों में जहांगीर की जीवनी दी गई हैं।" [1]

1– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 58

अफगानों का इतिहास यद्यपि मुगलों के समय में लिखा गया तथापि इसका ऐतिहासिक महत्व कम नही है। शेरशाह का इतिहास विशेषकर "तबकात ए अफगरी और तारीखे शेरशाही के आधार पर लिखा गया है। नियामत उल्ला के इतिहास से हम पता चलता है कि राजा टोडरमल शेरशाह का एक विशेष अधिकारी था और उसी के निर्देशन में रोहतास पश्चिमी नामक दुर्ग का निर्माण किया गया। [1]

1– निगम, एस बी पी (डा०) - सूरवंश का इतिहास, पृष्ठ 10



13 अब्दुल्ला : तारीख-ए-दाऊदी

तारीखें दाऊदी के लेखक अब्दुल्ला के बारे मे बहुत कम सूचना प्राप्त है। "इस इतिहास मे तारीख नही है और लेखक ने अपने विषय मे कुछ नही लिखा है। परन्तु प्रसगवश उसने अपना नाम अब्दुल्ला लिखा है और सम्राट जहागीर के नाम का उल्लेख किया है। इसलिये यह पुस्तक इस सम्राट के राज्यारोहण के पश्चात लिखी गई होगी। यह राज्यारोहण 1605 ई० मे हुआ था।" [1]

अब्दुल्ला ने वाकियाते मुश्ताकी, तारीखे शेरशाही एव तबकाते अकबरी को आधार बनाकर अपना ग्रन्थ लिखा है। परन्तु सम्भव है कि लेखक ने दूसरे ग्रन्थो का भी सहारा लिया हो जो अब प्राप्त नहीं होते हैं। अब्दुल्ला ने अपनी कृति की भूमिका मे लिखा है कि "यह इतिहास उन राजाओ का वृतान्त है, जो मर चुके है। केवल वृतान्त ही नहीं है बल्कि यह एक प्रकार का विज्ञान है जो बुद्धि का विकास करता है और बिना लोगो के लिये उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस विनीत व्यक्ति ने अपने जीवन का बहुत बडा भाग उपदेशमय उदाहरणो से परिपूर्ण इतिहास के अध्याय मे व्यतीत किया है और बहुत से शासको के समय की परिस्थिति की जाच की है। अब उसको विदित हुआ कि हिन्दुस्तान के अफगान सुलतानो के राज्य का वृतान्त इधर उधर बिखरे हुए रूप मे मिलता है। और उस समय के राजवशो मे उनकी गणना है। अत मैंने विवश होकर सर्व शक्तिमान ईश्वर की सहायता से इन वृतान्तो को जिल्द मे एकत्र करने की योजना बनाई। मैंने कार्य करना शुरु किया और थोडे समय मे ही इसे पूर्ण कर लिया। मैंने बहलोल लोदी के शासन से जो अफगान राजवश का प्रथम सुलतान था, यह ग्रन्थ शुरु किया और मुहम्मद अली सूर तथा दाऊदशाह तक जो इस वश का अतिम शासक था लाकर समाप्त किया और इसका नाम "तारीख ए-दाऊदी रखा।" [2]

अब्दुल्ला ने अपनी कृति मे कही पर भी अपना नाम नही लिखा है। केवल एक घटना के सम्बन्ध मे अब्दुल्ला शब्द का उल्लेख है। जिससे यह माना

1– इलियट एव डाउसन भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 329
2– इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 329

जाता है कि इतिहासकार का नाम अब्दुल्ला रहा होगा। अब्दुल्ला ने यह देखा कि अफगान सुलतानों के बारे में लोग धीरे धीरे भूलते जा रहे है। इसलिए उसने अपने इतिहास की रचना की किन्तु "वाकेआते मुश्ताकी" के समान इसमें भी अलौकिक कहानियों की भरमार है। ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश कहानियाँ को संभवतया 'वाकेआते मुश्ताकी" से ही प्राप्त की गई है।[1]

अब्दुल्ला ने तिथियों के बारे में कई गलतियां की हैं। अफगान सुलतानों का इतिहास निजामुद्दीन अहमद ने तबकाते अकबरी में लिखा है उसे अधिक विश्वसनीय माना जा सकता है।

अब्दुल्ला ने अपना ग्रन्थ जहांगीर के समय में लिखना प्रारम्भ किया था। परन्तु लेखन का कार्य पूरा हो जाने पर उसने अपनी कृति बगाल के अन्तिम अफगान सुलतान दाऊद बिन सुलेमान शाह (1572-76 ई०) को समर्पित की थी।

अब्दुल्ला ने लिखा है कि 12 जून 1446 ई० को सुलतान बहलोल लोदी का राज्याभिषेक हुआ था और उसने सुलतान बहलोल लोदी, गाजी की उपाधि धारण की थी। वह (बहलोल लोदी) वीर, दानी, धर्मनिष्ठ और दयालु था। बहलोल लोदी शरा के नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करता था। अपना अधिकांश समय आलिमों और फकीरों के साथ बिताता था। वह न्याय भी स्वयं करता था। अब्दुल्ला ने बहलोल लोदी के बारे में लिखा है कि "सुलतान बहलोल न्यायकारी बुद्धिमान, कार्यकुशल किसी को हानि न पहुंचाने वाला, कृपालु, दयालु और प्रजा का पोषक था। धन सम्पत्ति तथा नये परगने जो कुछ, उसे प्राप्त होते वह उन्हें सेना में बांट देता था। कोई भी वस्तु अपने पास न रखता और खजाना एकत्र न करता था। वह बनावट से शून्य तथा बड़े सरल स्वभाव का बादशाह था।'

तारीखे दाऊदी से पता चलता है कि बहलोल लोदी अपने अमीरों के प्रति बहुत अच्छा व्यवहार करता था। यदि कोई अमीर उससे नाराज हो जाता तो वह स्वयं उसके पास जाता एवं अपनी तलवार कमर से खोलकर उसके सामने रख देता। इसके पश्चात वह उससे निवेदन करता कि "यदि आप हमें इस कार्य के योग्य नहीं समझते हो तो किसी अन्य को इस कार्य के लिये चुन लें और हमें कोई अन्य काम प्रदान कर दें।'

"बहलोल लोदी सभी अमीरों और सैनिकों के साथ बराबर व्यवहार करता था। यदि कोई अमीर बीमार हो जाता तो वह उसका आराम पूछने के लिये जाता

1— रिजवी, एस० ए० ए० — उत्तर तैमूरकालीन भारत भाग एक, पृष्ठ स०

था। अब्दुल्ला ने बहलोल लोदी के अमीरों और पुत्रों के नामों का उल्लेख किया है और सुलतान हुसैन और बहलोल लोदी के बीच हुए युद्धों का विवरण भी दिया है। इसमें कुछ विचित्र घटनाओं का भी वर्णन किया गया है जिनका ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कोई महत्व नहीं है।

अब्दुल्ला ने लिखा है कि सुलतान सिकन्दर का राज्याभिषेक 18 वर्ष की आयु में हुआ। उस समय उसने गाजी की उपाधि धारण की। उसने सिकन्दर के चरित्र के बारे में लिखा है कि "सुलतान सिकन्दर बड़ा प्रतापी, सहनशील, दानी तथा आदर सम्मान एवं गौरव वाला बादशाह था।

तारीखे दाऊदी से ज्ञात होता है कि सिकन्दर ने अपने राज्य के सभी प्रदेशों में मस्जिदों का निर्माण करवाया था। कृषि उन्नत अवस्था में थी। प्रजा सुखी तथा समृद्ध थी। लोग आराम से जीवन व्यतीत कर रहे थे। व्यापार उन्नत अवस्था में था। जो काफिर इस्लाम कबूल कर लेता था, उसे वह सम्मान दिया करता था और विद्रोह करने वालों को या तो मृत्यु दण्ड दे देता था या फिर राज्य से निर्वासित कर देता था। उसने इस्लाम धर्म का प्रसार किया। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये उसने काफिरों के समस्त मन्दिरों को खण्डन करवा दिया था और हिन्दुओं की मूर्तियां कसाईयों को दे दी ताकि वे उन्हें बाट बनाकर मांस तौलते समय उनका प्रयोग करें। उसने मथुरा में हिन्दुओं के दाढ़ी एवं सिर मुंडवाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। संक्षेप में उसने उनकी समस्त प्रथाओं को बन्द कर दिया।

इस प्रकार अब्दुल्ला ने सिकन्दर लोदी की धार्मिक नीति का अच्छा वर्णन किया है। उसने सिकन्दर की न्यायप्रियता एवं साम्राज्य की सम्पन्नता की काफी प्रशंसा की है। इसी प्रकार उसने सुलतान इब्राहीम के राज्याभिषेक, उसकी प्रारम्भिक कठिनाईयों, अमीरों का विद्रोह एवं इब्राहिम द्वारा उनका दमन, ग्वालियर पर अधिकार, आदि घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया है।

तारीखे दाऊदी से पता चलता है कि सुलतान इब्राहीम ने 8 वर्ष तथा कुछ महीने तक शासन किया। इब्राहीम लोदी की मृत्यु के साथ ही अफगान राज्य का कुछ समय के लिये अन्त हो गया। अफगान 74 वर्ष तक शासन करते रहे। (बहलोल लोदी से इब्राहीम लोदी तक) इसके पश्चात उनका अन्त हो गया।

तारीखे दाऊदी इसलिये महत्वपूर्ण स्थान रखती है क्योंकि "उसने

शाह से सम्बंधित अनेक घटनाओं और तथ्यों ऐसा का उल्लेख किया है, जो अन्यत्र नही मिलते।" [1]

ग्रन्थ के दोष

इस ग्रन्थ के प्रमुख दोष निम्नलिखित है –

(1) अब्दुल्ला ने घटनाओं का वर्णन क्रमबद्ध रूप से नही किया हैं।

(2) उसने घटनाओं की तिथियां बहुत कम दी है।

(3) उसने अपनी कृति में किस्से और कहानियां अधिक लिखे है।

इन कमियों के बावजूद भी उसकी कृति ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण स्थान रखती है क्योंकि इससे बहलोल लोदी से लेकर शाहशाह तक के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

1– निगम, एम बी पी (डा०) सूरवंश का इतिहास पृष्ठ 7

=*=

14 सीरत - ए - फीरोजशाही

सीरत ए फीरोजशाही रचना 1370 ई० म सुलतान फीरोजशाह तुगलक के समय म की गई थी। इस पुस्तक का लेखक कौन था, अभी तक पता नहीं चल सका हैं। दूसरे शब्दो म हम यह कह सकते हैं कि पुस्तक गुमनाम ह। पुस्तक को पढने से ऐसा प्रतीत होता ह कि लेखक ने घटनाओ का वणन व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर किया है। इससे यह स्पष्ट होता ह कि उसका शाही दरबार से निकटतम सम्पक था। सुलतान फीरोजशाह का उस सरक्षण प्राप्त था। अतः इस ग्रथ को एक विश्वसनीय सूचना का स्त्रोत माना जा सकता है।

ऐसा अनुमान किया जाता ह कि नायब लश्कर न इसकी रचना सुलतान फीरोजशाह के आदेश पर की थी। पुस्तक अलकारिक भाषा म लिखी हुई ह। इससे पता चलता है कि लेखक बहुत बडा विद्वान था। यह पुस्तक सरल आकषक और धारा प्रवाह पद्धति से लिखी हुई है। जिसे पढने से साहित्यिक आनन्द प्राप्त होता है। इसकी एक पाडुलिपि बाकीपुर पुस्तकालय म उपलब्ध है। पुस्तक के अत म एक पद्य लिखा हुआ है जिससे पता चलता है कि इस पुस्तक की रचना 1370 ई० म की गई थी।

इस पुस्तक म चार अध्याय ह — प्रथम अध्याय म फीरोजशाह के शासन काल की उपलब्धियों का वणन क्रमबद्ध रूप से किया गया ह। इसके प्रारम्भ म सुलतान के थाटटा म सिंहासनारोहण से लेकर सिंध अभियान तक की घटनाओ का विस्तृत वणन है। यह पुस्तक सुलतान फीरोजशाह के बगाल, सिंध, जाजनगर और नगरकोट के अभियानों पर अच्छा प्रकाश डालती है। इसके अतिरिक्त जाजनगर की सामाजिक एव आर्थिक स्थिति के बारे में अच्छा वणन किया गया है।

द्वितीय अध्याय मे सुलतान फीरोजशाह की उदार नीति का विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त इसमे जानवरो, पक्षियो एव उनकी आदतो का विस्तृत वणन है।

तृतीय अध्याय में फीरोजशाह की राजस्व नीति एव उसके द्वारा निर्मित भवनों का भी विवरण है। इसम सुलतान फीरोजशाह द्वारा निर्मित नहरों का भी उल्लेख किया गया है।

चतुथ अध्याय म विभिन्न हथियारो, गोलाबारूद एव ज्योतिष सम्बन्धी चार्टो का विवरण दिया गया है। इसमें उस समय युद्ध के काम आने वाले हथियारों का भी वर्णन है। यह पुस्तक उस युग की शिक्षा पर अच्छा प्रकाश डालती है।

मूल्याकन - इस पुस्तक से सुलतान फीरोजशाह तुगलक के शासन के प्रारम्भिक वर्षों के बारे मे अच्छी जानकारी प्राप्त होनी है। लेखक ने फीरोजशाह की उपलब्धियो का वर्णन करते हुए उसकी काफी प्रशसा की है।

इस पुस्तक से हमें उस युग की प्रशासनिक व्यवस्था एव सास्कृतिक जीवन के बारे मे अच्छी जानकारी प्राप्त होनी है। सक्षेप मे हम यह कह सकते हैं कि बरनी के इतिहास म जो कमिया थी, उसे इस पुस्तक ने पूरा कर दिया है।



15 | आइनुलमुल्क मुल्तानी : इन्शाये माहरु

आइनुल मुल्कमुल्तानी विद्वान व्यक्ति था। वह खिलजी वंश के शासकों के दरबार में उच्च पदों पर कार्य कर चुका था। परन्तु सुलतान फीरोजशाह तुगलक के समय वह वित्त मन्त्री था। शम्स सिराज अफीफ ने अपनी कृति तारीखे फीरोजशाही में आइनुलमुल्क मुल्तानी के पत्रों के सकलन का उल्लेख करते हुए उसकी बहुत प्रशंसा की है। उसने लिखा है कि 'आइनुलमुल्क मुल्तानी ने बहुत सी पुस्तकें मुहम्मदशाह तथा फीरोजशाह के राज्यकाल में लिखी। उनमें से एक तरस्सुले एनुलमुल्की है जो कि ससार में बडी प्रसिद्ध है। वह बहुत बड़ा विद्वान था। खेद है कि आइनुलमुल्क की अन्य रचनायें अब पूर्णत अप्राप्य है। इन्शाय माहरु की एक प्रति एशियाटिक सोसायटी बगाल के हस्तलिखित पुस्तकों सग्रहालय में मिलती है।'

सुलतान फीरोजशाह तुगलक ने अपने अमीरो दरबारियों, विद्वानो, अधिकारियो धार्मिक व्यक्तियों को जो पत्र लिखे थे, वे इस पुस्तक में हैं। इस पुस्तक में ऐसे पत्र 133 हैं। इन पत्रों का सकलन इसलिये किया जाता था ताकि पत्र लिखने की शैली के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके। मुगलकाल में इस प्रकार के सकलन बहुत बडी सख्या में हुए थे।

अधिकाश पत्र कवितामयी एव जटिल भाषा में लिखे हुए है। इन पत्रो की भूमिका में विभिन्न प्रकार के उदाहरण, धार्मिक कथाओं आत्मकथा, एव दर्शन शास्त्र सम्बधी समस्याओं का वर्णन इसलिय किया जाता था ताकि पत्र पढने वाला प्रभावित हो।

इन्शाये माहरु की पुस्तक से तुगलक वंश के शासकों के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है। इस दृष्टि से यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है। विशेष रुप से मुहम्मदबिन तुगलक और फीरोज तुगलक का इतिहास जानने के लिये महत्वपूर्ण ग्रथ है। इसमें अफगानपुर दुर्घटना में हुई गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु का अच्छा वर्णन किया गया है। यह पुस्तक फीरोजशाह तुगलक के शासन काल की कई ऐसी घटनाओं पर प्रकाश डालती है जिसका वर्णन अन्य समकालीन इतिहासकारों ने नही किया है। फीरोजशाह के कुछ सैनिक अभियानो के बारे में

तो केवल इसी पुस्तक से जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त इसमें संग्रहित पत्रों से फीरोजशाह के समय हुए मंगोल आक्रमणों के बारे में पता चलता है। अफीफ और सीरत ए फीरोजशाही दोनों में इसका वर्णन नहीं है। बरनी ने मंगोल आक्रमणों का विवरण बहुत संक्षिप्त रूप से दिया है। इसके अतिरिक्त फीरोजशाह के जाजनगर के अभियान के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

यह पुस्तक तुगलक काल की प्रशासनिक व्यवस्था पर अच्छा प्रकाश डालती है। इसके राजनीतिक और प्रशासकीय अधिकारियों के बीच सम्बधों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। ये पत्र उस समय की सामाजिक, आर्थिक और शासन प्रबन्ध आदि पर अच्छा प्रकाश डालते हैं।

इब्नबतूता के अनुसार सुलतान के आदेश के बावजूद भी बिना प्रयत्न किये हुए व्यक्ति को उसका धन प्राप्त नहीं होता था। आइनुलमुल्क मुल्तानी के पत्र इस बात की पुष्टि करते है। इब्नबतूता ने लिखा है कि उसे अपने भुगतान को प्राप्त करने के लिये घूस देनी पडती थी।

इस बात की पुष्टि आइनुल मुल्क के पत्रो से नही होती। परन्तु इन पत्रो से पता चलता है कि उसे देहली के अधिकारियो को किस प्रकार प्रभावित करना पडता था। ये पत्र उस समय के अधिकारियो के पारस्परिक सम्बन्धों पर भी प्रकाश डालते है। इस पुस्तक मे मत पत्रो को लिखे जाने की तिथिया नही दी हुई हैं।

समीक्षा

इंशाये माहरू ऐतिहासिक ग्रन्थ की अपेक्षा साहित्यिक ग्रन्थ अधिक है। आइनुल मुल्क मुल्तानी ने कई स्थानो पर अपने स्वामी सुलतान फीरोजशाह की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा की है। फिर भी यह ग्रन्थ तुगलक वंश का इतिहास और विशेष रूप से फीरोजशाह तुगलक के शासनकाल का इतिहास जानने के के लिये काफी महत्वपूर्ण है।

—※—

भाग (२)

मुगल काल के प्रमुख इतिहासकार

1 बाबर : बाबरनामा

बाबर की आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी "बाबरनामा" अथवा "बाबर संस्मरण आदि कई नामो से प्रसिद्ध है। यह एक बहुमूल्य ग्रन्थ है जिससे हम बाबर के जीवन तथा शासनकाल के बारे मे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इस ग्रन्थ के आधार पर बाबर को आत्मकथा लिखनेवालो का शिरोमणी माना गया है।

संसार मे बहुत ऐसे कम ग्रन्थ होंगे जिन्हे बाबरनामा अथवा तुजुक-ए-बाबरी के समान प्रसिद्धि प्राप्त हुई हो।[1] बाबरनामा से पता चलता है कि वह दिन भर अत्यधिक थका देने वाली यात्राओ के उपरात भी इसकी रचना किया करताया। ऐतिहासिक दृष्टि से बाबरनामा एक बहुमूल्य ग्रन्थ है। लेनपूल ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "तुजुक ए बाबरी" ही केवल एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमे दी गई सामग्री की पुष्टि के लिये अन्य प्रमाणो की विशेष आवश्यकता नही है।[2] इस आत्मकथा मे बाबर ने अपने शासनकाल से लेकर मृत्यु के पूर्व तक की घटनाओ का विवरण दिया है। यह पुस्तक बाबर के चरित्र, कार्यों और सफलताओं पर अच्छा प्रकाश डालती है। इससे 16वी शताब्दी के भारत की राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त मध्य एशिया के सम्बन्ध मे भी बहुत महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। डेनिसन रॉस ने इस बारे मे लिखा है कि "बाबर के "आत्म संस्मरण" को सभी समयों के साहित्य में सर्वाधिक सम्मोहनकारी और रोमांटिक रचनाओं मे स्थान दिया जाना चाहिये।[3]

बाबर ने बाबरनामा मे सत्य के महत्व का विशेष रूप से महत्व दिया है। उसने लिखा है कि "इस इतिहास में मैं इस बात पर दृढ रहा हू कि हर बात जो लिखू, और जो घटना जिस प्रकार घटी हो, उसका ठीक ठीक उसी प्रकार उल्लेख करु। इस कारण यह आवश्यक हो गया कि जो कुछ अच्छा बुरा ज्ञात हुआ, उसे लिख दू।

1– रिजवी, एस ए ए - बाबरनामा, पृष्ठ 9 (हिन्दुस्तान के मध्यकालों में बाबरनामा "वाकेयात बाबरी" के नाम से प्रसिद्ध रहा था।

2– लेनपुल - बाबर, पृष्ठ 13

3– डेनिसन रोस - चेप्टर आन बाबरइन "दी केम्ब्रीज हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग (4) 1971 पृष्ठ 120

बाबर ने इस बात का पूर्ण रूप से पालन किया है। बाबरनामा के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उसने किसी भी घटना को छिपाने का या उस पर पर्दा डालने का प्रयास नहीं किया है। इलियट एवं डाउसन ने बाबरनामा के ऐतिहासिक एवं साहित्यिक महत्व के बारे में लिखा है कि, 'बाबर की आत्मजीवनी सच्चाई के साथ लिखी हुई है और उत्तम वर्तमान आत्म जीवनियों में से एक है। यह तैमूर की आत्मजीवनी से, जो मिथ्याचार से भरी हुई है, कहीं अच्छा है। यह जहांगीर के आडम्बरमय आत्मवृत्तान्त से भी बढ़कर है और "एकमर्पाडिसन आफ जेनोफन" से किसी भी बात में घटिया नहीं है। यह सीजर की आत्मजीवनी से कुछ कम दर्जे की है। ये दोनों साम्यी में बराबर हैं। परन्तु उस प्रसिद्ध ग्रंथ की अपेक्षा इसमें ध्वनी अनुभूति कम होती है। सम्राट जहांगीर ने लिखा है कि इस ग्रंथ में उसने तुर्की भाषा में कुछ परिच्छेद बढ़ाये हैं। इसी भाषा में अब्दुल हाफिज ने जब वह सन् 1609 में उससे आगरे में मिला था तो बातचीत की थी।' [1]

पुनश्च "वर्तमान लोग इस बात पर सहमत हैं कि काबुल और उसके आसपास के प्रदेश का तथा फरगना का और हिन्दूकुश के उत्तर के देशों का जो वर्णन उसने लिखा है उससे बढ़कर सच्चा और व्यापकता की दृष्टि से कोई दूसरा वर्णन नहीं है। "परन्तु उसका लिखा हुआ सबसे महत्वपूर्ण विवरण जो हमको प्राप्त हुआ है, हिन्दुस्तान का है।" [2]

खेद है कि उसके 47 वर्ष तथा 10 मास के जीवनकाल में से लगभग 18 वर्ष का ही विवरण मिलता है और वह भी बीच बीच में अधूरा है।

बाबर की हस्तलिखित पोथी

'सम्भवतः बाबर ने दो पोथियां तैयार की होंगी। पहली पोथी दैनंदिनी के रूप में रही होगी जिसमें वह दैनिक घटनाओं का वृत्तान्त उसी रात में अथवा शीघ्र ही जब उसे अवसर मिलता होगा, लिखता जाता होगा। तदुपरान्त उसने दैनन्दिनी के प्रारम्भिक भाग में उचित संशोधन करके, प्रत्येक वर्ष का विवरण लेखों के रूप में लिखना प्रारम्भ कर दिया होगा। इस प्रकार उसके ग्रंथ की कम से कम दो पोथियां रही होंगी। अब इन दोनों पोथियों का पता नहीं, (ए एस बेवरीज) शायद ये दोनों पोथियां नष्ट हो चुकी हैं और अब उनके मिलने की कोई सम्भावना नहीं है।

1– इलियट एवं डाउसन भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 165,

2– इलियट एवं डाउसन-भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 166-67

बाबरनामा की भाषा और शैली -

बाबर जो भाषा बोलता था और जिस भाषा में उसने बाबरनामा की रचना की वह चगताई तुर्की है। भाषा में फारसी तथा अरबी के शब्द बहुत बड़ी संख्या में मूल रूप में ले लिये गये हैं।"[1] शब्द सरल और प्रभावशाली हैं तथा वाक्य स्पष्ट है। बाबर इन बातों को लेखनकला का बहुत बड़ा गुण समझता था इसलिये हुमायूँ के पत्रों की आलोचना करते हुए उसने लिखा था कि "तेरे पत्रों के अस्पष्ट होने का कारण यह है कि वे जटिल होते हैं। भविष्य में तू उन्हें जटिल बनाये बिना लिख और सरल और स्पष्ट शब्दों का प्रयोग कर। इस प्रकार तेरे और तेरे पत्र पढ़ने वालों के कष्ट में कमी हो जायगी।'[2]

बाबरनामा के पृष्ठ नष्ट होने के कारण

बाबर कभी किसी अभियान हेतु, कभी आक्रमण हेतु एवं कभी सैर करने के लिये हमेशा एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा किया करता था। ऐसे समय में भी वह लिखने पढ़ने की सामग्री अपने साथ रखता था। यद्यपि वह इन यात्राओं के समय काफी सावधानी बरतता था फिर भी यदि कोई पृष्ठ नष्ट हो जाए तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। इसके अतिरिक्त 1512 ई० में हिसार के समय उसका पूरा शिविर नष्ट हो गया था। परन्तु इस समय बाबरनामा के पृष्ठ नष्ट हुए या नहीं यह कहना कठिन है। लेकिन 25 मई 1529 ई० में तुफान के समय का वर्णन करते हुए बाबर ने लिखा है कि इस समय उसकी पाण्डुलिपि को काफी हानि पहुँची थी। सम्भवतः इस अवसर पर जो क्षति पहुँची होगी उसकी उसने पूर्ति भी कर ली होगी।

बाबरनामा के अनुवाद -[3]

बाबरनामा के फारसी अंग्रेजी एवं हिन्दी भाषा में अनुवाद हो चुके हैं।

(1) फारसीभाषा मे अनुवाद

(i) बाबरनामा का सर्वप्रथम फारसी भाषा में अनुवाद शेख जैन वफाई ख्वाफी ने किया था जो कि बाबर का सद्र था। उसने बाबरनामा के केवल हिन्दुस्तान से सम्बन्धित भाग का अनुवाद किया था।

(ii) बाबरनामा का दूसरा फारसी अनुवाद मिर्जा पायदा हसन गजनवी ने किया था।

1– रिजवी, एस ए ए - बाबरनामा, पृष्ठ 15,

2– बाबरनामा, पृष्ठ 289, रिजवी, वही पृष्ठ 15

3– रिजवी एस ए ए बाबरनामा पृष्ठ 18-20

(ii) सबसे प्रसिद्ध फारसी अनुवाद अब्दुर्रहिम खाने खाना का है। जिसने अबुल फजल के अकबरनामा के लिये अकबर के आदेशानुसार अनुवाद कार्य प्रारम्भ कर दिया और इसे पूरा करके नवम्बर 1589 ई० अन्तिम सप्ताह में अकबर को काबुल में ले जाकर समर्पित किया।

(2) अकबरनामा के अंग्रेजी और हिन्दी अनुवाद -

(i) विलियम असकिन ने बाबरनामा के फारसी अनुवाद का अंग्रेजी में भाषांतर किया।

(ii) ले ईडन ने तुर्की भाषा में लिखी हुई तुजुक-ए-बाबरी का अंग्रेजी में भाषांतर किया।

(iii) मिसेज बेवरीज ने बाबरनामा की तुर्की भाषा में लिपिबद्ध हस्तलिखित पोथी का अंग्रेजी में भाषांतर किया। अत यह अधिक प्रामाणिक माना जाता है।

(iv) डा० मथुरालाल शर्मा ने तुजुक-ए-बाबरी का हिन्दी में संक्षिप्त रूप से अनुवाद किया है।

ईश्वर में अटूट विश्वास - बाबरनामा से पता चलता है कि बाबर का ईश्वर में अटूट विश्वास था। उसने बाबरनामा में कई ऐसे उदाहरण दिये हैं जिससे इस बात की पुष्टि होती है। अपने सिंहासनारोहण के बाद की प्रथम घटना का वर्णन करते हुए उसने लिखा है कि "पवित्र तथा महान् ईश्वर अपनी पूर्ण शक्ति से बिना किसी मनुष्य के अहसान के मेरे समस्त कार्य उचित रूप से सम्पन्न कराता आ रहा है। यदि समस्त संसार की तलवारें चले तो भी एक नस तक नहीं कट सकती यदि ईश्वर की इच्छा न हो।"

ईश्वर में दृढ़ आस्था के कारण वह कभी दुखी नहीं होता था। कई बार उसे शत्रुओं की ऐसी सेना से युद्ध करना पड़ा जिसकी सेना की संख्या उसकी सेना से कहीं अधिक थी। परन्तु उसने ईश्वर पर विश्वास कर युद्ध में भाग लिया। 1507-08 ई० में कंधार के युद्ध में मुकीम के विरुद्ध प्रस्थान करते समय उसने इसी विश्वास का प्रदर्शन किया था। बाबरनामा में उसने लिखा है कि "चाहे थोड़े हों, चाहे बहुत, शक्ति देने वाला ईश्वर है। उसके दरबार में किसी की कोई शक्ति नहीं।"

सुलतान इब्राहीम लोदी की पराजय के बारे में उसने लिखा है कि "इस सौभाग्य को न तो हम अपनी शक्ति एवं बल और न अपने परिश्रम तथा साहस का परिणाम समझते हैं अपितु इसे ईश्वर की महान् दया एवं अनुकम्पा मानते हैं।"

बाबर का चरित्र - बाबरनामा के अध्ययन से बाबर के चरित्र पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। बाबर ने अपनी भूलो और दोषों का अपनी कृति में खुलकर वर्णन किया है। उसने यथासम्भव अपनी गलती को छिपाने का प्रयास नही किया है। सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात उसे काफी कठिनाईयो का सामना करना पड़ा। परन्तु उसने धैर्य नहीं खोया और सफलतापूर्वक उनका सामना किया। उसने लिखा है कि "क्योंकि मुझे राज्य पर अधिकार करने तथा बादशाह बनने की आकांक्षा थी। अतः मैं एक या दो बार की असफलता से निराश होकर बैठा नही रह सकता था।"

हिरात से काबुल लौटते समय पर्वतीय यात्रा मे बाबर को भयंकर कष्ट उठाने पड़े। उसने लिखा है कि "भाग्य का कोई ऐसा कष्ट अथवा हानि नही है जिसे मैंने न भोगा हो, इस टूटे हृदय ने सभी को सहन किया है। हाय कोई ऐसा कष्ट जिसे मैंने न भोगा हो।"

'किन्तु वह किसी भी कठिनाई के समय हताश नही हुआ। इसके साथ ही साथ उसे अपने मित्रों का इतना अधिक ध्यान था कि उसने उनसे पृथक होकर अपने लिये किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचना स्वीकार नही किया। इसी यात्रा मे जब उससे आग्रह किया गया कि वह बरफ से बचने के लिये गुफा मे प्रविष्ट हो जाय तो उसने सोचा कि जब उसके कुछ आदमी बरफ तथा तूफान मे फसे हुए है तो यह कैसे हो सकता है कि वह उस गरम स्थान में शरण ले। जो कुछ कष्ट अथवा कठिनाई होगी उसका वह मुकाबला करेगा। इस अवसर पर फारसी की एक लोकोक्ति ने कि 'मित्रों के साथ मरना ईद के समान होता है' "उसके साहस को और भी बढा दिया।" बाबरनामा

बाबर का सरल स्वभाव था। यद्यपि वह बादशाह था परन्तु कई बार तो वह अपने मित्रो के घर पर रात्रि व्यतीत कर देता था। इतना ही नहीं कई कई बार वह नागरिकों के घरों में भी सो जाता था। उसे 12 वर्ष की आयु से ही भयंकर कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था। परन्तु उसने हर समय साहस और वीरता का परिचय दिया। जब वह अपने साथियों के साथ तुर्कमान हजारा से मुकाबला करने के लिये रवाना हुआ तो उसने बिना कवच पहने हुए नेतृत्व किया। उसने लिखा है कि "हमारे ऊपर से बाण उड़ उड़ कर जाने लगे।

युसुफ अहमन" चिंता प्रकट करते हुए प्रत्येक से कहता था कि तुम लोग इस प्रकार नगे ही जा रहे हो, हमने दो बाणो को तुमारे सिर पर से गुजरते हुए देखा है। मैंने कहा चिंता मत करो। ऐसे बहुत से बाण मेरे सिर से गुजर चुके हैं।"

बाबर तैरने की कला म प्रवीण था। उसने केवल 33 हाथ मारकर गगा न ी को पार कर लिया था। विजय प्राप्त करने के बाद वह शत्रुओं के प्रति उदारतापूर्वक व्यवहार करता था। बाबर ने इब्राहिम को पराजित करने के पश्चात उसकी माता के प्रति अच्छा व्यवहार किया था। जब इब्राहिम की माता ने धोखे से बाबर को विष पिलवा दिया तभी उसने इब्राहिम के परिवारवालों के के साथ कठोरतापूर्ण व्यवहार किया था।

निरीक्षण की अद्भुत क्षमता - बाबर मे निरीक्षण एव जिज्ञासा की अद्भुत क्षमता थी। उसने भारत तथा काबुल के पशु-पक्षी एव वनस्पति आदि का जिस ढग से वर्णन किया है उससे इस बात की पुष्टि हो जाती है कि उसमें निरीक्षण शक्ति की अद्भुत क्षमता थी।

वह प्रत्येक वस्तु का बारीकी से निरीक्षण करता था। उसने झेलम नदी पार करने के पश्चात 11 मार्च 1519 ई० को एक कुए पर रहट देखा। जिसमे बाल्टिया लगी हुई थी। जिनके माध्यम से पानी कुए से बाहर निकाला जा रहा था। बाबर ने कुए से पानी निकलवाकर पानी निकालने की विधि के बारे मे कई प्रश्न किये तथा बार बार पानी निकलवाया। बाबर को जो बात उचित नही लगती थी, उसे वह स्वीकार नही करता था।

प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन - बाबर ने भारत के घास के मैदानों पर्वतो वृक्षो के सौन्दर्य एव प्रकृति का सजीव वर्णन किया है सेब के एक छोटे से वृक्ष ने शरद ऋतु मे बहुत सुन्दर रुप धारण कर लिया था। उस सम्बन्ध मे बाबर ने लिखा है कि "वह वृक्ष इतना सुन्दर बन गया था कि यदि कोई चित्रकार उसका चित्र बनाना चाहता तो भी सम्भव नही था।'

महत्वपूर्ण व्यक्तियो के चरित्रों का अध्ययन -

बाबर ने अपने अमीरों एव महत्वपूर्ण व्यक्तियों का सक्षिप्त एव सजीव वर्णन किया है जिससे हम उन व्यक्तियों की जीवनियो एव चरित्र के बारे म महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। उसने उनके रुप रग, वेश भूषा आचार व्यवहार गुण अवगुण का अच्छा वर्णन किया है। बाबर का वर्णन इतना सक्षिप्त एव सजीव है कि पाठक जब बाबरनामा पढता है तो उसे यह महसूस होने लगता है कि जैसे यह घटनायें उसके सामने घटित हो रही हों।

समालोचनायें - बाबर ने अपने समय के कवियों तथा साहित्य कारो की चर्चा की है एव उनकी कृतियो पर विचार व्यक्त किये हैं। मौलाना अब्दुरहमान जामी उसका समकालीन फारसी कवि तथा प्रसिद्ध साहित्यकार था। उसके बारे मे उसने केवल 4-5 वाक्य लिखें है। जिनसे उसकी ऐतिहासिक कृति का महत्व स्पष्ट हो जाता हैं। अली शेर नवाई तुर्की साहित्य के लिये प्रसिद्ध था। बाबर ने उसकी कृतियो पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उसकी भूरी भूरी प्रशसा की है। सुलतान मेहमूद मिर्जा उस समय का प्रसिद्ध कवि था। बाबर ने उसकी कविताओ के बारे मे लिखा है कि "उसने एक दीवान की रचना कर ली थी, किन्तु उसके शेरो म कोई रस न था। इस प्रकार की कविता से कविता न करना अच्छा होता है।"

बाबर का हिन्दुस्तान वर्णन

बाबर के हिन्दुस्तान पर आक्रमण के कारण -

जब बाबर का काबुल पर अधिकार हो गया तो उसके सामने प्रमुख समस्या यह थी कि उसके साथ काबुल आने वाले कबीलो तथा जरयो के जीवन निर्वाह की व्यवस्था किस प्रकार से की जाय। उसने लिखा है कि "काबुल एक छोटा सा देश है यह तलवार का देश है, लेखनी का नही है। यहा से इतने सब कबीलों वालो के लिये धन प्राप्त करना असम्भव था। अत यह उचित ज्ञात हुआ कि इन कबीलो के परिवार वालो के लिये खाद्य सामग्री प्राप्त कर ली जायें। तदुपरात वे सुगमता से सेना के साथ इधर उधर धावों पर जा सकेंगे।"

बाबर तैमूर का उत्तराधिकारी होने के कारण हिन्दुस्तान के पश्चिमी भाग पर अपना वैधानिक अधिकार मानता था। उसने लिखा है कि "क्योकि मेरी हार्दिक इच्छा सदा हिन्दुस्तान पर अधिकार जमाने की ही रही है और यह विभिन्न देश भीरा, खुशआब, चीनाव तथा चीनीउत किसी समय तुर्को के अधिन रह चुके हैं। अत मैं उन्हें अपना ही समझता था और उन्हें शातिपूर्वक और चाहे युद्ध करके, जिस प्रकार भी सम्भव होता अपने अधिकार मे करना निश्चय कर लिया था। इन कारणों से इन पहाडियों के प्रति सदव्यवहार परम आवश्यक था। अत यह आदेश दिया गया कि ईन लोगों के गल्लों तथा मवेशियों को किसी प्रकार की कोई हानि नहीं पहुचाई जाय। यहा तक कि इनके सूत के एक टुकडे तथा टूटी हुई सुई को भी कोई हानि नहीं पहुचाई जाय।

24 फरवरी, 1519 ई० बाबर के कुछ सैनिक भीरा के निवासियों को

लूट रहे थे जब इस बात का पता चला तो उसे उसने कुछ और सैनिकों को भीरा जाने का आदेश दिया और उनसे कहा कि वे उनम से कुछ की हत्या कर दें तथा कुछ के नाक कान कटवाकर उन्हे शिविरों के चारो ओर घुमवायें।

हिन्दुस्तान पर विजय करने के बाद जो लोग काबुल जाना चाहते थे बाबर ने उनको जाने से रोका और उनसे कहा कि "राज्य एव विजय बिना साधन तथा अस्त्र शस्त्र के सम्भव नही। बादशाही तथा शासन बिना सेवकों तथा अधीनस्थ राज्य के प्राप्त नही हो सकते। कई वर्षो के संघर्ष, कठिनाईयों, लम्बी चौडी यात्रा अपने आप तथा अपनी सेना को रणक्षेत्र में झोंककर एव घोर युद्ध के उपरात हमने ईश्वर की कृपा से शत्रुओं की इतनी बडी संख्या को इस आशय से पराजित किया कि ऐसे विस्तृत प्रदेशो तथा राज्यों को अपने अधिकार म कर लें। अब आज क्या हो गया है, और कौन सी ऐसी विपत्ति आ गई है कि उस देश को जिसे प्राणो की बाजी लगाकर विजय किया है अकारण छोडकर चले जायें। क्या हमारे भाग्य म यही लिखा है कि हम सर्वदा काबुल मे, दरिद्रता एव कष्ट भोगते रहें। अब आज से मेरे किसी हितैषी को ऐसी बात न करनी चाहिये किन्तु जिस किसी मे शक्ति नही है और उसने जाना निश्चित कर लिया है तो उसे फिर रुकना नही चाहिये"। सम्भवत उसके सहायक भी उसके आक्रमणो को केवल लूटमार एव धन एकत्र करने का साधन समझते थे। किन्तु उसने हिन्दुस्तान पर राज्य करना निश्चय कर लिया था उसे सुलतान महमूद गजनवी जैसे बादशाह पर आश्चर्य होता था, जो हिन्दुस्तान तथा खुरासान को विजय करने के बाद भी गजनी को ही अपनी राजधानी बनाये रहे।

बाबर मे नेतृत्व की अद्भुत क्षमता

बाबर म नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी। हिन्दुस्तान की विजय म उसने मार्ग समर्थन एव योग्य नेतृत्व की योग्यता को भली भाति प्रदर्शित किया था।

बाबर ने 1507-08 ई० म पाच हजार घुडसवारो को साथ कर अपने योग्य नेतृत्व का परिचय दिया था। उसने अरबो और तुर्कों की सैन्य सचालन की विधि को ध्यान पूर्वक देखा और भविष्य मे उसका प्रयोग किया। सेना के प्रस्थान के समय वह बहुत सावधानी बरतता था। उसने सियालकोट से लाहौर की यात्रा के समय सतर्कता का परिचय दिया। इस समय सोच समझकर ही वह आगे बढता था। बाबर म कुशल सैनिक तथा योग्य सेनानायक के गुण मौजूद थे। अत वह अन्य सैनिकों की कठिनाईयो को आसानी से समझ जाता था।

पानीपत के युद्ध का वर्णन करते हुए बाबर ने लिखा है कि सेना वालों

म से कुछ लोग बड़े भयभीत तथा चिंतित थे। भय तथा चिंता का कोई कारण नहीं था। ईश्वर ने जो कुछ भाग्य में आदिकाल से लिख दिया है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। यद्यपि ठीक बात तो यही है। किन्तु भय एवं चिंता के कारण कि जो लोग भयभीत एवं चिन्तित थे वे अपने घरों से 2-3 मास की यात्रा की दूरी पर पड़े हुए थे। हमारा मुकाबला एक अपरिचित कौम एवं लोगों से था न तो हम उनकी भाषा समझते थे और न वे हमारी। उसने हिन्दुस्तान के अफगानों की शक्ति एवं उनके सैन्य सचालन की योग्यता को भली भांति समझ लिया था। उसे हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिये अफगानों की ही कमजोरी ने ही प्रोत्साहन दिया। बाद में भी उसने आलम खां तथा इब्राहिम के युद्ध का वृतान्त देने वालों से अफगानों की शक्तियों एवं सैन्य सचालन की योग्यता का भली भांति अनुमान लगा लिया होगा।

पानीपत के युद्ध के पूर्व ही बाबर ने ख्वाजा मुहम्मद सारबान से कहा था कि "इब्राहीम की उजबेगों से तुलना करना उचित नहीं है क्योंकि इब्राहिम ने अभी तक अनुशासनबद्ध होकर युद्ध नहीं लड़ा है।

बाबर ने खानवा के युद्ध में अपनी सैन्य सचालन की अद्भुत योग्यता का परिचय दिया था। बाबर का जिन अफगानों पर विश्वास नहीं था उन्हें उसने दूर दूर भागों में भेज दिया। केवल विश्वासपात्र अफगानों को ही अपने पास में रखा। सैनिकों में आतंक छा जाने पर भी बाबर निराश नहीं हुआ। उसने साहस का परिचय देते हुए सेना में आशा का सचार किया। उसने खानवा युद्ध के पूर्व मदिरा पान का त्याग, मुसलमानों को तमगा कर से मुक्त करना एवं रण क्षेत्र से न भागने की शपथ अपने सैनिकों को दिलाकर अपनी दूरदर्शिता एवं योग्य सेनानायक के गुणों का परिचय दिया।

तोपखाना - बाबर के पास कुशल तोपखाना एवं बन्दूकें थीं। जिन पर उन्हें पूरा भरोसा एवं विश्वास था। बाबरनामा के अनुसार बाबर ने बन्दूक का सर्व प्रथम प्रयोग 6, जनवरी, 1519 ई० में किया था।

बाबर ने अपने तोपखाने एवं बन्दूकों की सहायता से पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहीम की एक लाख सेना को कुछ ही घण्टों में तहस-नहस कर दिया। इस युद्ध में गाड़ियों को कच्ची खाल की रस्सियों से जोड़ दिया गया था। इब्राहीम के युद्ध में उस्ताद अली कुली ने अपनी कुशलता का पूर्ण परिचय दिया था।

बाबर जानता था कि तोपखाने की उन्नती से ही वह निरन्तर विजयें

प्राप्त कर सकता है। इसलिये इस सम्बन्ध में रोज नये प्रयोग होते रहते थे। बाबर ने बयाना पर अधिकार करने के लिये उस्ताद अलीकुली को एक बड़ी तोप ढालने का आदेश दिया। उसने 22 अक्टोबर 1526 ई० को नई तोप तयार की परन्तु यह बाबर के उद्देश्य को पूरा नही कर सकी। अत अलीकुली खा ने आत्म हत्या करने का निश्चय किया। परन्तु बाबर ने उसको प्रोत्साहन देने के लिये खिलअत प्रदान की और इस प्रकार उसे इस झेंप से मुक्ति दिलाई।

बाबरनामा से बाबर की राजनीति पर प्रकाश

बाबरनामा से बाबर के राजनीतिक विचारो के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। बाबर का मानना था कि व्यवहार मे अच्छे नियमों का सभी को पालन करना चाहिये, चाहे उन्हे किसी ने भी बनाया हो। बाबर समस्त मुख्य अभियानो से पूर्व परामर्श के लिये बैठक बुलाता था और लोगों के परामर्श को ध्यानपूर्वक सुनता था। काबुल विजय करने से पहले उसे शासन प्रबन्ध का अधिक अनुभव नही था।

बाबर ने लिखा है कि "हम लोगो उस समय फसल तथा उत्पत्ति का कोई कोई ज्ञान नही था और यह मालगुजारी अधिक थी। इस कारण देश को अत्य धिक हानि उठानी पड़ी। वह जिस प्रदेश के लोगो को विजय करता वहा के स्थानीय शासन प्रबन्ध को प्रथाओ का पालन करना प्रारम्भ कर देता था।

बाबर का यह मानना था कि कर वसूल करते समय किसी प्रकार का अत्याचार नही करना चाहिये। अधिनता स्वीकार करने वाले के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये जैसा कि मेहमान के साथ किया जाता है। परन्तु अधि नता स्वीकार नही करने वालों का शक्ति के द्वारा दमन करना चाहिये। बाबर का व्यवहार व्यापारियों के प्रति सहानुभूति का था। वह उन्हे किसी प्रकार का नुकसान पहुंचाने के पक्ष म नही था।

पानीपत के युद्ध से पूर्व एव उसके पश्चात बाबर को जो कुछ भी धन सम्पति प्राप्त हुई थी, उसका अधिकाश भाग उसने अपने सैनिकों मे बाट दिया था। आगर के खजाने को भी उसन लोगो म बाट दिया और काबुल तक भेंटे भेजी। जब लोग बाबर को "कलन्दर" कहते थे, तो उसे काफी प्रसन्नता होती थी। हिन्दुस्तान मे भी उसन प्रचलित शासन पद्धति का अनुसरण किया। बाबर ने अक्तादार एव शिकदार नियुक्त किये जिनका मुख्य काय प्रदेश में शान्ति एव व्यवस्था बनाये रखना था। बाबर ने दानपुण्य एव निर्माणकार्यों पर इतना अधिक धन खर्च किया कि उसके राजकोष में धन का सदा अभाव रहा था।

बाबर के समय में भी डाक प्रबंध बहुत कुशल था। वह राजदूतों के प्रति अच्छा व्यवहार करता था। उसकी अपने पूर्वजों के राज्य एवं मध्य एशिया की राजनीति में बड़ी रुचि थी। भारत पर अधिकार करने के बाद भी वह अपने पूर्वजों के राज्य को नहीं भूल सका। हुमायूँ को लिखे हुए पत्र से उसकी नीति के बारे में पता चलता है। किन्तु बाबर ने ख्वाजा कला को जो पत्र लिखा था उसमें उसने लिखा है कि उसकी इच्छा शीघ्र ही काबुल पहुंचने की है।

बाबर ने लिखा है कि " हिंदुस्तान के मामले थोड़े बहुत सुलझते जा रहे हैं। परमेश्वर से आशा है कि यहां के कार्य शीघ्र सम्पन्न हो जायेंगे। ईश्वर ने चाहा तो इन कार्यों के सुव्यवस्थित होते ही मैं उस ओर तुरंत प्रस्थान कर दूंगा।

इसी पत्र में बाबर ने ख्वाजा कला को कुछ कार्य करने के लिये लिखा था। इसमें खजाना एकत्र करने को अधिक महत्व दिया था। इस पत्र से पता चलता है कि बाबर इस समय तक शासन प्रबंध एवं व्यवस्था के बारे में काफी ज्ञान प्राप्त कर चुका था।

बाबर के पूर्व हिंदुस्तान का राज्य -

बाबर ने इब्राहीम लोदी और अपने अमीरों के राज्य के बारे में लिखा है। बाबरनामा से भी यह पता चलता है कि अफगानों के विद्रोह कहां-कहां पर हुए और बाबर ने उनका दमन किस प्रकार से किया। इसके अतिरिक्त उसने बंगाल मालवा, गुजरात, दक्षिण एवं मेवाड़ आदि राज्यों के बारे में लिखा है। बाबरनामा से तुर्कों एवं अफगानों की सैन्य व्यवस्था के बारे में भी पता चलता है। उसने इब्राहीम लोदी की सैन्य व्यवस्था के बारे में लिखा है कि " हिंदुस्तान में यह प्रथा है कि ऐसे महान संकटों के अवसरों पर धन देकर इच्छानुसार सेना एकत्रित की जाती है।'

बाबरनामा से पता चलता है कि उस समय विभिन्न प्रान्तों से कितना राजस्व कर वसूल होता था। बाबरनामा इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आईने अकबरी के अतिरिक्त अकबर के पूर्व के इतिहासों में राजस्व के सम्बन्ध में अन्य किसी भी ग्रंथ में वर्णन नहीं है। बाबर ने लिखा है कि हिंदुस्तान के समस्त श्रमिक कारीगर एवं श्रमिक हिंदु ही हुआ करते थे। तुर्कों को राजस्व कर वसूल करने में काफी कठिनाई होती थी। अलाउद्दीन के समय राजस्व सम्बन्धी नियम बहुत कठोर थे। बाबर ने लिखा है कि हिंदुस्तान के जंगलों में लोग जाकर छिप जाते थे जो विद्रोह करने वाले होते थे या फिर ना चाहते थे।

हिन्दुस्तान की भौगोलिक स्थिति का वर्णन :-

बाबर ने हिंदुस्तान की भौगोलिक स्थिति का भी वर्णन किया है। उसने काबुल से पानीपत एवं देहली तक के समस्त मुख्य स्थानों के महत्व को स्पष्ट करते हुए विस्तृत रूप से उनका वर्णन किया है। भारत की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए उसने हिंदुस्तान की स्थिति, उत्तरी पर्वत, अरावली, एवं नदियों का विवरण दिया है।

बाबर ने हिंदुस्तान के हाथी, गैंडे, जंगली भैंस, नीलगाय, मृगों, आदि पशुओं का वर्णन करते हुए उनके स्वभाव के बारे में भी लिखा है। उसने बन्दर, नेवल एवं गिलहरी की भी चर्चा की है। मोर, तोते शाहमुर्ग, सारस, नीलकण्ठ, कोयल, चमगादड, आदि पक्षियों का भी वर्णन किया है। जल जन्तुओं में मेण्डक, घडियाल और मछलियों के बारे में लिखा है।

बाबर ने फलों में आम, की प्रशंसा की है। उसने आम, केले, इमली, जामुन बेर खुरमा नारियल, ताड चिरौंजी, आदि के बारे में विस्तृत रूप से लिखा है। इसके अतिरिक्त भारतवर्ष की ऋतुओं, सप्ताह के दिन समय विभाजन तौल का भी उसने विवरण दिया है।

बाबर के निर्माण कार्य -

बाबरनामा से पता चलता है कि उसने कई स्नानाघर, बाग, तालाब, कुएं, एवं फव्वारें का निर्माण करवाया। फतेहपुर सीकरी धौलपुर ग्वालियर, बयाना आदि स्थानों पर कई भवनों का निर्माण करवाया। उसके द्वारा बनवाये गये भवनों में से पानीपत की बडी मस्जिद एवं सम्भल की जामा मस्जिद आज भी मौजूद है।

बाबरनामा की त्रुटियां

(1) बाबर ने उडीसा खानदेश, सिंध कश्मीर आदि राज्यों के बारे में कुछ भी नहीं लिखा है।

(2) बाबर ने जो कुछ भी लिखा है, वह बहुत संक्षिप्त है, उसे कुछ विस्तार में लिखना चाहिये था।

(3) पहले भागों की शैली से पिछले भागों की शैली निम्न कोटि की है।

(4) बाबर की आत्मकथा में 1483-93, 1503-04, 1508-19, 1520-25 1529-30 आदि वर्षों की घटनाओं का वर्णन हमें प्राप्त नहीं होता।

(5) बाबर ने बाबरनामा में गलत तथ्य भी प्रस्तुत किये हैं। उदाहरण स्वरूप

बाबर ने लिखा है कि पानीपत के युद्ध मे उसके पास केवल 12,000 सैनिक थे परन्तु आधुनिक शोध कार्य से यह स्पष्ट हो गया है कि उसके पास 25,000 सैनिक थे।

बाबरनामा का मूल्यांकन

इन त्रुटियों के होने के बावजूद भी बाबरनामा एक महत्वपूर्ण रचना है। बेवरीज के शब्दों मे "बाबर की आत्मकथा" एक अमूल्य ग्रन्थ है जिसकी तुलना सेंट आगस्टाइन, और रूसो की स्वीकृति पत्रों तथा गिब्बन और न्यूटन की आत्मकथाओं से की जा सकती हैं।" लेनपूल ने लिखा है कि "अकबर के वंश की शक्ति तथा शान समाप्त हो चुकी हैं, परन्तु उसके जीवन का विवरण का लेखा उपहास करना हमेशा अमर है।"[1]

1– लेनपूल ; बाबर पृष्ठ 7

2 मिर्जा हैदर : तारीख-ए-रशीदी

मिर्जा हैदर मुहम्मद हुसैन गूरगान का पुत्र था। उसका जन्म 905 हि० (1499-1500 ई०) म हुआ था और मृत्यु 958 हि० (1551-52 ई०) में हुई थी। मुहम्मद हुसैन का बादशाह बाबर की मौसी स विवाह हुआ था। इस प्रकार मिर्जा हैदर बाबर का चचरा भाई था। वह कलम और तलवार दोनो का धनी था। बदख्शा तथा काशगर म एक सैनिक अधिकारी के रूप में उसने अपनी उच्च सैनिक प्रतिभा का परिचय दिया था।[1]

कामरान के सैनिक पदाधिकारी के रूप मे मिर्जा हैदर ने लाहोर में बडा अच्छा शासन प्रबन्ध किया। चौसा की पराजय के बाद हुमायूँ जब आगरा पहुचा तो मिर्जा हैदर ने भाइयों को मिलाने का काफी प्रयत्न किया किन्तु सफलता नही मिल सकी। मिर्जा हैदर हुमायँ से इतना प्रभावित हो गया कि अब वह हुमायूँ के साथ रहने लगा। कन्नौज के निकट गंगा तट के युद्ध म उसने हुमायूँ का साथ दिया। लाहोर मे उसने हुमायँ के खोय हुए राज्य को पुन अधिकार में लाने योजनाए बनाई किन्तु सफलता प्राप्त नही हो सकी। हुमायूँ की अनुमति पाकर नवम्बर 1540 ई० म उसने काश्मीर को जीत लिया। जब हुमायू ने काबुल को विजय कर लिया तो उसने हुमायू के नाम का खुतबा पढ़वा दिया। 1551 - 52 ई० मे काश्मीर वालो ने रात्रि मे एक छापा मारा जिसमे उसकी मृत्यु हो गई।[2]

मिर्जा हैदर की 'तारीखे रशादी' का अंग्रेजी अनुवाद एन० इलियस तथा ई० डेनीसन राय न किया जिस वजह से मिर्जा हैदर को काफी प्रसिद्धि प्राप्त हुई और इसका बहुत अधिक प्रयोग हुआ है। यह दो भागो में विभाजित है -[3]

1— इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (पचम खण्ड) पृष्ठ 104

2— रिजवी एस ए ए मुगलकालीन भारत (हुमायु भाग - 1) समीक्षा सम्बधी पृष्ठ 9

3— रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमाय भाग 1) समीक्षा सम्बन्धी वही पृष्ठ 16

(i) प्रथम भाग कश्मीर में 952 हि० (1546 ई०) में तैयार हुआ। इसमें मुग़लिस्तान एवं काशगर के मुगल शासकों-तुगलक तिमूर सिंहासनारोहण 748 हि० (1347-48 ई०) से मंसूरदीद जिसको यह ग्रंथ समर्पित हुआ, के समय तक का इतिहास है।

(ii) दूसरे भाग में उन घटनाओं का विवरण है जो कि इतिहासकार के जीवन काल 948 हि० (1541 ई०) तक घटी।

"उन वर्षों के इतिहास के अध्ययन के लिये जिनके पृष्ठ "बाबरनामा" से नष्ट हो गये हैं। इस इतिहास की उपेक्षा सम्भव है। इसके अतिरिक्त बाबर के पूर्वजों एवं बाबर से सम्बन्धित अन्य घटनाओं का भी उसने बड़े रोचक ढंग से उल्लेख किया है। हुमायूँ के कन्नौज के युद्ध एवं हुमायूँ तथा उसके भाईयों के सम्बन्ध के इतिहास और कश्मीर तथा तिब्बत के वृतान्त ने इस ग्रंथ को बहुमूल्य बना दिया है।"[1]

मिर्ज़ा हैदर ने बाबर एवं उसके पूर्वजों के बारे में विस्तृत रूप से वर्णन किया है। उसने बाबर की भलाईयों एवं उसके द्वारा दी गई भेंटों की काफी प्रशंसा की है तथा उसके प्रति आभार व्यक्त किया है। उसकी कृति मध्य एशिया की राजनीति पर प्रकाश डालती है।

मिर्ज़ा हैदर ने हुमायूँ के इतिहास से सम्बन्धित निम्नांकित महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया है -[2]

(1) मिर्ज़ा कामरान द्वारा कन्धार पर अधिकार।
(2) मिर्ज़ा कामरान का मिर्ज़ा हैदर को लेकर आगरा लेकर आगरा पहुंचना मिर्ज़ा कामरान की लाहौर से वापसी।
(3) कन्नौज के समीप गंगा तट पर हुमायूँ तथा शेरशाह का युद्ध। मिर्ज़ा हैदर कन्नौज के युद्ध में शाही सेनाओं के एक भाग का रक्षक था इसलिये उसने स्वयं के निरीक्षण के आधार पर कन्नौज के युद्ध का वर्णन किया है। अन्य समकालीन लेखक ने युद्ध का इतना विस्तृत विवरण नहीं दिया है।
(4) हुमायूँ का पलायन तथा लाहौर में सब भाइयों का एकत्र होना और मिर्ज़ा कामरान द्वारा विरोध।

1- रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग 1) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 17
2- रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग - 1) वही पृष्ठ 17

(5) मिर्जा हैदर द्वारा कश्मीर विजय

मिर्जा हैदर हुमायूं के निकटतम व्यक्तियों में से था और कुछ समय तक उसके साथ रह चुका था। अतः उसके द्वारा हुमायूं के चरित्र एवं प्रवृतियों के बारे में दिया गया विवरण काफी महत्वपूर्ण है।

मिर्जा हैदर ने घटनाओं का बड़ा आकर्षक वर्णन प्रस्तुत किया है। थोड़े से वाक्यों में घटना को पूर्ण रूप से लिख देना उसकी कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। यद्यपि घटनाओं का वर्णन संक्षेप में किया है किन्तु उसकी शैली इतनी आकर्षक है कि हमारे सामने एक स्पष्ट तस्वीर उभर आती है।



3 गुलबदन बेगम : हुमायूनामा

गुलबदन बेगम जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर की पुत्री थी। उसकी माता का नाम दिलदार बेगम था। उसका जन्म लगभग 1523 ई० में हुआ था। जब वह दो वर्ष की थी तब हुमायूँ की माता माहम बेगम ने उसे गोद ले लिया था। नवम्बर 1525 ई० में बाबर काबुल से हिन्दुस्तान पर विजय प्राप्त करने के लिये अपनी सेना के साथ रवाना हुआ। उस समय गुलबदन बेगम की अवस्था दो वर्ष की थी। इस समय बाबर अपने परिवार को काबुल में ही छोड़कर गया था। 1529 ई० में बाबर के परिवार का काफिला आगरा पहुँचा। इस प्रकार लगभग 3 वर्ष तक गुलबदन बेगम को अपने पिता से अलग रहना पड़ा।

1530 ई० में बाबर की मृत्यु हो गई। इसके पश्चात माहम बेगम का अधिक समय अपने पुत्रों की देखभाल में व्यतीत होने लगा। हुमायूँ के एक पुत्र "अलअमान" का जन्म हुआ था किन्तु शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो गई इस कारण माहम चिन्तित रहती थी। इसलिये उसने हुमायूँ का विवाह मेवा जान से करवा दिया। जिससे हुमायूँ को एक पुत्र की प्राप्ति हुई। इस अवसर पर माहम ने जो तैयारियां करवाई, उनका गुलबदन बेगम ने विस्तार से वर्णन किया है।

27 अप्रेल 1534 ई० को जब माहम की मृत्यु हुई तब गुलबदन बेगम को काफी दुख हुआ। उसने लिखा है कि "मुझे बड़ा शोक, नैराश्य एवं घोर कष्ट हुआ। रातदिन मैं विलाप किया करती थी। हजरत बादशाह ने आकर कई बार मुझे तसल्लीदी और मेरे प्रति कृपा एवं दया प्रदर्शित की। मेरी आका (माहम बेगम) जब मैं दो वर्ष की थी तो मुझे अपने महल में ले गई और पालन पोषण किया। जब मैं दस वर्ष की हुई थी तो उनका निधन हो गया। मैं एक वर्ष और अपनी आका के महल में रही। जब मैं 11 वर्ष की हुई और हजरत बादशाह धौलपुर पहुंचे तो मैं अपनी माता के पास चली गई।"

हुमायूँ ने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात अपनी बहिनों, भाइयों, एवं माताओं के प्रति स्नेह प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया था परन्तु गुलबदन बेगम ने लिखा है कि हुमायूँ ने अपनी माता माहम बेगम की मृत्यु के पश्चात इन सभी के प्रति अत्यधिक स्नेह प्रदर्शित करना प्रारम्भ कर दिया था।

हुमायू के हृदय में गुलबदन बेगम के प्रति विशेष स्नेह था। चौसा युद्ध की पराजय से लौटने के बाद उसने गुलबदन बेगम के प्रति अपना स्नेह निम्न शब्दों में व्यक्त किया था "गुलबदन। मैं तुझे बहुत याद करता रहता था और कभी कभी पछताते हुए कहता था कि काश। तुझे अपने साथ ले आता। जिस समय हलचल मची तो मैंने ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि "ईश्वर को धन्य है कि मैं गुलबदन को साथ न लाया।"

गुलबदन बेगम की कृति से यह मालुम नहीं होता कि उसने विवाह कब किया परन्तु जब हुमायू चौसा के युद्ध से पराजित होकर आया तो उस समय शायद उसका विवाह हो चुका था। उसके पति का नाम खिज्र ख्वाजा खां था जो कि एक प्रभुत्वशाली सरदार था। जब कामरान आगरा से पंजाब की ओर रवाना हुआ तब वह महत्वपूर्ण मुगल अमीरों को अपनी ओर मिलाने लगा और गुलबदन बेगम को भी उसकी इच्छा के विरुद्ध अपने साथ ले लिया। सम्भवतः इसका कारण यह रहा होगा कि खिज्र ख्वाजा खां एवं उसके भाईयों का सहयोग उसे प्राप्त हो जायेगा। गुलबदन बेगम कामरान के साथ नहीं जाना चाहती थी इसलिये उसने हुमायूं को लिखा कि 'हजरत से मुझे यह आशा न थी कि इस तुच्छ को अपनी सेवा से पृथक करेंगे और मिर्जा कामरान को सौंप देंगे।'

किन्तु हुमायू ने उसे सन्तोष देते हुए पत्र लिखा था कि 'मेरी स्वयं की इच्छा न थी कि तू मुझसे पृथक हो किन्तु जब मिर्जा ने अत्यधिक आग्रह किया एवं विनयपूर्वक प्रार्थना की तो यह परमावश्यक हो गया कि तुझे मिर्जा को सौंप दूं, कारण कि इस समय हम भी युद्ध में संलग्न हैं। यदि ईश्वर ने चाहा तो युद्ध के समाप्त होते ही सर्वप्रथम तुझे बुलवा लूंगा।"[1]

हुमायू कन्नौज के युद्ध में पराजित होकर लाहौर पहुंचा। उस समय भी हुमायू के भाइयों ने उसका साथ नहीं दिया। भाइयों के मतभेद से गुलबदन बेगम बहुत दुःखी थी। उसने कहा कि "काश! वह सब भाइयों को एकत्र देख सकती।" संयोग से 1548 ई० में किश्म में जब भाई कुछ समय के लिये संगठित हो गये तो इस खुशी में हुमायू ने एक बहुत बड़े जश्न का आयोजन किया।

मिर्जा कामरान ने गुलबदन बेगम के प्रति कभी अनुचित व्यवहार नहीं किया और हमेशा उसके प्रति विशेष स्नेह व्यक्त करता रहा। हुमायू ने जब

1 रिजवी, एस ए ए — मुगलकालीन भारत (हुमायू भाग प्रथम) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 26

हिंदुस्तान पर पुन अधिकार कर लिया तो उसने अपनी बेगमों को भारत पहुंचने का आदेश दिया परन्तु इसी बीच उसकी मृत्यु हो गई और बेगमों का काफिला अकबर के समय मे भारत पहुंचा। गुलबदन बेगम भी इसी काफिले म थी।

हुमायूंनामा की रचना गुलबदन बेगम ने अकबर के कहने से 1580 ई० और 1590 ई० के बीच में की। गुलबदन बेगम ने लिखा है कि "जिस समय हजरत फिरदौस मकानी (बाबर) परलोकगामी हुए, उस समय वह आठ वर्ष की थी। अत उनके विषय म उसे बहुत कम स्मरण रह गया था किन्तु शाही आदेशानुसार उसने जो कुछ सुना अथवा जो कुछ याद रह गया था उसे लिपिबद्ध किया है।"[1]

गुलबदन बेगम ने अपनी कृति को दो भागो म लिखा है।

(I) प्रथम भाग म बाबर का इतिहास।

(II) द्वितीय भाग म हुमायूं का इतिहास।

बाबर के इतिहास के बारे मे गुलबदन बेगम न लिखा है कि "उसे बाबा हजरत बादशाह न अपने "बाबरनामा" मे अपना इतिहास लिख दिया है। अत उनका इतिहास केवल आशीर्वाद हेतु लिपिबद्ध किया जा रहा है।"

हुमायूंनामा से बाबर के बारे मे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है। गुलबदन बेगम न अपनी कृति मे बाबर की दानशीलता, स्वजन एव परिवार क प्रति उसके प्रेम का अच्छा विवरण दिया है। बाबर के सम्बन्ध मे कुछ घटनाओं के बारे म जानकारी प्राप्त करने के लिय गुलबदन बेगम की रचना विशेष महत्व रखती है। डॉ० रिजवी न इस सम्बन्ध म लिखा है कि "हुमायूं से बाबर को जितना अधिक स्नेह था, उसका मार्मिक विवरण सब प्रथम 'हुमायूं नामा' म ही हुआ है और अकबरनामा मे उसे अधिक विस्तार से लिखा गया है। गुलबदन बेगम के वृत्तान्त से पता चलता है कि बाबर की मृत्यु का कारण वही विष था जो इब्राहीम की माता न उसे 21 दिसम्बर 1526 ई० को दिया था। अपनी रुग्णावस्था म भी बाबर को हिन्दाल की कितनी प्रतीक्षा थी और यह जानने के लिय हिन्दाल कितना बडा हो गया है, वह कितना उत्सुक था। इसका पता केवल हुमायूंनामा से ही चलता है। इस प्रकार बाबर के सम्बन्ध मे गुलबदन बेगम ने अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर जो कुछ भी लिखा है

1- रिजवी एस ए ए — मुगलकालीन भारत (हुमायूं भाग - प्रथम) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 26

यद्यपि यह बड़ा संक्षिप्त है किन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यदि उसने इसकी रचना न की होती बाबर के विषय में हमारी जानकारी कितनी अधूरी रह जाती इसका अनुमान केवल "हुमायूनामा" के अध्ययन से ही लगाया जा सकता है।[1]

गुलबदन बेगम की कृति का दूसरा भाग अधिक महत्वपूर्ण है जिसमें हुमायूं का इतिहास है। प्रो० के० आर० कानूनगो के शब्दों में "मुझे यह पुस्तक बहुत उपयोगी लगी है - विशेषकर हुमायूं के जीवन और तिथियों के बारे में। यह बेगम एक दो बातों के सिवाय अन्य बातों में विश्वसनीय है।"

डा० रिजवी ने गुलबदन बेगम के हुमायूं के इतिहास को निम्न तीन भागों में विभक्त किया है। इसमें उन्होंने गुलबदन बेगम के जानकारी के सूत्रों का हवाला दिया है।

(1) गुलबदन बेगम की अपनी जानकारी पर आधारित हुमायूं के सिंध की ओर प्रस्थान तक का तथा हुमायूं के काबुल पहुंचने के समय मिर्जा कामरान के अंधे बनाये जाने तक का इतिहास।

(2) हमीदाबानो बेगम द्वारा वर्णित सिंध से ईरान तक की यात्रा और काबुल विजय की घटनायें।

गुलबदन बेगम की मृत्यु 7 मई 1603 ई० को हुई थी।

गुलबदन बेगम के हुमायूं के इतिहास का कितना महत्व है। इसकी पुष्टि में डा० रिजवी के निम्न तीन उद्धरण दिये जा रहे हैं[2]

हुमायूं के पंजाब तथा सिंध की ओर पलायन के पूर्व की जिन घटनाओं का गुलबदन बेगम ने उल्लेख किया है उनमें अभियानों एवं अन्य राजनीतिक घटनाओं का वर्णन बड़े संक्षिप्त रूप से किया गया है। महत्वपूर्ण युद्धों का उल्लेख केवल थोड़े से शब्दों में कर दिया गया है किन्तु अन्तःपुर के भीतर की घटनाओं का तथा बेगमों के तत्कालीन जीवन का उल्लेख उसने विस्तार से किया है। हुमायूं का अपनी माता तथा बहिनों के प्रति प्रेम, माहम बेगम का हुमायूं के पुत्र के जन्म के विषय में चिन्ता, बेगमों के द्वारा पुत्र के जन्म की प्रतीक्षा हुमायूं

1- रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूं) भाग - प्रथम पृष्ठ 26

2- रिजवी एस ए ए मुगलकालीन भारत (हुमायूं भाग प्रथम) वही पृष्ठ 27 28

के चुनार के अभियान से वापस होने के उपरांत ।माहम बेगम द्वारा जश्न का आयोजन, तिलिस्सम भवन एव मिर्जा हिन्दाल के विवाह के जश्न का उल्लेख केवल गुलबदन बेगम के "हुमायूनामा" मे ही हुआ है। इस विवरण से हम उस समय के उच्च वर्ग के सामाजिक एव सास्कृतिक जीवन के सजीव चित्र प्राप्त हो जाते हैं।

'हुमायू की सिंध यात्रा के प्रसग मे गुलबदन बेगम ने हुमायू तथा हमीदाबानो बेगम के विवाह का बडे विस्तार से उल्लेख किया है। मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान एव वहा से वापसी के समय हुमायू को जो कष्ट भोगने पड़, उनका सविस्तार उल्लेख गुलबदन बेगम ने किया है। मिर्जा शाह हुसैन द्वारा कदम कदम पर विश्वासघात के कारण हुमायू को जिन कठिनाइयो का सामना करना पडा उनकी भी बेगम ने चर्चा की है। हुमायू द्वारा खानजादा बेगम को कामरान को समझाने के लिय भेजने, खानजादा बेगम के समझाने के बावजूद मिर्जा कामरान का क ओर से अपने नाम का खुतबा पढवाने के लिये आग्रह का हाल गुलबदन बेगम को अपनी माता एव खानजादा बेगम से ज्ञात हुआ होगा। यह विवरण भी हम किसी अन्य ग्रन्थ मे नही मिलता।

"हुमायू के काबुल विजय के बाद की घटनाओ का उल्लेख बेगम ने अपनी जानकारी के आधार पर किया है। उस समय हमीदाबानू बेगम भी काबुल पहुच गई थी। अन्य बेगमो ने भी उन घटनाओ को क्रम से लिपिबद्ध करने में सहायता दी होगी। मिर्जा कामरान ने हुमायू से काबुल के लिये समय समय बेगमो को जो कष्ट दिये, उन्हें गुलबदन बेगम ने स्वय न भोगा था। इस काल मे थोड थोडे समय के लिय जब कभी हुमायू तथा बेगम कष्टो से मुक्त हो जाती तो आमोद-प्रमोद एव दावतो का भी आयोजन होता था। इस काल के इतिहास की भी विशेषता स्त्रियों के जीवन के सजीव चित्र एव उनके चरित्र का रोचक विवरण है। सुलेमान मिर्जा मीरान शाही की पत्नी हरम बेगम द्वारा सेना के नेतृत्व का का उल्लेख बेगम ने बडे स्पष्ट रूप से किया है। मिर्जा कामरान की मूर्खता, एव हरम बेगम से इश्क की घोषणा के दुष्परिणाम की गुलबदन बेगम ने सविस्तार चर्चा की है। मिर्जा हिन्दाल बेगम का सगा भाई था। उसकी हत्या पर शोक एव मिर्जा हिन्दाल बेगम का सगा भाई था। उसकी हत्या पर शोक एव मिर्जा कामरान के प्रति उसका क्रोध स्वाभाविक ही है। बेगम ने मिर्जा के प्रति हुमायूं के शोक एव बेगमो के विलाप तथा उसकी लाश के दफन

यद्यपि यह यहा सक्षिप्त है किन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यदि उसने इसकी रचना न की होती बाबर के विषय म हमारी जानकारी कितनी अधूरी रह जाती इसका अनुमान केवल "हुमायूँनामा' के अध्ययन से ही लगाया जा सकता है।[1]

गुलबदन बेगम की कृति का दूसरा भाग अधिक महत्वपूर्ण है जिसम हुमायू का इतिहास है। प्रो० के० आर० कानूनगो के शब्दों म "मुझे यह पुस्तक बहुत उपयोगी लगी है - विशेषकर हुमायूँ के जीवन और तिथियो के बारे म। यह बेगम एक दो बातो के सिवाय अन्य बातो म विश्वसनीय है।'

डा० रिजवी न गुलबदन बेगम के हुमायू के इतिहास को निम्न तीन भागो म विभक्त किया है। इसमें उन्होंने गुलबदन बेगम के जानकारी के सूत्रों का हवाला दिया है।

(1) गुलबदन बेगम की अपनी जानकारी पर आधारित हुमायू के सिन्ध की ओर प्रस्थान तक का तथा हुमायू के काबुल पहुंचने के समय मिर्जा कामरान के अन्ध बनाय जाने तक का इतिहास।

(2) हमीदाबानो बेगम द्वारा वर्णित सिन्ध से ईरान तक की यात्रा और काबुल विजय की घटनायें।

गुलबदन बेगम की मृत्यु 7 मई 1603 ई० को हुई थी।

गुलबदन बेगम के हुमायू के इतिहास का कितना महत्व है। इसकी पुष्टि म डा० रिजवी के निम्न तीन उद्धरण दिये जा रहे है[2]

हुमायू के पजाब तथा सिन्ध की ओर पलायन के पूर्व की जिन घटनाओ का गुलबदन बेगम ने उल्लेख किया है उनम अभियानों एव अन्य राजनीतिक घटनाओ का वर्णन बडे सक्षिप्त रुप से किया गया है। महत्वपूर्ण युद्धो का उल्लेख केवल थोडे से शब्दो म कर दिया गया है किन्तु अन्त पुर के भीतर की घटनाओ का तथा बेगमो के तत्कालीन जीवन का उल्लेख उसन विस्तार से किया है। हुमाय का अपनी माता तथा बहिनो के प्रति प्रेम, माहम बेगम का हुमाय के पुत्र जन्म के विषय म चिन्ता, बेगमो के द्वारा पुत्र के जन्म की प्रतीक्षा। हुमाय

1- रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायू) भाग - प्रथम पृष्ठ 26

2- रिजवी, एस ए ए -मुगलकालीन भारत (हुमायू भाग प्रथम)वही पृष्ठ 27 28

के चुनार के अभियान से वापस होने के उपरांत माहम बेगम द्वारा जश्न का आयोजन, तिलिस्सम भवन एवं मिर्जा हिन्दाल के विवाह के जश्न का उल्लेख केवल गुलबदन बेगम के "हुमायूंनामा" में ही हुआ है। इस विवरण से हम उस समय के उच्च वर्ग के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के सजीव चित्र प्राप्त हो जाते हैं।'

"हुमायूं की सिन्ध यात्रा के प्रसंग में गुलबदन बेगम ने हुमायूं तथा हमीदाबानो बेगम के विवाह का बड़े विस्तार से उल्लेख किया है। मालदेव के राज्य की ओर प्रस्थान एवं वहां से वापसी के समय हुमायूं को जो कष्ट भोगने पड़े, उनका सविस्तार उल्लेख गुलबदन बेगम ने किया है। मिर्जा शाह हुसैन द्वारा कदम कदम पर विश्वासघात के कारण हुमायूं को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, उनकी भी बेगम ने चर्चा की है। हुमायूं द्वारा खानजादा बेगम को कामरान को समझाने के लिये भेजने, खानजादा बेगम के समझाने के बावजूद मिर्जा कामरान का कंधार में अपने नाम का खुतबा पढ़वाने के लिये आग्रह का हाल, गुलबदन बेगम को अपनी माता एवं खानजादा बेगम से ज्ञात हुआ होगा। यह विवरण भी हमें किसी अन्य ग्रन्थ में नहीं मिलता।'

"हुमायूं के काबुल विजय के बाद की घटनाओं का उल्लेख बेगम ने अपनी जानकारी के आधार पर किया है। उस समय हमीदाबानू बेगम भी काबुल पहुंच गई थी। अन्य बेगमों ने भी उन घटनाओं को क्रम से लिपिबद्ध करने में सहायता दी होगी। मिर्जा कामरान ने हुमायूं से काबुल के लिये संघर्ष के समय बेगमों को जो कष्ट दिये, उन्हें गुलबदन बेगम ने स्वयं न भोगा था। इस काल में थोड़े थोड़े समय के लिये जब कभी हुमायूं तथा बेगम कष्टों से मुक्त हो जाती तो आमोद प्रमोद एवं दावतों का भी आयोजन होता था। इस काल के इतिहास की भी विशेषता स्त्रियों के जीवन के सजीव चित्र एवं उनके चरित्र का रोचक विवरण है। सुलतान मिर्जा मीरान शाही की पत्नी हरम बेगम द्वारा सेना के नेतृत्व का का उल्लेख बेगम ने बड़े स्पष्ट रूप से किया है। मिर्जा कामरान की मूर्खता, एवं हरम बेगम से इश्क की घोषणा के दुष्परिणाम की गुलबदन बेगम ने सविस्तार चर्चा की है। मिर्जा हिन्दाल बेगम का सगा भाई था। उसकी हत्या पर शोक

एवं मिर्जा हिन्दाल बेगम का सगा भाई था। उसकी हत्या पर शोक एवं मिर्जा कामरान के प्रति उसका क्रोध स्वाभाविक ही है। बेगम ने मिर्जा हिन्दाल के प्रति हुमायूं के शोक एवं बेगमों के विलाप तथा उसकी लाश के दफन का भी

विस्तार से उल्लेख किया है । मिर्जा कामरान के अन्धी बना दिए जाने पर हुमायूं ने जिस प्रकार उसकी हत्या के विरुद्ध आपत्ति प्रकट की, उसका गुलबदन बेगम ने बड़े मार्मिक शब्दों में उल्लेख किया है । मिर्जा कामरान को अन्धा बना दिये जाने के बाद की घटनाएं, गुलबदन बेगम के प्रकाशित "हुमायूं नामा" में प्राप्य नहीं है । सम्भवतः गुलबदन बेगम ने दोनो भाइयों की विदा का हृदयविदारक दृश्य प्रस्तुत किया होगा । यदि गुलबदन बेगम की रचना के भाग के पृष्ठ कभी मिल गये तो सम्भवतः बहुत सी तत्कालीन ऐतिहासिक समस्याओं का समाधान हो जायगा ।"

वास्तव में बहुत सी बातों के बारे में हम केवल गुलबदन बेगम के "हुमायूंनामा" से जानकारी प्राप्त होती है । जिनका अन्य समकालीन ग्रंथों में वर्णन नहीं है । गुलबदन बेगम ने बड़ी सरलता और भावुकतापूर्ण शब्दों में घटनाओं का वर्णन किया है । यद्यपि हुमायूं के इतिहास के बारे में इससे विश्वसनीय जानकारी प्राप्त होती है परन्तु बाबरनामा की तरह इस कृति में हमें निष्पक्षता के दर्शन नहीं होते हैं । उदाहरण स्वरूप, गुलबदन बेगम ने अपने सगे भाई हिन्दाल का उल्लेख करते हुए तथ्य को छिपाने का प्रयत्न किया है परन्तु अन्य घटनाओं का वर्णन बड़ा ईमानदारी से किया है ।

मिसेज बेवरीज ने इस ग्रंथ को सम्पादित किया है तथा इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तावना सहित प्रकाशित किया है । मिसेज बेवरीज ने लिखा है कि "हिंदुस्तान के मुगलकाल का जिन लोगों ने इतिहास लिखा है उन्हें साधारणतः इस बात का ज्ञान नहीं कि गुलबदन बेगम ने किसी ग्रंथ की भी रचना की । इसका ज्ञान मिस्टर अर्सकिन को भी न रहा होगा अन्यथा वह बाबर एवं हुमायूं के वंश का इतिहास अधिक शुद्धरूप से लिखते ।

रशब्रुक विलियम के शब्दों में, यह ग्रंथ पक्षपात से भरा हुआ है फिरभी लेखिका ने इसमें अपनी पिता की कुछ निजी स्मृतियां दी हैं ।

अभी तक इसकी एक ही प्रति प्राप्त हो सकी है जिसके अंतिम पृष्ठ नष्ट हो चुके है । यह प्रति ब्रिटिश म्युजियम में सुरक्षित रखी हुई है ।

—✱—

4 जौहर आफताबची : तजकिरतुल वाकेआत

जौहर आफताबची हुमायूं का निजी सेवक था। वह हमेशा हुमायूं के साथ ही रहता था। हुमायूं उस पर बहुत अधिक विश्वास करता था। उसने छोटी से छोटी घटना का विस्तार से वर्णन किया है। मिर्जा कामरान को अन्धा करने लिये जिन लोगों को भेजा गया था, उनके साथ जौहर भी था। उसने इस घटना का आंखों देखा हाल भी लिखा है। हुमायूं के समय में इसे एक के बाद एक पद प्राप्त होता रहा। हुमायूं के निधन के समय में भी वह खजान्ची के रूप में कार्य कर रहा था।

जौहर ने 30 वर्ष बाद अकबर के शासनकाल में अपने ग्रन्थ की रचना की। डॉ० कानूनगो के अनुसार "तजकिरतुल वाकेआत' अथवा तजकिरात उल वाकियात' हुमायूं राज्यकाल का प्रामाणिक इतिहास है और गुलबदन बेगम से अधिक वजनदार है – विशेषकर उस समय तक जब हुमायूं भारत छोड़कर कन्धार चला गया था।"[1]

जौहर ने 1585 ई० में इस ग्रन्थ को लिखना प्रारम्भ किया था। उसने लिखा है कि "मेरा इरादा उन तमाम घटनाओं का वर्णन करने का नहीं है जो पिछली हुकूमत में घटी थी। मैं केवल उन्हीं घटनाओं का वर्णन करूंगा जिनके साथ बादशाह का सम्बन्ध था। इसलिये मैं इस ग्रन्थ का आरम्भ हुमायूं के राज्यारोहण से करूंगा और ईरान से उसकी वापसी तथा राज्य प्राप्ति पर इसको समाप्त कर दूंगा और फिर मैं बताऊंगा कि बादशाह ने किस धैर्य के साथ कितनी विपदाओं और कठिनाइयों का सामना किया और सर्व शक्तिमान परमात्मा के अनुग्रह से उसने अपना राज्य पुनः प्राप्त कर लिया। मुझे आशा है कि इस पुस्तक के कारण लेखक का नाम भावी पीढ़ियों तक बना रहेगा। मानव जाति को इस असाधारण घटनाओं का पता लगेगा।"[2]

1– शर्मा, एस०आर०–दी क्रीसेन्ट इण्डिया (हिन्दी) पृष्ठ 48

2– इलियट एवं डाउसन भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 112-13

तजकिर तुल वाकेग्रात ग्रथवा ग्रन्य किसी ग्र थ से इस बात का पता नही चलता कि अकबर के राज्यकाल मे उसे कोई पद प्राप्त था ग्रथवा नहीं। सम्भवत उसे कोई महत्वपूर्ण ग्रधिकार प्राप्त नही था ग्रन्यथा वायजीद की भांति वह अकबर के राज्यकाल सम्बन्धी भी कुछ न कुछ अपने संस्मरण म लिखता "।[1]

ग्रन्थ के दोष

1 कहीं-कहीं जोहर ने घटनाग्रो का क्रमबद्ध रूप से वर्णन नहीं किया है।
2, घटनाग्रो की तारीखें ठीक नही दी गई है।
3 उसमे तथ्यो को विश्लेषण करने की क्षमता का ग्रभाव है।

इन दोषो के बावजूद भी यह मानना पड़ेगा कि उसने सभी तथ्यों का ग्रलग-ग्रलग वर्णन किया है। उसका ग्रन्थ ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। डॉ० रिज़वी ने लिखा है कि "जोहर की भाषा, सरल, सुबोध एव बनावट से शून्य है। घटनाग्रो का भी उसने बड़ी सच्चाई से ग्रपनी ग्रोर से कुछ मिलाये बिना उल्लेख कर दिया है।"[2]

इलियट एव डाउसन ने लिखा है कि "जोहर द्वारा लिखे गये ये संस्मरण म चाई ग्रौर ईमानदारी के साथ लिखे हुए प्रतीत होत है ग्रौर इनम वैसी ग्रत्युक्तियाँ ग्रौर स्तुतिया नही है जो एशिया के जीवनी लेखकों मे पायी जाती है। परन्तु यह बात ग्रवश्य है कि हुमायूँ की मृत्यु के तीस वर्ष बाद इनका लिखना प्रारम्भ हुग्रा था। इसलिये इनका यह दावा कि जिन घटनाग्रो का इनमे वर्णन है वे तद्वत ग्रौर पूर्णतया ठीक है, पूर्णत नही माना जा सकता। ज्यो ज्यों घटनायें घट रही थी त्यों त्यो वे उसी समय नही लिखी जा रही थी। ये तो तीस वर्ष से भी ग्रधिक पुरानी घटनाग्रो की स्मृतिया थी। इसलिय लेखक मे भी कितनी भी सत्यशीलता ग्रौर ईमानदारी हो, समय ने उनके संस्कारो को कुछ धुधला ग्रवश्य कर दिया होगा ग्रौर ग्रपने प्रिय मालिक की जो भी बातें उसे याद होगी वे ग्रब पुरानी स्मृति के कारण ग्रच्छी मालुम होने लगी होगी।"[3]

1– रिज़वी एस०ए०ए० मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग प्रथम) पृष्ठ 30
2– " " " "
3– इलियट एव डाउसन– भारत का इतिहास (पचम खण्ड) पृष्ठ 113

—*—

5 ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद : तबकात-ए-अकबरी

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद की कृति तबकाते अकबरी को अकबरशाही तारीख ए निजामी आदि कई नामों से भी पुकारा जाता है। ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद के पिता का नाम ख्वाजा मुहम्मद मुकीम हरवी था। वह बाबर का बड़ा विश्वासपात्र था तथा दीवाने ब्यूतात था। हुमायूँ ने 1535 ई० में गुजरात पर अधिकार करने के बाद जब अस्करी को वहां का शासक नियुक्त किया तब उसने मुकीम को अस्करी का वजीर नियुक्त किया। 1539 ई० में जब हुमायूँ शेरशाह से चौसा युद्ध में पराजित होकर आगरा पहुंचा तो ख्वाजा मुहम्मद मुकीम उसके साथ था।[1]

ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद ने अपनी कृति में अपने जन्म आदि के विषय में कुछ नहीं लिखा है। किन्तु बदायूनी ने लिखा है कि निजामुद्दीन अहमद की मृत्यु 45 वर्ष की आयु में 7 नवम्बर 1594 ई० को (अकबर के शासनकाल के 38वें वर्ष में) हुई।[2] इस प्रकार उसकी जन्म तिथि 958 हि० अथवा 1551 ई० होती है। हमें ख्वाजा निजामुद्दीन की बाल्यावस्था तथा बाद की शिक्षा के विषय में कोई प्रामाणिक जानकारी प्राप्त नहीं होती है। परन्तु तबकाते अकबरी के अध्ययन से पता चलता है कि निजामुद्दीन अवश्य ही अपने समय के बड़े-बड़े विद्वानों के द्वारा शिक्षा प्राप्त की होगी। जिस समय वह गुजरात में था तो बदायूनी के अनुसार, उमानी, बकाई हयानी तथा सरफी सरीखे कवि उसके द्वारा आश्रय प्राप्त करते रहते थे। अकबर ने उसे "तारीखे अलफी" के संकलनकर्ताओं के बोर्ड में भी सम्मिलित किया था।"[3]

निजामुद्दीन एक उच्च कोटि का सैनिक था जिसने अकबर के समय में विभिन्न महत्वपूर्ण अभियानों में भाग लिया था। अकबर ने अपने शासनकाल के 29 वें वर्ष में उसे गुजरात के बख्शी के पद पर नियुक्त किया और बाद में 1587

1 रिजवी एस ए ए—मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग दो) पृष्ठ 18।
2— बदायूंनी — मुन्तखाब-उत-तवारीख भाग 2 पृष्ठ 393 96
3— रिजवी एस ए ए मुगलकालीन भारत (हुमायूं भाग दो) पृष्ठ।

-88 ई० मे उसे दरबार मे बुला लिया। उसे अकबर के दरबार मे एक के बाद एक उच्च पद प्राप्त होते रहे। डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने लिखा है कि "वह बहुत ही कुशल दरबारी था और शासन मे सभी हठीवादी और उदार मुसलमानो मे बहुत जनप्रिय था। उसे अबुल फजल और बदायूँनी दोनों ही पसन्द करते थे।"[1]

ग्रन्थ का ऐतिहासिक महत्व -

निजामुद्दीन ने ग्रन्थ के प्राक्कथन मे लिखा है कि उसने इसमें उन घटनाओं का वर्णन किया है जो हिन्दुस्तान मे इस्लाम के अभ्युदय अर्थात 367 हि० (977-78 ई०) से लेकर 1001 हि० (1592-93 ई०) तक घटीं। किन्तु वास्तव मे इसमे 377 हि० (987-88 ई०) से लेकर 1002 हि० (1593 94 ई०) तक का भारत का इतिहास उपलब्ध होता है। सम्भवत लेखक ने 1001 हि० मे इसकी रचना समाप्त कर ली थी और 1002 हि० की घटनाए बाद में जोड़ दीं।"[2]

निजामुद्दीन की कृति 'तबकाते अकबरी' नौ भागों मे विभाजित है। प्रथम भाग म 1593 ई० तक देहली का इतिहास है। दूसरे भाग मे दक्षिण तीसरे मे गुजरात, चौथे मे मालवा, पाचवे मे बगाल, छठे मे जौनपुर सातवें में कश्मीर, आठवें म सिन्ध एव नवें मे मुलतान का इतिहास दिया हुआ है। मुन्शी देवी प्रसाद के शब्दों म, यह पहला इतिहास है जिसमें विशाल हिन्दुस्तान के उन मुसलमान सुलतानो का वृत्तान्त दिया हुआ है।[3] यह ग्रन्थ तीन भागो में एशियाटिक सोसायटी बगाल की बिलोथीथिका इण्डिका सीरीज में प्रकाशित हुआ है। इसके द्वितीय भाग में बाबर, हुमायूँ और अकबर का इतिहास है तथा तीसरे भाग में देश के अन्य प्रान्तीय राज्यो का इतिहास है।

निजामुद्दीन ने अपने ग्रन्थ तबकाते अकबरी को लिखने के लिये 27 ग्रन्थों का सहारा लिया जो निम्नलिखित है —

(1) तारीखे यामिनी (2) तारीखे जैनुल (3) रोजतुस्सफा (4) ताजुल मआसिर (5) तबकाते नासिरी (6) खजाइनुल फुतूह (7) तुगलकनामा (8) तारीख-ए फीरोजशाही (बरनी) (9) फुतूहाते फीरोजशाही (10) तारीखे मुबारकशाही

1– डा० श्रीवास्तव, ए एल - मुगलकालीन भारत (1526-1803) पृ० 25-26
2– रिजवी, एस ए ए -मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग दो) पृष्ठ 19-20
3– मुन्शी देवीप्रसाद कृत मुगल दरबार भाग 3 (नागरी प्रचारिणी सभा काशी) सम्वत 2004 पृष्ठ 529

(11) फुतूह उस-सलातीन (12) तारीखे मुहम्मदी (13) तारीखे मुहम्मदशाही हिन्दवी (14) तारीखे मुहम्मदशाही गुजराती (15) मआसिरे महमूदशाही गुजराती (16) तारीखे बहादुरशाही (17) तारीखे नासिरी (18) तारीखे मुजफ्फरशाही (19) तारीखे बहमनी (20) तारीखे मिर्जा हैदर (21) तारीखे सिंध (22) तारीखे कश्मीर (23) वाकेआते बाबरी (24) तारीखे बाबरी (25) तारीखे इब्राहीमशाही (26) वाकेआते मुश्ताकी (27) वाकेआते हजरत जन्नत आशियानी हुमायूं बादशाह

निजामुद्दीन अहमद ने जिन ग्रन्थों को आधार बनाकर यह ग्रन्थ लिखा है उनमें से बहुत से ग्रन्थ अब उपलब्ध नही होते हैं। अतः उसकी कृति ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त निजामुद्दीन अहमद मे कट्टरपन, पक्षपात एव इसी प्रकार के अन्य दोष बहुत कम पाये जाते हैं। उसने घटनाओं की छानबीन करने के बाद उनका वर्णन किया है। निजामुद्दीन ने मालवा, गुजरात कश्मीर, एवं पजाब का इतिहास अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर लिखा है।

निजामुद्दीन के अनुसार राणा सांगा ने मालवा के सुलतान महमूद को युद्ध में पराजित करने के बाद बन्दी बना लिया। इसके पश्चात उन्होंने महमूद को न केवल मुक्त कर दिया अपितु उसका आधा राज्य भी उसे लौटा दिया। राणा सांगा और गुजरात के सुलतान की तुलना करते हुए निजामुद्दीन ने राणा सांगा की उदारता एव पौरुष की भूरी भूरी प्रशंसा की है।

निजामुद्दीन ने सरल, सरस, और प्रभावशाली भाषा में अपना ग्रन्थ लिखा है जिससे घटनायें आसानी से समझ में आ जाती हैं। उसने घटनाओं को यथावत प्रस्तुत किया है तोडा मरोडा नही है। तारीखे फरिश्ता के बाद बहुत से इतिहासकारों ने निजामुद्दीन के ग्रन्थ के आधार पर बनाकर अपने ग्रन्थों की रचना की है।

निजामुद्दीन ने बाबर का इतिहास बाबरनामा एवं अकबरनामा को आधार बनाकर लिखा है। बाबर की मृत्यु से पूर्व निजामुद्दीन अली

द्वारा हुमायू को राज्य से वचित करने के लिये षडयन्त्र रचा गया था । खलीफा हुमायू के स्थान पर बाबर के बहनोई मैंहदी ख्वाजा को शासक बनाना चाहता था। इस घटना के बारे मे निजामुद्दीन को जानकारी अपने पिता मुहम्मद मुकीम से प्राप्त हुई थी। निजामुद्दीन के अनुसार इस षडयन्त्र का खण्डन उनके पिता मुकीम के प्रयत्न के ही फलस्वरुप हुआ । उसने पिता के इस कारनामे का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया है । निजामुद्दीन के द्वारा खलीफा षडयन्त्र के बारे मे दिया गया विवरण काफी महत्वपूर्ण है । अकबरनामा से भी इस घटना के बारे मे जानकारी मिलती है ।

इलियट एव डाउसन ने लिखा है कि 'हिन्दुस्तान के इतिहासो मे यह एक बहुत प्रसिद्ध पुस्तक है । इस नये ढग पर लिखा हुआ यह प्रथम ग्रथ है और इसका विषय केवल भारतवर्ष ही है । एशियाइ देशो के इतिहासो को इससे अलग रखा गया है । समकालीन इतिहासकारो मे इसको उच्च कोटि का ग्रथ माना है ऐसा प्रतीत होता है । पीछे के लेखक भी इसका बडा ही आदर करते आये हैं और इससे उन्होने खूब उद्धरण लिये है । मुतखाब उत तवारीख का लेखक बदायनी अपनी पुस्तक को इसका सक्षिप्त रुप मानता है और यह स्वीकार करता है कि 1002 हि० (1593 ई०) की घटनाओ के लिये वह इस ग्रथ का मुख्यत आभारी है । फरिश्ता ने लिखा है कि उसने जितने भी इतिहास लिखे है उनमे यही उसे पूर्ण मालुम होता है ।[1]

मआसिर उल उमरा मे लिखा है कि ' इस ग्रथ के लेखक को घटनाओ और सामग्री का सग्रह करने मे बहुत विचार और सावधानी करनी पडी थी। मीर मासुम बखारी और दूसरे प्रसिद्ध लोगो ने इसके सकलन मे उसको सहायता दी थी। इसलिये यह पुस्तक प्रशसा के योग्य है । यह पहला इतिहास है जिसमे हिन्दुस्तान के मुस्लिम शासकों का विवरण दिया हुआ है । इस ग्रथ मे से मोहम्मद कासिम फरिश्ता ने और अन्य लोगो ने बडे बडे उद्धरण लिये हैं और यह उनके इतिहासों का आधार है । इसमे जो कमिया है वे उन्होने पूरी की हैं । परन्तु तबकाते अकबरी प्राय अबुल फजल के वतान्त से नही मिलती । इसलिये यह पाठको पर छोडा जाता है कि इन दो लेखको मे कौन अधिक विश्वास के योग्य हैं[2]

1– इलियट एव डाउसन भारत का इतिहास (पचम खण्ड) पृष्ठ 143

2– इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (पचम खण्ड) पृष्ठ 143

पुनश्च यूरोपीय लेखक भी इस ग्रन्थ को सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और ग्रसक्नि ने तो निजामुद्दीन को उस समय का शायद सर्वोत्तम इतिहासकार माना है।[1] "तारीख-ए-सलातीन ए अफगानी के लेखक ने हुमायूँ का शासनकाल शब्दशः इसी से नकल किया है।[2] फरिश्ता ने लिखा है कि "मैंने बहुत से इतिहास ग्रन्थ पढ़े हैं, परन्तु मैं इस ग्रन्थ को पूर्ण मानता हूँ।[3]

निःसंदेह निजामुद्दीन अहमद एक विश्वसनीय इतिहासकार है। उसने घटनाओं का सत्य विवरण प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि उसके ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्व है।

1– इलियट एवं डाउसन भारत का इतिहास (पंचम खण्ड) पृष्ठ 144

2– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (पाद टिप्पणी) पृष्ठ 143

3– एस आर शर्मा से उद्धृत - भारत का इतिहास पृष्ठ 149

=*=

6 अब्बास खां सरवानी : तारीख-ए-शेरशाही

यह पुस्तक सम्राट अकबर के आदेश से लिखी गई थी। इसके लेखक ने इस पुस्तक का शीर्षक "तोहफत ए अकबरशाही" लिखा है किन्तु अहमद यादगार ने कुछ वर्षों पश्चात "तारीख ए - सुलातीन ए अफगानी" लिखी थी, उसने इस पुस्तक को "तारीख ए शेरशाही" के नाम से सम्बोधित किया था और यह इसी नाम से प्रसिद्ध है।[1]

अब्बास खां के विषय में हमें उसकी पुस्तक से थोड़ी बहुत जानकारी प्राप्त होती है। अन्य समकालीन ग्रन्थों में इस बारे में वर्णन प्राप्त नहीं होता। उसके पिता का नाम शेख अली सरवानी था, जो शेरशाह का समकालीन था। उसके अनेक पूर्वज शेरशाह की सेवा में रह चुके थे। इस सम्बन्ध में अब्बास खां ने लिखा है कि 'मैं जो इस अकबरशाही का लेखक हूं, मियां हस्सु अब्बास खां सरवानी का पुत्र था। यह मेरे पूर्वजों में से था। उसके बहुत से पुत्र, पौत्र शेर शाह के साथ थे। अस्तु मियां न हस्सु को दरिया खां की उपाधि दी थी। शेरखां के साथ तो मैं से को[?] उसके समान न था। शेरशाह की सगी बहिन उसको ब्याही थी जिस समय शेरशाह उन्नती के प्रारम्भिक काल में था उस समय दरिया खा की मृत्यु हो गई। इस बात के उल्लेख से इस तुच्छ का यह अभिप्राय है कि मेरे तथा शेरशाह के बीच कई प्रकार का सम्बन्ध है। अतः उसके हाल से भी मैं भलीभांति परिचित हूं जो कि मैंने अपने पूर्वजों में छानबीनकर जाना।[2]

इसी तरह से इस पुस्तक की रचनाकाल के बारे में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। इलियट एवं डाउसन के अनुसार इस पुस्तक की रचना लगभग 1579 ई० में की गई। इस तिथि का उल्लेख लेखक ने अपना निजी विवरण देते हुए एक स्थान पर किया है। किन्तु यह उचित नहीं हैं क्योंकि लेखक ने एक स्थान पर मेहर सुलताना जो मियां काला पहाड़ा फारमूली की पुत्री बीबी फतेह मलिका की पोती थी, के निधन का वर्ष 977 हि० (1588 89 ई०) लिखा है, जिससे स्पष्ट है कि ग्रन्थ की रचना 1588-89 ई० के पश्चात ही हुई।[3]

1– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 226

2– निगम, एस बी पी (डा०) सूरवंश का इतिहास पृष्ठ 2

3– निगम, एस बी पी (डा०) सूरवंश का इतिहास पृष्ठ 2

अफगानो द्वारा उस समय तथा उसके बाद जितने भी इतिहास लिखे गये उनमे तारीख-ए शेरशाही को विशेष सम्मान प्राप्त है। वर्तमान समय के सभी इतिहासकारो ने तारीख ए शेरशाही को आधार बनाकर शेरशाह का इतिहास लिखा है। डा० निगम ने लिखा है कि 'अब्बास खा ने अनेक घटनाओ से सम्बन्धित अपने सूचना स्रोतों का भी उल्लेख किया है। अत इस पुस्तक के तथ्यो मे कोई सन्देह नही है। बडी बडी घटनाओं की पुष्टि हुमायूं से सम्बन्धित अन्य इतिहासों से भी होती है। शेरशाह का सम्पूर्ण विवरण जितना विस्तार पूर्वक इस ग्रन्थ मे मिलता है, उतना किसी ग्रन्थ मे नही।[1]

अब्बास खा ने बडी सावधानी और बुद्धिमतापूर्ण तरीके से अपने ग्रन्थ की रचना की है। उसने लिखा है कि 'जो कुछ उन विश्वसनीय पठानो के मुख से जो इतिहास तथा साहित्य मे निपुण थे और उनके राज्य के प्रारम्भ से अन्त तक उनके साथ थे तथा विशेष सेवा के कारण विभूषित एवं सम्मानित थे, सुना था, जो कुछ जाच की कसौटी पर खरा नहीं उतरा उसे त्याग दिया। उसने बहुत सी घटनाओं के सम्बन्ध मे अपने रिश्तेदारो से जानकारी प्राप्त की। उसके पश्चात उसने अपने ग्रन्थ मे लिखा।

अब्बास खा ने लिखा है कि 'जो शेर खा का हाल लिख रहा अपने चाचा शेख मोहम्मद के मुख से, जो अनेक कलाओं मे निपुण थे एवं चन्देरी के अभियान मे बाबर बादशाह की सेना मे थे उनसे सुनकर लिखा। शेरशाह के शासनकाल का विस्तृत इतिहास हम इस ग्रन्थ मे मिलता है। इस पुस्तक के प्रथम भाग मे शेरशाह का इतिहास द्वितीय भाग मे इस्लाम शाह का इतिहास एवं तृतीय भाग मे उन बादशाहो का इतिहास है जो शेरखा के सम्बन्धियों तथा जागीरदारो मे से थे। जो इस्लामशाह के बाद बादशाह बने और अपने नाम का खुतबा पढवाया तथा सिक्का प्रचलित किया।

अब्बास खा ने शेरशाह के शासन सम्बन्धी सुधारो का विस्तृत वर्णन किया है। उसने लिखा है कि जिस समय प्रबन्ध तथा शासन की बागडोर शेरशाह के हाथ मे थी, तथा भारतवर्ष का देश इसके अधिकार मे आया तो अत्याचार एवं अन्याय दूर करने मे उपद्रव तथा अशांति को समाप्त करने, निर्वासित (उजडे) प्रान्तों को पुन बसाने, व्यापारियों तथा सिपाहियों के लिय भी सन्तोष और शांति स्थापित करने हेतु कुछ नियम उसने अपनी बुद्धिमानी से प्रचलित किये और कुछ ज्ञानियों की पुस्तकों से पढकर कार्यान्वित किये थे। उसने अपने

1– निगम, एस बी पी (डा०) - सूरवंश का इतिहास पृष्ठ 4

अनुभव से जाना था कि बादशाहों को चाहिये कि स्वय धमपरायण रहे तो प्रजा भी उपासना की ओर आकर्षित होती है। यदि कोई पाप प्रजा से होता है तो राजा भी इसमे सम्मिलित होता है। अत शासको के लिये उसने यह उचित नही माना कि जनता के विरुद्ध कुछ काय करें।"

अब्बास खा सरवानी ने शेरशाह के न्यायप्रबन्ध की काफी प्रशसा की है। उसने लिखा है कि वह न्याय करते समय किसी प्रकार का पक्षपात नही करता था। उसने शेरशाह की राजस्व नीति का वर्णन करते हुए लिखा है कि शेरशाह ने भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिये कौन कौन से कदम उठाये थे। अब्बास खा ने शेरशाह के शब्दो मे लिखा है कि "जिस समय ऐश्वर्य के सूय ने मेरा साथ दिया तथा चूकि मैं अमीरो तथा सैनिको के छलकपट से विदित था, इसलिये बहुत सोच विचार कर मैंने दाग की प्रथा को प्रचलित किया ताकि अमीरो तथा सैनिको के छलकपट का माग बन्द हो जाय।"

अब्बास खा ने लिखा है कि शेरशाह बिना दाग लगाये किसी को भी वेतन नही देता था। सैनिको के हुलिया तथा घोडों के निशान तथा रग का रेकाड रखा जाता था। इस प्रकार इस पुस्तक से हम शेरशाह के शासनकाल के बारे मे विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

ग्रन्थ के दोष -

इस ग्रन्थ के प्रमुख दोष निम्नलिखित है -

(1) लेखक ने घटनाओ की तिथिया नही दी है और हम इसके लिये अन्य ग्रन्थों पर निभर रहना पडता है।

(2) लेखक मे भौगोलिक ज्ञान का अभाव था। उसने अभियानो का वर्णन करते समय स्थानो के नाम गलत लिख दिये है। जैसे कि उसने फतेहपुर के स्थान पर फतेहपुर सीकरी लिखा है।

(3) शेरशाह का वणन अतिशयोक्तिपूर्ण लिखा गया है। अब्बास खा ने शेरशाह की आवश्यकता से अधिक प्रशसा की है।

(4) जब मालदेव और शेरशाह के बीच युद्ध हुआ तब अब्बास खा शेरशाह की सेना में मौजूद था परन्तु उसने अपने ग्रन्थ मे यह नही लिखा है कि युद्ध किस स्थान पर हुआ था।

(5) पुस्तक की शैली पाठकों को थकाने वाली है। इलियट एवं डाउसन ने लिखा है कि "अभिव्यक्ति में भिन्नता नहीं है। सर्वत्र एक सी शैली है, सब सम्बन्धित व्यक्ति एक प्रकार से बातें करते हैं। उनकी बातों में और लेखक के वृतान्त में एक ही जैसे शब्दों का बाहुल्य है जिससे थकान उत्पन्न होती है।"[1]

इन दोषों के बावजूद भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इस ग्रन्थ से सूरवंश के इतिहास के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। बाद के इतिहासकारों में निजामुद्दीन एवं बदायूनी ने शेरशाह का इतिहास लिखते समय अब्बास खां के ग्रन्थ को आधार बनाकर लिखा है। अब्बास खां के विवरण को इलियट एवं डाउसन ने भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) में व्यवस्थित रूप से दिया है।

1– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (चतुर्थ खण्ड) पृष्ठ 226



7 | अबुल फजल: अकबरनामा

अबुल फजल ने अकबरनामा नामक ग्रंथ की रचना की। वह अपनी विद्वता के कारण मध्यकालीन मुस्लिम जगत में प्रसिद्ध था। उसके पिता का नाम शेख मुबारक नागौरी था जो नागौर का रहने वाला था और सूफी सम्प्रदाय का अनुयायी था। अबुल फजल अपने पिता की भांति उदार सूफी था।[1]

अबुल फजल को कई विषयों का ज्ञान था और फारसी भाषा पर उसका अधिकार था। उसका छोटा भाई फैजी अच्छा कवि एवं लेखक था। उसका भी फारसी भाषा पर बडा अधिकार था। अबुल फजल अकबर के नौ रत्नों में से एक था। वह खुसरो का अध्यापक था और 2500 का मनसबदार बन चुका था[2] जबकि बी० एन० लूनिया के अनुसार अबुल फजल 500 का मनसबदार बन चुका था।[3]

अबुल फजल की गिनती अकबर के घनिष्ट मित्रो मे होती थी। उसका जन्म 14 जनवरी 1551 (मुहर्रम 958 हि०) को आगरा में हुआ था।[4] अकबर के शासनकाल के 19 वें वर्ष मे (1573 74 ई०) मे वह अकबर के दरबार में लाया गया और शीघ्र ही अकबर का विश्वासपात्र बन गया। अकबर के समय में कट्टर आलिमो के जोर को तोडने में उसने अकबर की बडी सहायता की और उसके सुलहकुल के सिद्धान्तो के निरूपण मे एव प्रचार में बहुत बडा हाथ था।[5]

1– शर्मा एम एल (डा०) - (अकबरनामा) शेख अबुल फजल कृत के संक्षेपक एवं अनुवादक (भूमिका)

2– शर्मा एम एल (डा०) (अकबरनामा) शेख अबुल फजल कृत के संक्षेपक एवं अनुवादक (भूमिका)

3– लूनिया बी एन - अकबर महान् पृष्ठ 495

4– रिजवी एस ए ए मुगलकालीन भारत, हुमायू भाग प्रथम पृष्ठ 39 (समीक्षा सम्बन्धी)

5– रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत हुमायू भाग प्रथम पृष्ठ 39 (समीक्षा सम्बन्धी)

उस समय के समस्त विद्वान एवं लेखक उसकी योग्यता से प्रभावित थे। उसने दक्षिण में सराहनीय सैनिक सेवायें भी सम्पन्न की। वहीं से लौटते समय शाहजादा सलीम ने, जिसने बादशाह होकर जहांगीर की उपाधि धारण की, 22 अगस्त 1602 ई० (4 रबी उल अव्वल, 1011 हि०) को वीरसिंह देव नामक बुंदेला सरदार द्वारा उसकी हत्या करवा दी, वीरसिंह देव ने शेख अबुल फज़ल का सिर सलीम के पास इलाहबाद भेज दिया। ग्वालियर के समीप अंतरी में उसकी लाश दफ़न कर दी गई।[1]

शाहजादा सलीम को अबुल फजल से घृणा इसलिये थी की यह मंत्री अपने स्वामी का बहुत वफादार था और युवराज की आकांक्षाओं को उसने बड़ी सफलता के साथ मटियामेट कर दिया था।[2] शाहजादा कई बार विद्रोह के चिन्ह प्रकट कर चुका था। उसका इरादा स्वतन्त्र होने का था। अंत जब अकबर ने अबुल फजल को दक्षिण के अभियानों से परामर्श के लिये बुलवाया तो सलीम को उसको अन्त करने का अवसर प्राप्त हो गया।[3]

अबुल फजल एक कुशल साहित्यकार था। मआसिर उल उमरा के लेखक शाह नवाज खा ने अपने संस्मरणों में अबुल फजल के विषय में लिखा है कि प्राय यह कहा जाता है कि अबुल फजल काफिर था, कुछ कहते हैं कि वह हिन्दू था या अग्निपूजक था या स्वतन्त्र विचारक था और कुछ तो यहा तक कहते हैं कि वह नास्तिक था। परन्तु अन्य लोग अधिक न्याय की बात कहते है। वे कहते हैं कि वह सब धर्मों को मानता था और सूफियों की भांति अपने आपको पैगम्बर के कानून से ऊपर समझता था। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसका चरित्र बड़ा ऊंचा था और वह सब लोगों के साथ शान्तिपूर्वक रहने का इच्छुक था। उसने कभी कोई अनुचित बात नहीं कही। उसके घर में गाली, वेतन रोकना, भय दण्ड आदि का अस्तित्व नहीं था और उसके नौकर कभी अनुपस्थित नहीं रहते थे। यदि वह किसी भी आदमी को नियुक्त कर देता जो बाद में बेकार सिद्ध होता तो वह उसको हटाता नहीं था परन्तु जहां तक सम्भव होता वहां तक उसे बने रहने देता था। क्योंकि वह प्राय कहा करता था कि यदि वह उसको हटायेगा तो लोग कहेंगे कि उसमें व्यक्ति को परखने की बुद्धि का अभाव है। इसलिये उसने अनुपयुक्त व्यक्ति की नियुक्ति की। जिस दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता था, उस दिन वह अपने सारे घर का निरीक्षण करता था और सूचि अपने पास रखता था। वह गत वर्ष

1– रिजवी, एस ए, ए – मुगलकालीन भारत, हुमायूं भाग प्रथम पृष्ठ 39
2– इलियट एवं डाउसन – भारत का इतिहास (षष्ठम खण्ड) पृष्ठ 2
3– इलियट एवं डाउसन – भारत का इतिहास (षष्टम खण्ड पृष्ठ 2)

की हिसाब बहियो को जला देता था। वह अपने कपड़ों की सब सदर्ब अपने नौकरो को दे दिया करता था और अपने पाजामें अपने सामने जलवा दता था[1]

शाहनवाज खा ने आगे लिखा है कि "उसकी भूख बडी असाधारण थी। ऐसा कहा जाता है कि पानी और शोरबे के अतिरिक्त वह बाईस सेर भोजन करता था। उसका पुत्र अब्दुल रहमान उसके साथ बैठता था। उसकी रसोई का जमादार एक मुसलमान था वह भी हाजिर रहता था और वे दोनों देखा करते थे कि अबुल फजल एक ही चीज को दुबारा खाता है या नही। यदि वह खाता था तो वही चीज दूसरे दिन बनाई जाती थी। यदि उसे किसी चीज मे स्वाद नही आता था तो वह अपने पुत्र से कहता था कि इसको चखो और फिर उस दरोगों को दे देता था। परन्तु इस विषय मे एक भी शब्द नही बोला जाता था। जब अबुल फजल दक्खिन मे थों तो उसके खाने का विलास इतना बढ गया था कि लोगो को विश्वास नही होता था। एक बहुत बडे डेरे म एक हजार चीजें बनाकर रखी जाती थी और अमीरो मे विभक्त कर दी जाती थी। उसके पास एक दूसरा डेरा लगता था जिसमे गरीब और अमीर सब लोग खाने के लिये आते थे और दिन भर खिचडी पकती रहती थी और जो मागता था उसे दी जाती थी।[2]

अबुल फजल के तीन पत्नियां थी। प्रथम पत्नी हिंदुस्तानी थी जिसके साथ माता पिता ने उसका निकाह किया था। दूसरी पत्नी कश्मीर की यात्रा म उसे प्राप्त हुई थी तथा तीसरी पत्नी इरानी थी। तीन पत्नियां होने के बावजद भी उसके अब्दुरहमान नामक एक ही पुत्र था। यद्यपि जहागीर ने अबुल फजल का वध करवाया था परन्तु उसके पुत्र अब्दुरहमान के साथ उसने अच्छा व्यवहार किया। जहागीर न अब्दुरहमान को न केवल दो हजार का मनसबदार बनाया अपितु उसे "अफजल खा" की उपाधि भी प्रदान की। कुछ वर्षो बाद बिहार के सूबेदार के पद पर उसे नियुक्त कर दिया और गोरखपुर की जागीर दे दी।[3] अब्दुरहमान की मृत्यु पटना म अबुल फजल की मृत्यु के ग्यारह वर्ष बाद ही हो गई। अबुल फजल अपनी ऐतिहासिक कृति के कारण इतिहास म सदा के लिये अमर हो गया।

डा० रिजवी के अनुसार 'अकबरनामा के अतिरिक्त उसने' आयरे दानिश" की

1– इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (भाग 6) पृष्ठ 2
2– इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (भाग 6) पृष्ठ 2
3– नूनिया बी. एन अकबर महान् पृष्ठ 498

रचना की जो कि "अनवारे सुहैली" का ही सरल एवं सुबोध रूप है। महाभारत के अनुवाद तथा "तारीखे अल्फी" के प्राक्कथन की भी उसी ने रचना की। उसकी रचनाओं में उसके पत्रों का संग्रह जिसे उसकी बहिन के पुत्र अब्दुस्समद बिन अफजल मुहम्मद ने 1606-07 ई० (1015 हि०) में संकलित किया, बड़ा प्रसिद्ध है। यह संकलन "मुकाते बात" ईंशाए अबुल "फज़ल" अथवा "मुकातेबाते अबुल फजल" के नाम से प्रसिद्ध है। उसकी एक अन्य रचना 'रुक्कात अबुल फजल' अथवा 'अबुल फजल के पत्रों का संकलन" के नाम से प्रसिद्ध है। किन्तु इसमें सभी पत्र जाली हैं और किसी ने अबुल फजल की प्रसिद्धि से लाभ उठाकर उसके नाम से यह रचना तैयार की है। फैजी के पत्रों के संग्रह 'लनाएफ फैजी' नामक ग्रंथ में अबुल फजल की एक अन्य रचना "मुनाजात" भी सम्मिलित है।"[1] अबुल फजल की सबसे प्रसिद्ध रचना अकबरनामा' एवं आइने अकबरी है। अकबरनामा का जिस क्रम में विभाजन किया गया था, उसके अनुसार आइने अकबरी अकबरनामा का तीसरा भाग है किन्तु यह एक पृथक ग्रंथ के रूप में ही अधिक प्रसिद्ध है।

अकबरनामा की भाषा और शैली :

मआसिर उल-उमरा के लेखक शाहनवाज खां ने अबुल फजल की शैली की प्रशंसा करते हुए यहां तक लिखा है कि "उसकी शैली महान है और दूसरे मुन्शियों की भांति उसमें न पारिभाषिकता है और सारहीन अलंकरणता है। उसके शब्दों में ओज है, उसके वाक्यों की रचना सुन्दर है, उसके समास उपयुक्त हैं। और उसकी युक्ति बड़ी मधुर है। वास्तव में किसी अन्य लेखक के लिये उसका अनुसरण करना बहुत कठिन है।[2]

ब्लोचमैन ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि अबुल फजल की शैली के विषय में जो उपयुक्त बात की गई है उसके बाद कुछ और लिखना अनावश्यक है। बुखारा का बादशाह अब्दुल्ला कहा करता था कि वह अकबर के तीर से इतना नहीं डरता जितना अबुल फजल की कलम से डरता है। भारत-वर्ष में सर्वत्र उसको महान् मुंशी माना जाता है। उसके साहित्य का सब मदरसों में अध्ययन किया जाता है। प्रारम्भ में वह छात्र को कठिन और परेशान करने वाला प्रतीत होता है। परन्तु वे सब प्रकार से अच्छी शैली के नमूने हैं। यदि फारसी भाषा का अच्छा ज्ञान हो और अबुल फजल की शैली में अच्छी गति हो

1– रिजवी, एस० ए० ए० – मुगलकालीन भारत (हुमायूं भाग प्रथम) पृष्ठ 40 समीक्षा सम्बन्धी

2– इलियट एवं डाउसन – भारत का इतिहास (षष्ठम खण्ड) पृष्ठ 4

तो उसके ग्रंथों को पढने मे आनन्द आता है। उसकी रचना अद्वितीय है। उसका अध्ययन तो सर्वत्र होता है परन्तु उसका अनुसरण न तो कोई कर सकता है और न अभी तक किसी ने किया है।"[1]

डा० मथुरालाल शर्मा ने लिखा है कि अबुल फजल की भाषा जटिल और आडम्बरपूर्ण है। उसने अकबर की ऐसी अत्यधिक प्रशंसा की है जिसको लज्जाजनक चाटुता कहा जा सकता है। उसने अकबर के प्रत्येक काय को उचित और आवश्यक बतलाया है और उसके क्रूरतापूर्ण कर्म पर भी औचित्य का पर्दा डालने का प्रयास किया है। अकबरनामा के कितने ही पृष्ठ चाटुता से भरे हुए हैं। यह सत्य है कि अकबर की कृपा से अबुल फजल इतने ऊंचे पद पर पहुचने मे सफल हुआ था इसलिये यह चाटुता अस्वाभाविक तो नही कही जा सकती परन्तु इसका इतिहास से कोई सम्बन्ध नही है। इस चाटुता का संक्षिप्त उदाहरण निम्नलिखित है।

"अकबर की आख सूर्य के समान है। उसका हृदय सत्यार्पण के लिये गुणों की पथशाला है। उसके ध्येय शुद्ध है। उसकी बुद्धिपूर्ण है। वह प्रतिभा सम्पन्न है। उसमे अपार क्षमाशीलता है। उसका हृदय शुद्ध है और उस पर सांसारिकता का कोई धब्बा नही है। इतने असंख्य गुण न जाने कैसे एक व्यक्ति मे एकत्र हो गये है। मेरी भाषा मे इतनी शक्ति नही है कि उसकी पर्याप्त प्रशंसा कर सकूं। उसके गुणों का वर्णन केवल फरिश्ता को ही है।"[2]

बी० एन० लूनिया ने अकबरनामा की भाषा और शैली के बारे मे लिखा है कि, यद्यपि अकबरनामा की भाषा अत्यन्त क्लिष्ट है तथा अलंकारो के बाहुल्य से वह अत्यधिक जटिल हो गई है तथापि वह अकबर के शासनकाल का सर्वश्रेष्ठ और प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थ है। इतिहासकार के रूप मे अबुल फजल की शैली शुष्क, मिश्रित और अत्यधिक चापलूसी से ओतप्रोत है। वह अपने संरक्षक सम्राट अकबर को जिसे वह महान् मानव और देवतुल्य समझता था। अपने ग्रंथो मे खूब स्तुति और चापलूसी करता है। परन्तु इसके साथ ही वह अकबर के शासनकाल के तथ्यो का उल्लेख ही नही करता अपितु उनमे निहित मन्तव्यो को भी स्पष्ट करता है। कोई विशिष्ट कदम क्यो उठाये गये, उनका भी स्पष्टीकरण कह देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने प्रसंगानुकुल आवश्यक तथ्यो को नही छिपाया है अपितु उन पर यथेष्ट प्रकाश डाला है।[3]

1– शर्मा एम० एल० (डा०) - अकबरनामा (शेख अबुल फजल कृत) अनुवादक एवं सम्पादक भूमिका

2– शर्मा, एम० एल (डा०) - अकबरनामा (शेख अबुल फजल कृत) अनुवादक एवं सम्पादक, भूमिका

3– लूनिया बी० एन० - अकबर महान्, पृष्ठ 496

अबुल फजल संस्कृत, हिन्दी, अरबी तुर्की और फारसी भाषा का विद्वान था। उसने संस्कृत भाषा में लिपिबद्ध कुछ ग्रंथों का फारसी भाषा में अनुवाद किया था। हिन्दुओं के धार्मिक ग्रंथों का भी उसने गहन अध्ययन किया था तथा शिया और सुन्नी सम्प्रदाय के धार्मिक ग्रंथ उसे कण्ठस्थ याद थे।

अकबरनामा का ऐतिहासिक महत्व

अकबरनामा निम्नलिखित भागों में विभाजित है

1. अकबर के जन्म, उसके पूर्वजों तथा अकबर के शासनकाल के 17 वर्ष तक का इतिहास जो निम्नांकित दो खण्डों में विभाजित है -

अ अकबर का जन्म, तीमूरियों की वंशावली, बाबर तथा हुमायूं के राज्य का सविस्तार हाल।

ब अकबर के सिंहासनारोहण से लेकर 17 वें वर्ष तक के मध्य तक का हाल। यह भाग शाबान 1004 हि० (अप्रेल 1596 ई०) अथवा अकबर के शासनकाल के 41 वें वर्ष में पूरा हुआ।

2 अकबर के शासनकाल के 17 वें वर्ष के मध्य से लेकर 46 वें वर्ष तक का उल्लेख।

अकबरनामा का तीसरा भाग आईने अकबरी है किन्तु अब यह एक पृथक ग्रंथ के रूप में ही प्रसिद्ध है। इसमें अकबर के राज्यकाल से सम्बन्धित आंकड़ों तथा राज्य व्यवस्था सम्बन्धी अन्य नियमों का विवरण दिया हुआ है।

वी० ए० स्मिथ ने अकबरनामा के महत्व के बारे में लिखा है कि "अबुल फजल की पुस्तक से ऐतिहासिक सामग्री उठा लेने वाली अलंकारिक भाषा के बोझ से दबाई पड़ी है और ग्रंथकार जो अपने नायक का एक लज्जाहीन चाटुकार है कभी कभी सत्य को छुपा देता है, यहां तक कि जानबूझकर विकृत भी कर देता है। फिर भी गम्भीर और प्रत्यक्ष त्रुटियों के होते हुए भी, अकबरनामा अकबर के शासन के इतिहास की आधारशिला मानी जानी चाहिये। उसका तिथिक्रम निजामुद्दीन एवं बदायूंनी की प्रतिस्पर्द्धी पुस्तकों की अपेक्षा अधिक सही और विस्तारपूर्ण है और उनकी अपेक्षा अधिक बाद तक की कथा उसमें वर्णित है।

मोरले नामक इतिहासकार का यह मानना है कि अकबरनामा अबु

1– रिजवी एस ए ए मुगलकालीन भारत (हुमायूं भाग प्रथम) समीक्षा सम्म- पृष्ठ 40-41

फजल की चाटुकारितापूर्ण ग्रन्थ है। अतः इसे एक प्रामाणिक ग्रन्थ नहीं माना जा सकता। परन्तु ब्लोचमैन ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "अकबरनामा के अध्ययन से प्रकट होगा कि यह दोषारोपण निर्मूल है और यदि हम उनके ग्रंथों की पुष्टि के दूसरे इतिहासों से तुलना कर तो हमें पता लगेगा कि वह प्रशंसा तो करता है। परन्तु अन्य भारतीय इतिहासकारों और कवियों की अपेक्षा वह कम करता है। उसमें अधिक सौंदर्य और आत्मसम्मान है। किसी भी भारतीय लेखक ने उस पर चाटुकारिता का आरोप नहीं लगाया है। हमको यह ध्यान रखना चाहिये कि नीतिशास्त्र के सब भारतीय ग्रन्थों में यह लिखा हुआ है कि बादशाह की सम्मति को बिना शर्त के स्वीकार करना चाहिये, चाहे वह ठीक हो या असंगत। क्योंकि पूर्व की समस्त कविता में चाटुकारिता भरी हुई है जिसके सामने वर्तमान कृतियाँ फीकी पड़ जाती हैं। इस दृष्टि से अबुल फजल क्षम्य है। वह प्रशंसा इसलिये करता है कि उसे सच्चा नायक मिल गया है" [1]

अकबरनामा का अंग्रेजी में अनुवाद मिसेज बेवरीज ने किया है। उन्होंने इसके बारे में लिखा था कि "मैं चाहूंगा कि कोई व्यक्ति इस पुस्तक को संक्षिप्त करें। इसमें से जन्म पत्रिकाएं और अकबर के वास्तविक और कल्पित पूर्वजों का वृत्तान्त, ज्योतिष और धूमकेतुओं का वर्णन तथा विषयान्तर निकाल दिये जायँ और बड़ी नामावलियाँ भी छोड़ दी जायें तथा शब्दाडम्बर को हटाकर भाषा सरल कर दी जायें।"

अकबरनामा के संक्षिप्त अनुवाद करने के प्रयास आरम्भ हो गये हैं। डा० मथुरालाल शर्मा ने अकबरनामा का संक्षिप्त रूप से अनुवाद किया है जो शेख अबुल फजल कृत अकबरनामा के नाम से प्रकाशित हुआ है। अकबरनामा के अतिशयोक्तिपूर्ण विवरण एवं लच्छेदार भाषा को निकाल दिया जाये तो इसके ऐतिहासिक महत्व के बारे में कोई सन्देह नहीं रह जाता।

डा० परमात्मा शरण ने इस विषय में लिखा है कि "अकबरनामा राजनीतिक एवं प्रशासनिक संस्थाओं के बारे में आईने अकबरी से कम महत्वपूर्ण स्रोत नहीं है। यद्यपि साधारणतया विवरणों में अतिशयोक्ति और अबुल फजल की लच्छेदार भाषा के कारण अध्ययनकर्ता के धैर्य पर बड़ा जोर पड़ता है। परन्तु उसके पठन में जो श्रम करना पड़ता है उसका प्रतिफल भी यथेष्ट मिलता है क्योंकि भाषा की गहनता के बीच शासन के कार्य संचालन एवं संगठन के सम्बन्ध में मूल्यवान सूचनायें प्राप्त होती है। सत्य तो यह है कि अकबरनामा से ही हमें पता चलता है कि प्रशासनिक संयन्त्र की विभिन्न शाखाओं का अकबर

1– इलियट एवं डाउसन – भारत का इतिहास (पञ्चम खण्ड) पृष्ठ 6-7

न किस प्रकार क्रमशः विकास करके उन्हें परिपक्व बनाया था। हमें आईन में जो कमियाँ मालुम पड़ती हैं उनकी अकबरनामा से बहुत अंशों में पूर्ति हो जाती है। इस प्रकार अकबरनामा जहाँ तक प्रशासनिक प्रणाली का सम्बन्ध है आईन का परिशिष्ट का काम करता है।[1]

अबुल फजल ने घटना लिखने से पूर्व छोटी छोटी प्रस्तावना लिखी है। इनसे हमें समकालीन राजनीतिक तथा धार्मिक विचारधारा के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। अबुल फजल ने लिखा है कि 'बुद्धि के अनेक रहस्य एवं गूढ़ बातें विषयानुसार विभिन्न स्थानों पर लिख दी गई हैं। यदि इन गूढ़ बातों तथा रहस्यों को मूल इतिहास से पृथक कर दिया जाय तो बुद्धिमत्ता सम्बन्धी चुनी हुई बातों से परिपूर्ण एक चुना हुआ ग्रन्थ तैयार हो जायेगा।[2] डा० रिजवी ने लिखा है कि "अबुल फजल स्वयं समझता था कि उसकी व्यवस्थाओं को पढ़कर लोग उसे चापलूस ही समझेंगे और इस बात के खण्डन का भी उसने प्रयत्न किया है।'[3]

अकबरनामा के अनुवाद

शेख अबुल फज़ल कृत अकबरनामा अब्दुर्रहीम द्वारा सम्पादित और एशियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा बिलिओथिका इण्डिका सीरीज़ में प्रथम भाग 1877 ई०, द्वितीय भाग 1881 ई० और, तृतीय भाग 1887 ई० में प्रकाशित हो चुका है। हेनरी बेवरीज के द्वारा इसका अंग्रेजी अनुवाद किया गया था जिसे तीन भागों में एशियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा बिलिओथिका इण्डिका सीरीज में प्रकाशित किया गया था। इसका प्रकाशन 1897-1910 ई० के बीच हुआ था। बेवरीज का अनुवाद प्रामाणिक माना जाता है तथा उनके द्वारा दी गई पाद टिप्पणियां महत्वपूर्ण हैं।[4]

1- परमात्मा शरण - मुगलों का प्रान्तीय शासन (1526-1658 ई०) पृष्ठ 505
2- रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूं भाग प्रथम) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 31
3- रिजवी एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूं भाग प्रथम) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 31
4- श्रीवास्तव, ए एल (डा०) - अकबर महान् भाग 1 पृष्ठ 522

सैयद अतहर अब्बास रिजवी ने अकबरनामा का अनुवाद किया है। डा० मथुरालाल शर्मा ने इसका संक्षिप्त अनुवाद किया है। इलियट एवं डाउसन की पुस्तक भारत का इतिहास के छठे भाग में दिया हुआ इसका अनुवाद पठनीय है।

अबुल फजल कृत आईने अकबरी

यद्यपि यह अकबरनामा का तीसरा भाग है तथापि आज यह एक प्रथक ग्रंथ के रूप में प्रसिद्ध है। इसमें अकबर के राज्यकाल से सम्बधित आंकड़ों तथा राज्य व्यवस्था सम्बन्धी अन्य नियमों एवं समस्याओं का विस्तार से वर्णन हुआ है। वी० ए० स्मिथ ने आईने अकबरी का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि अकबर की शासन प्रणाली को जानने के दृष्टिकोण से यह एक अमूल्य ग्रंथ है। समकालीन सभी भारतीय तथा विदेशी इतिहासकार वी० ए० स्मिथ के इस मूल्यांकन से सहमत हैं। इस ग्रन्थ को एशियाटिक सोसायटी बंगाल ने बिब्लियो थिका इण्डिका सीरीज में तीन भागों में प्रकाशित कर दिया है। इस ग्रन्थ के प्रथम भाग का अंग्रेजी अनुवाद ब्लोचमैन (ब्लाकमैन) ने किया था। द्वितीय भाग का अंग्रेजी अनुवाद एच० एस० जैरट के द्वारा किया गया था। सर जदुनाथ सरकार के संशोधनों और टिप्पणियों सहित इसका द्वितीय संस्करण 1948 ई० में प्रकाशित हुआ था। इसके तृतीय भाग का अनुवाद भी जैरट के द्वारा ही किया गया था। जिसे जे० एन० सरकार ने पुनः सम्पादित किया और यह 1948 ई० में प्रकाशित हुआ।

डा० श्रीवास्तव ने आईने अकबरी के बारे में लिखा है कि 'सभी विभागों और विषयों पर अकबर के कानूनों का एक कोष सा है और कुछ बाहरी बातों के सिवाय उसके साम्राज्य के मूल्यवान बारीक से बारीक आंकड़े ऐतिहासिक तथा अन्य टिप्पणियों सहित प्रस्तुत करता है।[1]

डा० परमात्मा शरण ने आईने अकबरी के महत्व के बारे में लिखा है

1— श्रीवास्तव, ए० एल० (डा०) - अकबर महान् भाग प्रथम, पृष्ठ 531

कि "उस समय की राजनीतिक संस्थाओं के सम्बन्ध में आइने अकबरी आज भी हमारी अप्रतिम स्रोत है। आईन विभिन्न विषयों जैसे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक आदि के सम्बन्ध में विवरणों और आंकड़ों की खान है। परन्तु उसमें शासन प्रणाली के वास्तविक कार्य संचालन पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला गया है और न उसमें शासन के विभिन्न विभागों और शाखाओं के सम्बन्ध में पर्याप्त सूचनाएँ दी गई हैं फिर भी आईन का गहराई से अध्ययन करने से हमें अनेक बातों का पता चलता है और हमारी मेहनत सफल हो जाती है। कतिपय प्रकरणों पर आईन हमें केवल सिद्धान्तों एवं आदर्शों का ज्ञान कराती है वास्तविक तथ्यों का नहीं, परन्तु कतिपय अन्य विषयों पर वास्तविक तथ्यों और विवरणों का भी परिचय देती है। उदाहरण के लिए, राजतन्त्र के सिद्धान्त एवं कर लगाने के स्रोत, प्रभुसत्ता के उद्भव और स्वरूप तथा उसके अधिकारों व कर्तव्यों विभिन्न विभागों एवं शाखाओं, जिनमें सरकार का विभाजन होना चाहिये तथा उन व्यक्तियों के गुण विशेष जिन्हें उन विभागों एवं शाखाओं का कार्यभार सौंपा जाय-इन सबके सम्बन्ध में आईन में बड़ा गहन और सूक्ष्म विवेचन किया गया है। उसमें विभिन्न जिम्मेदार अधिकारियों के अधिकारों एवं कर्तव्यों, नियुक्तियों तथा वेतन देने आदि के नियमों के सम्बन्ध में पूर्णरूप से विवेचन किया गया है। आईन में दिये गये आंकड़ों की सूचियों से शासन तथा उसके अधीनस्थ राजाओं एवं जागीरदारों के पारस्परिक वास्तविक सम्बन्धों पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।"[1]

डब्ल्यू० एच० मोरलैण्ड ने अपनी पुस्तक "मुस्लिम भारत की ग्रामीण व्यवस्था" में आइने अकबरी की समालोचना करते हुए लिखा है कि 'आईने अकबरी यद्यपि अकबरनामा के ही अन्तिम तथा निर्णायक अध्यायों के रूप में है। फिर भी उसके पन्नों में कई नवीन एवं विशिष्ट अंश मिलते हैं जिनका अकबरनामा में अभाव है। जैसा कि भूमिका में कहा जा चुका है कि इस पुस्तक का उद्देश्य यही प्रतीत होता है कि वह केवल उन्हीं कार्यों का वर्णन करे जो अकबर को भौतिक रूप में तथा एक बादशाह को महान् बनाते हैं। परन्तु अकबर ने कुछ कार्य आध्यात्मिक नेताओं के स्तर पर भी किये उसको इस ग्रन्थ में स्थान नहीं मिला है और तारीफ तो यह है कि ऐसा जानबूझकर किया गया है। लेखक का स्वयमेव कहना और उसका कथन न्यायपूर्ण भी है कि वह विद्यार्थियों को एक ऐसा उपहार दे रहा है जिसे पूर्णतः समझ पाना कठिन है, जो है तो सरल या यों कहें कि देखने में सरल है परन्तु वास्तव में कठिन है।'

1– परमात्मा शरण – मुगलों का प्रान्तीय शासन (1526-1658 ई०) पृष्ठ 504

"यह ग्रन्थ कितने ही विरोधीनायों का सम्मिश्रण है। इस ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध में अधिकांश हिन्दू संस्कृति का वर्णन हुआ है जिससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके पूर्वार्द्ध में अकबर के उन कार्यों का वर्णन है कि जिन्हें उसने समय समय पर सल्तनत के विभिन्न महकमों को अधिक कार्य कुशल बनाने के लिये किया है। अतः यही भाग अपने उद्देश्य को पूरा करता है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो इन दोनों ग्रन्थों (अकबरनामा तथा आईन अकबरी) को एक साथ पढ़कर विश्वासपूर्वक यह कह सके कि ये दोनों एक ही विद्वान के द्वारा लिखे गये हैं। आईने अकबरी में वर्णन की इतनी अधिक शैलियां व्यवहार में लाई गई हैं कि इसे शैलीविहीन कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। असमानुपात विभिन्नता सर्वत्र ही दृष्टिगोचर होती है। भाषा जटिल अलंकारात्मक एवं पारिभाषिक शब्दावली युक्त है। जैसा कि ब्लाकमैन ने इस ग्रन्थ की भूमिका में कहा है कि, कुछ छोटे छोटे वर्णन अवश्य ही अबुल फजल के लिखे मालूम होते हैं। परन्तु वे वर्णन जो हमारे अध्ययन के लिये अधिक काम के हैं वे अवश्य ही किसी दूसरे लेखक द्वारा लिखे गये मालूम होते हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि विभिन्न महकमों के अधिकारियों ने समय पर जो कुछ लिखा था, यह ग्रन्थ उन्हीं लेखों का संकलन मात्र है। जिसका सम्पादन अबुल फजल ने किया। निःसन्देह कई स्थलों पर उसने स्वयं भी कुछ जोड़ तोड़ कर दिया है। वास्तव में विभिन्न विभागों द्वारा दिये गये वर्णनों का कोई भी अंश अबुल फजल ने छोड़ा नहीं है। तत्कालीन ग्रामीण व्यवस्था के विषय में जो कुछ भी लिखा गया है, वह अवश्य ही लगान के किसी अधिकारी की देन है। जो तत्सम्बन्धी तमाम बातों की विस्तृत जानकारी रखता था तथा विभागीय असफलताओं को छिपाने पर कमर कसे हुए था। निःसन्देह इन वर्णनों के विषय के विस्तार आदि के बारे में हम चाहें जो कहें परन्तु यह नहीं कह सकते कि लेखक या लेखकों में तत्सम्बन्धी ज्ञान का अभाव था। वे अपने विषय को पूरा कर सकते थे, बल्कि यह भी कह सकते हैं कि अपने विषयों में उनकी जानकारी इतनी अधिक थी, कि लिखते समय यह निश्चय नहीं कर सकें कि कितना लिखा जाना चाहिये"[1]

मोरलैण्ड का मानना है कि अकबरनामा और आईने अकबरी अलग अलग ग्रन्थ होते हुए भी एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। "कई बातें ऐसी हैं जिनका वर्णन आईने ने सारांश रूप में कर दिया है तथा उसी बात के विस्तृत वर्णन के लिये अकबरनामा का हवाला दे दिया है और सचमुच अकबरनामा उस विषय की ओर विस्तृत जानकारी देता है। परन्तु कुछ बातें ऐसी भी हैं जो कि अकबरनामा में

1. मोरलैण्ड, डब्ल्यू एच - मुस्लिम भारत की ग्रामीण व्यवस्था, पृष्ठ 108 09

पूरे विस्तार के साथ वर्णन मे आई है, परन्तु आईने मे उनका कुछ भी जिक्र नहीं किया गया है। अत इनमे से किसी एक ग्रन्थ मे उस समय का समुचित अध्ययन तब तक पूरा नही होता जब तक कि दूसरे को न पढ़ लिया जाये"।[1]

संक्षेप मे, आईने अकबरी से अकबर के समय की सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक संस्थाओं एवं धार्मिक स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

1- मोरलैण्ड, डब्ल्यू एच - मुस्लिम भारत की ग्रामीण व्यवस्था, पृष्ठ 110



8 | अब्दुल कादिर बदायूनी : मुन्तखाब-उत-तवारीख

अब्दुल कादिर बदायूनी ने मुन्तखाब-उत-तवारीख नामक ग्रन्थ लिखा, जो हिन्दुस्तान में तारीख-ए-बदायूनी के नाम से भी प्रसिद्ध है। यह ग्रन्थ भी तीन भागों में एशियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा बिबलिओथिका इण्डिका सीरीज में प्रकाशित हो चुका है। इसके प्रथम भाग में दिल्ली के सुलतानों का इतिहास दिया हुआ है। यह हुमायूं के राज्यकाल के अन्त तक है। द्वितीय भाग में अकबर के शासनकाल का 1595 ई० तक का इतिहास है। तृतीय भाग में मुस्लिम सन्तों की जीवनियों का विवरण दिया हुआ है। इसके प्रथम भाग का अंग्रेजी अनुवाद लेफ्टिनेन्ट कर्नल रैंकिंग ने किया था। द्वितीय भाग का अनुवाद डब्ल्यू. एच. लो के द्वारा किया गया था। इन दोनों भागों के अनुवाद में त्रुटियां रह गई हैं। अब इसमें संशोधन किया जाना चाहिये। तृतीय भाग का अनुवाद सर वूल्जले हेग के द्वारा किया गया था। यह अनुवाद बहुत अच्छा हुआ है।[1]

बदायूँनी का संक्षिप्त जीवन परिचय

डा० रिजवी ने लिखा है कि *'अब्दुल कादिर बदायूनी बिन मुलुक शाह बिन हामिद बदायूनी का जन्म 17 रबी उस्सानी 947 हि० (21 अगस्त, 1540 ई०) को टोडा अथवा टोडा भीम (जयपुर) में हुआ था। उसके जन्म के कुछ दिनों बाद ही उसे बसावर जहां उसके अन्य परिवार वाले थे पहुंचा दिया गया। 12 वर्ष की अवस्था में उसका पिता उसे सम्भल में शेख हातिम सम्भली से शिक्षा दिलाने के लिये ले गया। 966 हि० (1558-59 ई०) में वह बसावर से आगरे पहुंचा और वहां कुछ समय तक उसने शेख मुबारक नागौरी से अबुल फजल तथा फैजी के साथ साथ शिक्षा प्राप्त की। 969 हि० (1562 ई०) में उसके पिता की आगरा में मृत्यु हो गई और वह बदायूं चला गया। 973 हि० (1565-66 ई०) में वह बदायूं से पटियाला के जागीरदार हुसैन खां की सेवा में चला गया और लगभग 9 वर्ष तक उसकी सेवा में रहा। हुसैन खां के साथ साथ ही वह लखनऊ तथा कान्त व गोला भी पहुंचा।

1– डा० श्रीवास्तव ए एल – अकबर महान् (भाग प्रथम) पृष्ठ 525

981 हि० (1574 ई०) के अंत में यह हुसैन खां से पृथक होकर बदायूं से होता हुआ आगरा पहुंचा और जलाल खां कुरची तथा हकीम एनुलमुल्क की सहायता से अकबर के दरबार में उपस्थित हुआ। 982 हि० (1574-75 ई०) में वह ईमाम और 983 हि० (1575-76 ई०) में सात इमामों में से युद्ध के दिन नमाज पढ़ाने के लिये इमाम नियुक्त हुआ। उसी वर्ष उसे मन्दे मआश के रूप में बसावर में एक हजार बीघा भूमि प्रदान हुई किन्तु 997 हि० (1588-89 ई०) में उसे बसावर के स्थान पर बदायूं में भूमि दे दी गई। 982 हि० (1574 ई०) से अपनी मृत्यु तक यह अकबर के दरबार के साहित्यिक कार्यों में मुख्य भाग लेता रहा। कभी उसे संस्कृत के ग्रंथों के अनुवाद का कार्य सौंप दिया जाता, कभी इतिहास की रचना और कभी कोई अन्य साहित्यिक कार्य। कभी कभी उसे ऐसे अनुवाद के कार्य भी सौंपे गये जिनमें उसे कोई रुचि नहीं थी, किन्तु फिर भी शासन के आदेशानुसार इस उन कार्यों को सम्पन्न करना पड़ता था।[1]

बदायूंनी संगीतप्रिय था, वीणा, भी अच्छी तरह बजा लेता था और मधुर कण्ठ से गाता भी था। फारसी के शेर और अरबी की आयतें वह बहुत ही मधुरता से पढ़ता गाता था। मुख्यतः इसी गुण से प्रसन्न होकर, अकबर ने उसे अपने दरबार के सात इमामों में से एक इमाम नियुक्त किया था और उसे "इमाम अकबरशाह" कहा जाता था।[2]

बदायूंनी विद्वान होने के साथ साथ कट्टर इस्लामी सैनिक भी था। हल्दी घाटी के युद्ध के समय वह मुगल सेना में उपस्थित था। उसने युद्ध का आंखों देखा वर्णन लिखा है। "जब राणा युद्ध भूमि से हट गया था और युद्ध लगभग समाप्ति पर आ गया था तब बदायूंनी ने इस्लामी भावना से प्रेरित होकर रण क्षेत्र में मित्र शत्रु राजपूतों पर समान रूप से निशाने लगाये। उसने हिन्दुओं के के रक्त से अपनी दाढ़ी रंगने का प्रयत्न किया। उसकी मान्यता थी कि इस प्रकार उसने काफिरों के विरुद्ध युद्ध करके उनको मारकर इस्लाम की सेवा की और गाजी का पुण्य अर्जित किया। हल्दी घाटी के युद्ध में राणा प्रताप का एक प्रसिद्ध हाथी रामप्रसाद मुगलों के हाथ लग गया था। हल्दी घाटी की यह उल्लेखनीय लूट थी। बदायूंनी यह हाथी लेकर फतेहपुर सीकरी पहुंचा और मार्ग में विजय की डींग हांकता रहा। उसने यह हाथी अकबर के सम्मुख पेश किया। बदायूंनी ने हाथी का नाम 'पीर प्रसाद' रखा क्योंकि यह सब पीर की कृपा से हुआ था।

1- रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूं भाग दो) समीक्षा सम्बंधी पृष्ठ 22-23

2- लूनिया, बी एन - अकबर महान् पृष्ठ 500

अकबर ने प्रसन्न होकर बदायूनी को मुट्ठी भर अशर्फियां पुरस्कार में दी जो गिनने पर बाद में 96 निकली।[1]

बदायूँनी की रचनायें

मुन्तखाब-उत तवारीख के अतिरिक्त बदायूँनी ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की[2]

(1) किताबुल अहादीस - इसमें 40 हदीसें हैं जिनमें जिहाद की विशेषता बताई गई है। अब इस पुस्तक का कोई पता नहीं।

(2) नामए खिरद अफजा यह सिंहासन बत्तीसी नामक संस्कृत ग्रन्थ का भाषान्तर है। यद्यपि सिंहासन बत्तीसी के अनेकों अनुवाद उपलब्ध हैं किन्तु अब्दुल कादिर बदायूनी का कोई अनुवाद प्राप्य नहीं।

(3) रज्मनामा - यह महाभारत का फारसी अनुवाद मुख्य रूप से नकीब खां के सुपुर्द था, किन्तु मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी को भी इस कार्य में सहायता करनी पड़ी। बहुत से पण्डित भी अनुवाद में सहायता करने के लिये नियुक्त हुए थे।

(4) रामायण का अनुवाद - अकबर के आदेशानुसार मुल्ला कादिर बदायूनी ने 992 हि० (1584 ई०) में कुछ पण्डितों की सहायता से रामायण का अनुवाद प्रारम्भ किया और उसके महत्वपूर्ण अंशों का अनुवाद लगभग चार वर्ष में पूरा करके 1589 ई० में अकबर की सेवा में समर्पित किया।

(5) तारीखे अलफी इसकी रचना में भी उसने महत्वपूर्ण भाग लिया।

(6) नजातु रशीद - इस ग्रन्थ में इतिहास से सम्बन्धित कहानियां हैं और सुन्नी धर्म की समस्याओं का वर्णन किया गया है।

(7) तरजुमए तारीखे कश्मीर-1590 ई० में उसने मुल्ला मुहम्मद शाह शाहाबादी द्वारा अनूदित कश्मीर के इतिहास का सम्भवतः राजतरंगिणी का संक्षिप्त फारसी अनुवाद तैयार किया। इसकी भी किसी प्रति का अभी तक कोई पता नहीं चल सका है।

1– लूनिया, बी एन - अकबर महान् पृष्ठ 501

2– रिजवी, एस ए ए - मुगलकालीन भारत (हुमायूँ भाग दो) समीक्षा सम्बन्धी पृष्ठ 23-24

(8) तरजुए मौजमुल बुल्दान- दस या बारह ईरानी तथा हिन्दुस्तानी विद्वानों को याकूत के इस महत्वपूर्ण अरबी ग्रन्थ के फारसी अनुवाद का आदेश हुआ जो हिस्सा बदायूँनी को सुपुर्द हुआ था, उसे उसने एक महिने में पूरा कर लिया। इस अनुवाद का अब कोई पता नहीं।

(9) इन्तखाब जामए रशीदी - अकबर ने कुछ विद्वानों को जामए रशीदी का अरबी से फारसी भाषा में अनुवाद कर उसका संक्षिप्त संस्करण तैयार करने का आदेश दिया। उस समय उसने बदायूँनी को भी इस कार्य में सहयोग करने के लिए कहा था।

(10) बहरुल असमार - कश्मीर के सुलतान जैनुल आबदीन के आदेशानुसार संस्कृत की कुछ कहानियों का एक संग्रह तैयार किया गया था। बहरुल असमार उन्ही कहानियों का फारसी संस्करण है। बदायूँनी को इसका नया संस्करण तैयार करने का आदेश हुआ था। इस ग्रन्थ का भी अब तक कोई पता नहीं है।

मुन्तखाब-उत-तवारीख का ऐतिहासिक स्रोत के रूप में महत्व

बदायूँनी की सबसे महत्वपूर्ण कृति मुन्तखाब उत तवारीख है। यह तीन भागों में विभाजित है -

(1) प्रथम भाग में सुबुक्तगीन (997 998 ई०) से हुमायूँ की मृत्यु तक का इतिहास है।

(2) द्वितीय भाग में अकबर के राज्यकाल के 1595 96 ई० तक का इतिहास है एवं

(3) तृतीय भाग में समकालीन सूफियों, विद्वानों, हकीमों, तथा कवियों की संक्षिप्त जीवनियां दी हुई हैं।

बदायूँनी रूढ़ीवादी एवं कट्टर सुन्नी मुसलमान था जिसके धार्मिक विचार काफी संकीर्ण थे। इसलिये उसने अकबर के उदार धार्मिक विचारों का सदैव विरोध किया और उसकी धार्मिक नीति की कटु आलोचना की। बदायूँनी के विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से हमें उसकी कृति में देखने को मिलता है।

बी एन लूनिया ने लिखा है कि 'बदायूनी ने अकबर के शासन की प्रतिक्रिया से निन्दा की है। उसने अपनी कलम का दुरुपयोग किया है। इस ग्रन्थ में उसने उदार और सहिष्णुता के विचार वालो पर खुलकर दंड लगाने में

कोई कसर नहीं रखी। अकबर और उसके जैसे विचारवालों पर मुल्ला ने बेरहमी से कलम उठाई थी। यह ग्रंथ मुल्ला बदायूँनी ने 23 फरवरी 1596 ई० को समाप्त कर दिया। पर इसमें अकबर और उसके शासन की कटुतम आलोचना होने के कारण मुल्ला को इसके नष्ट हो जाने का भय था इसलिए अकबर के शासनकाल में इसको छिपाता रहा और ग्रंथ को सुरक्षित रखकर अगली पीढ़ी तक पहुंचाने की व्यवस्था की। जब जहांगीर को इस ग्रंथ के विषय में मालूम हुआ तो उसने इसे नष्ट करने का प्रयास किया परन्तु तब तक इस ग्रंथ की अनेक प्रतियां बन चुकी थी। कहा जाता है कि पुस्तक को नष्ट करने के लिए जहांगीर ने बदायूँनी के उत्तराधिकारी पुत्रों को बन्दी बनाकर दरबार में बुलाया और मुन्तखाब उत तवारीख की प्रतियां जब्त करने के लिए मांगी। उन्होंने उत्तर दिया "हम तो उस समय बच्चे थे, हमें इसकी खबर नहीं थी। उन्होंने जमानत दी कि यदि हमारे पास में यह पुस्तक निकल जाये तो चाहे जो दण्ड दिया जाये। पुस्तक विक्रेताओं से भी यह पुस्तक निकले तो चाहे जो दण्ड दिया जाय। पुस्तक विक्रेताओं से भी मुचलके लिए गए कि वे इतिहास के इस ग्रंथ का क्रय विक्रय नहीं करें। परन्तु इतिहासकार खाफी खां के अनुसार समस्त कड़ाई के बावजूद भी भी मुन्तखाब उत तवारीख ग्रंथ उस समय सबसे अधिक बिकने वाला ग्रंथ था।[1]

सभी इतिहासकार, इस बात पर सहमत हैं कि बदायूनी ने अकबर की उदार और धार्मिक सहिष्णुता की नीति का विरोध किया था। इस ग्रंथ का विशेष महत्व इसलिये है कि जहां एक ओर अबुल फजल ने अकबर के शासनकाल का वर्णन चापलूसीपूर्ण तरीके से किया है, वहां बदायूँनी हमारे सामने अकबर के शासन का दूसरा पहलू प्रस्तुत करता है। वी० ए० स्मिथ ने लिखा है कि 'एक धर्मांध मुनी के दृष्टिकोण के पूर्व प्रकाश में से लिखे जाने के कारण यह पुस्तक सिद्धांत शिथिल अबुल फजल की आडम्बरपूर्ण प्रशस्ति के परीक्षण के रूप में अधिक महत्व रखती है। यह अकबर की धर्म सम्बन्धी धारणाओं के विकास की जानकारी देती है। जो ग्रंथ फारसी इतिहासों में उपलब्ध नहीं है, किन्तु यह जैसुइट लेखकों के साक्ष्य से सामान्यत सहमत है। बदायूनी ने अपने ग्रंथ में मे तिथियां सही नहीं दी है इसलिये उसका घटनाक्रम भी दोषपूर्ण है।

भाषा और शैली के बारे में बदायूनी ने स्वयं लिखा है कि 'मेरी शैली में बड़े संक्षेप से काम लिया गया है और मैंने लच्छेदार और अलंकृत भाषा का उपयोग नहीं किया है'[2] बदायूँनी ने आगे लिखा है कि, इस इतिहास का उद्देश्य है कि बड़े बड़े मुसलमान सुलतानों के कार्यों को लिखित रूप दिया जाये

1– लूनिया बी एन - अकबर महान् पृष्ठ 503

2– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (षष्टम खण्ड) पृष्ठ 390

और मेरा नाम अगली पीढ़ियों तक चले। मेरा यह इरादा केवल सत्य का उल्लेख करना है, इसलिये यदि मैं कभी कभी छोटी और तुच्छ बातों के उल्लेख पर उतर जाऊ तो ईश्वर मुझे क्षमा करें।"

इस सम्बन्ध मे इलियट एव डाउसन ने लिखा है कि 'यह उन थोडी सी पुस्तकों म से हैं जिसका अनुवाद करने का परीश्रम सार्थक होगा परन्तु इसके लिये फारसी भाषा का अधिक अच्छा ज्ञान होना चाहिये और समकालीन इतिहासकारों का भी अच्छा परिचय होना आवश्यक है। अन्य अधिकाश हिन्दुस्तानी इतिहासो के लिये फारसी के अपेक्षाकृत कम ज्ञान से भी काम चल सकता है। इसका कारण यह है कि लेखक असाधारण शब्दो का ही प्रयोग नही करता है वह धार्मिक विवाद का वर्णन करता है, अपशब्दों का प्रयोग करता है, स्तुति करता है, स्वप्न की सी बातें करता हैं जीवन चरित्र लिखता है, और व्यक्तिगत तथा पारिवारिक इतिहास की छोटी छोटी बातें लिखता है। जिससे वर्णन की एकता भग हो जाती है और यह कहना कठिन हो जाता है कि सम्बन्ध की कड़ियों को कैसे मिलाया जाय।' तो भी यह स्वीकार करना पडेगा कि विषयान्तर इस पुस्तक के बडे ही रोचक भाग है। अन्य चाटुकार इतिहास लेखक अपने भावो को कभी प्रकट करते हो। विशेषत ऐसी बात तो वे लिखतें ही नही जो शासकों के कान को बुरी लगे। वे अपनी भूलों और चरित्र के दोषों को भी स्वीकार नही करते। परन्तु अब्दुल कादिर इन बातो का आत्मसन्तोष और उपेक्षा के साथ उल्लेख करता है। वह समसामयिक इतिहास को खूब जानता है और उसकी यह धारणा है कि जिन विषयो से उसे इतना अच्छा परिचय है, उनको उसके पाठक भी जानते होंगे। इसलिये वह कई घटनाओं को छोड देता है या उनका ऐसा धुंधला सा उल्लेख कर देता है कि अनुवादक को अपने ही अनुमान और ज्ञान से उन अभावों की पूर्ति करनी पडती है।'[1]

अबुल फजल और बदायूनी की तुलना

अबुल फजल और बदायूनी दोनो ही समकालीन विद्वान, लेखक और इतिहासकार थे। दोनो ही अकबर के प्रमुख दरबारी, सामन्त, और मनसबदार थे। अबुल फजल ने 20 के मनसबदार से आरम्भ किया था और अपनी विद्वता, प्रतिभा और योग्यता से 5000 के मनसब तक पहुच गया था। वह प्रशासन में भी ऊचे पद पर रहा और दक्षिण भारत में विजय के लिये आयोजित सैनिक अभियानों मे उसने बडा महत्वपूर्ण योग दिया। उसने अपनी सैन्य सगठन और सैन्य व्यवस्था को करने की प्रतिभा का भी परिचय दिया। पर बदायूँनी में ऐसी

1– इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (षष्ठम खण्ड) पृष्ठ 391

कोई सैनिक प्रतिभा नहीं थी। बदायूँनी ने भी शाही सेवा 20 के मनसब से प्रारम्भ की और शाही सेवा में निरन्तर 22 वर्ष तक रहने के बावजूद भी वह 20 का मनसबदार ही बना रहा।[1]

दोनों में मुख्य चारित्रिक अन्तर यह था कि अबुल फजल उदार और स्वतन्त्र विचारक था तथा अकबर के प्रगतिशील दृष्टिकोण का समर्थक था। वहां बदायूँनी धर्मान्ध सुन्नी था। जिसमें ईर्ष्या द्वेष, असन्तोष और तीव्र निन्दा के भाव भरे थे और जिसका दृष्टिकोण बड़ा संकीर्ण और अनुदार था। वह अकबर के प्रगतिशील विचारों का आलोचक बना रहा और इसीलिये कोई उन्नति नही कर सका।[2]

अबुल फजल और बदायूँनी दोनों ने ही फारसी में रचनायें लिखी हैं। अबुल फजल के ऐतिहासिक ग्रन्थ अकबरनामा एवं आईने अकबरी हैं और बदायूँनी का "मुन्तखाब उल-तवारीख"। यद्यपि दोनों ने अन्य ग्रन्थ भी लिखे हैं पर अबुल फजल की तुलना में बदायूँनी की रचनायें कम हैं। दोनों ने संस्कृत के कुछ ग्रन्थों का अनुवाद फारसी भाषा में किया है। अबुल फजल ने संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ "पंचतन्त्र" का अनुवाद फारसी भाषा में 'अयारे दानिश' के नाम से किया और मुल्ला बदायूँनी ने "सिंहासनबत्तीसी" का अनुवाद किया। उसने महाभारत के भिन्न भिन्न भागों का अनुवाद फारसी में "रज्मनामा" नामक ग्रन्थ के रूप में किया। रामायण का भी उसने अनुवाद किया। यद्यपि अबुल फजल और बदायूनी अपने युग के प्रसिद्ध इतिहासकार थे परन्तु दोनों की भाषा, शैली और विचार धाराओं में बड़ा अन्तर है। यद्यपि दोनों ने अपने युग की राजनीतिक और सामाजिक घटनाओं का विस्तृत वर्णन किया है। परन्तु दोनों के मत एक दूसरे के विपरीत हैं। वर्णन शैली में अबुल फजल अधिक श्रेष्ठ है। उसकी शैली अत्यन्त रोचक शैली है। उपमा और रूपक अलंकार कम प्रयुक्त किये गये हैं। पर जहां प्रयुक्त किये गये हैं वहां अत्यन्त स्वाभाविक और सुन्दरता के साथ अबुल फजल की शैली के विषय में अब्दुला उजबेग कहा करता था कि 'मैं अकबर की तलवार से इतना नहीं डरता जितना अबुल फजल की कलम से डरता हूं।'[3]

अबुल फजल ने अनेक स्थलों पर अतिशयोक्तिपूर्ण चापलूसी की भावना से वर्णन किया है। उसने अपने उदार संरक्षक सम्राट अकबर की की अनावश्यक रूप से प्रशंसा और स्तुति की है। बदायनी की शैली में इन बातों का

1– लूनिया बी एन "अकबर महान्, पृष्ठ 500"

2– प्रतापसिंह - मुगलकालीन भारत, पृष्ठ 589

3– लूनिया बी एन अकबर महान्, पृष्ठ 504

पूर्ण अभाव है। बदायूँनी ने कट्टर अनुदार सुन्नी मुसलमान होने से अकबर के उदारतापूर्ण विश्वासो, धारणाओ, प्रगतिशील नीतियो पर बड़े कटाक्ष किये हैं। उसने अकबर के शासनकाल के अधकारमय पक्ष का वर्णन किया है पर अबुल फज़ल ने प्रकाशवान पक्ष का हाल लिखा है। बदायूँनी में राजनीतिक बुद्धिचातुर्य और ऐतिहासिक दूरदर्शिता की कमी थी। उसमे इतिहास की विश्लेषण की प्रतिभा, निष्पक्ष न्याययुक्त वर्णन करने की शक्ति तथा संतुलित विवेचना और आलोचना का अभाव था। उसमे घटनाओं का सत्य और तथ्यपूर्ण वर्णन करने की क्षमता नही थी।[1]

यद्यपि अबुल फजल ने अकबर का वर्णन चापलूसीपूर्वक किया है तथापि बदायूँनी ने भी कोई कम चापलूसी नहीं की है। इस बात की पुष्टि डा० रिजवी के इस वर्णन से होती है। "अबुल फजल तथा फैजी एव अन्य लोगों को जो उन्नति अकबर के दरबार मे प्राप्त हुई उसके कारण बदायूँनी दरबार तथा दरबार के वातावरण से पूर्णरूप से रुष्ट हो गया। किन्तु उसका मेल समकालीन आलिमो से भी न हो सका। उसने अबुल फजल को चापलूस बताकर उसकी घोर निन्दा की है। किन्तु उसने स्वय दरबार में चापलूसी करने म कोई कसर न उठा रखी थी।"

इतिहासकार के रुप मे डा० रिजवी ने बदायूनी का मूल्याकन निम्न शब्दों म किया है। 'यद्यपि उसने इस बात का दावा किया है कि जो कुछ उसने लिखा है, वह सच सच लिखा है। किन्तु बहुत सी बातें जो एक ही स्थान पर लिखी हैं उनका खण्डन उसी की रचना के अन्य अशो से हो जाता है। यदि उसने धार्मिक अधिनियमों को किसी क्रम से लिख लिया होता तो अकबर के धार्मिक विचारो विकास एव धार्मिक नीति का बड़ा अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाता और उसके इतिहास का महत्व बहुत ही बढ जाता, किन्तु उसका मूल उद्देश्य इस्लाम के कल्पित ह्रास का चित्र प्रस्तुत करना था। उसके इतिहास की इस कारण उपेक्षा असम्भव है कि उसम सुन्नी धर्म के कट्टर अनुयाइयो का दृष्टिकोण भली भांति प्रस्तुत किया गया है। किन्तु केवल उसी के इतिहास अथवा उसी के जैसा दृष्टि रखने वालों की रचना के आधार पर, चाहे व जैसुइट पादरी हो, अथवा हजरत मुजद्दिद अल्फेसानी शेख अहमद सरहिन्दी, अकबर के विषय मे घटनाओ का निष्पक्ष भाव से विश्लेषण किये बिना कोई धारणा बना लेना उचित नही। इसमें सन्देह नहीं कि उसने रचना शैली मे बडी ही कुशलता प्राप्त की थी। उसने प्राय थोडे से शब्दों में ही वह प्रभाव उत्पन्न कर दिया है जो सम्भवत लम्बे चौडे विवरण से नही हो सकता था।"

1– लूनिया, बी एन - अकबर महान् पृष्ठ 504 505

═══

9 मुहम्मद कासिम हिन्दू शाह : तारीख-ए-फरिश्ता

मुहम्मद कासिम हिंदू शाह इतिहास मे फरिश्ता के नाम से प्रसिद्ध है। उसके पिता का नाम गुलाम अली हिंदू शाह था। उसने युवावस्था म अहमदनगर के सुलतान मुरतजा निजामशाह के दरबार मे नौकरी कर ली। यही उसने यह निश्चय किया कि भारतवर्ष के मुस्लिम बादशाहों तथा सूफी सन्तो का इतिहास लिखा जाये। परन्तु आवश्यक ग्रथ प्राप्त नही होने के कारण वह 28 दिसम्बर 1589 ई० को बीजापुर के सुलतान के दरबार म चला गया।

जहांगीर के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षो मे इब्राहीम आदिलशाह ने फरिश्ता को किसी काय को पूरा करने के लिये लाहौर जाने का आदेश दिया। 1614 ई० मे वह असीरगढ के किले मे भी रहा। सम्भवत 1623-24 ई० के पश्चात ही उसकी मृत्यु हो गई।

इब्राहीम आदिलशाह ने फरिश्ता को इतिहास लिखने की प्रेरणा दी। फरिश्ता ने अपनी पुस्तक 'तारीख ए फरिश्ता' को 1606 7 ई० म इब्राहीम आदिलशाह को समर्पित किया।[1]

डा० रिजवी ने लिखा है कि यह इतिहास एक प्रस्तावना के अतिरिक्त 12 खण्डो म विभाजित है।[2]

इस इतिहास की प्रस्तावना मे मुसलमानो के राज्य के पूव के हिंदू राजाओ का इतिहास मिलता है।
इस कृति के प्रथम भाग मे लाहौर के गजनवियो का इतिहास है।
दूसरे खण्ड मे देहली के सुलतानो का इतिहास है।
तीसरे खण्ड म दक्षिण के सुलतानों का इतिहास छ भागो मे विभाजित उपलब्ध होता है।

1– रिजवी, एस ए ए - उत्तरतैमूरकालीन भारत भाग दो पृष्ठ 5

2– रिजवी, एस ए ए - उत्तरतैमूरकालीन भारत भाग दो पृष्ठ 6

(1) बहमनी (2) आदिलशाही (3) निजामशाही (4) कुतुबशाही
(5) इमादशाही (6) बरीदशाही ।

चौथे खण्ड में गुजरात का इतिहास है ।
पाचवें खण्ड में मालवा का इतिहास है ।
छठें खण्ड में बुरहानपुर का इतिहास है ।
सातवें भाग में बंगाल एवं जौनपुर के शर्की सुलतानों का इतिहास है ।
आठवें भाग में सिन्ध, ठट्टा तथा मुल्तान का इतिहास है ।
नवें भाग में सिन्ध के जमीन्दारों का वर्णन किया गया है ।
दसवें भाग में कश्मीर का इतिहास है ।
ग्यारहवें भाग में मालाबार का वर्णन है ।
बारहवें भाग में हिन्दुस्तान के सूफी सन्त तथा हिन्दुस्तान का संक्षिप्त विवरण मिलता है ।

फरिश्ता ने लगभग 35 ऐतिहासिक ग्रन्थों को आधार बनाकर अपनी इस महत्वपूर्ण कृति की रचना की । उसने कुछ ऐसे ग्रन्थों का भी अध्ययन किया जिनका उपयोग तबकाते अकबरी का लेखक निजामुद्दीन नहीं कर सका था । ये ग्रन्थ निम्नलिखित हैं –

(1) बहमननामा (2) तारीखे बंगला (3) तारीखे अलफी (4) तारीखे बिनाविती (5) नसबे कुतुबी एवं (6) तुहफ्तु स्सलातीन बहमनी आदि ।

फरिश्ता का ग्रन्थ तारीखे फरिश्ता जिसे गुलशने इब्राहीमी भी कहते हैं । इसमें भी तबकाते अकबरी की भांति लगभग सम्पूर्ण भारतवर्ष का इतिहास है । डा० रिजवी ने लिखा है कि "फरिश्ता के इस इतिहास को मध्यकालीन भारतीय इतिहास में जो प्रसिद्धि प्राप्त हुई है वह किसी अन्य इतिहास को नहीं मिल सकी है और बहुत समय तक तो शोध सम्बन्धी कार्यों में केवल इसी ग्रन्थ का प्रयोग होता रहा ।[1]

तबकाते नासिरी की भांति इसमें भी शेरशाह का इतिहास अधिकांशतः तारीखे शेरशाही से लिया गया है किन्तु विशेषता यह है कि फरिश्ता ने तिथियों का वर्णन भी किया है । उसने रोहतास दुर्ग का इसी समय स्वयं निरीक्षण किया था और इस दुर्ग का जो विवरण उसने दिया है, वह अन्य किसी ग्रन्थ में नहीं मिलता ।[2]

1– रिजवी, एस ए ए – मुगलकालीन भारत (हुमायूं भाग दो) पृष्ठ
2– निगम, एस बी पी (डा०) – सहसराम का इतिहास, पृष्ठ 5

दक्षिण के सुलतानो के इतिहास के सम्बन्ध मे उसकी रचना को विशेष महत्व प्राप्त है।

ग्रन्थ के दोष

(1) लेखक ने क्रमबद्ध रूप से घटनाओं का वर्णन नही किया है।
(2) कई घटनाओ की तिथियां गलत दी हुई हैं।
(3) विवादास्पद विषयो पर उसने अपना मत व्यक्त नही किया है।
(4) लेखक ने अपनी रचना मे विश्लेषणात्मक क्षमता का उपयोग नही किया है। हो सकता है कि उसमे आलोचनात्मक दृष्टि से विश्लेषण करने की क्षमता कम हो।

मूल्यांकन

इन दोषो के बावजूद भी यह स्वीकार करना पडेगा कि फरिश्ता का ग्रंथ अपनी साधारण शैली के लिये प्रसिद्ध है एवं दक्षिण के सुलतानो के इतिहास को जानने की दृष्टि से काफी अमूल्य ग्रन्थ समझा जाता है।

10 जहांगीर : तुजुक-ए-जहांगीरी

तुजुक ए-जहांगीरी "तारीख ए-सलीमशाही" 'कारनामा-ए-जहांगीरी 'इकबालनामा" "जहांगीरनामा" 'वाकेआते जहांगीरी' आदि कई नामो से भी प्रसिद्ध है। तुजुक ए जहांगीरी की रचना स्वय जहांगीर ने की थी। उसने इस कृति में अपना इतिहास लिखा है। इस ग्र थ म जहांगीर के सिंहासनारोहण से लेकर उसके शासनकाल के 17 वें वर्ष तक का इतिहास है।

इलियट एव डाउसन ने भारत का इतिहास (षष्ठम खण्ड) के पृष्ठ 207 स 292 तक इसका अनुवाद किया है। इस ग्रन्थ का नाम उन्होने "वाकियात ए जहांगीरी' लिखा है। डाउसन ने लिखा है कि यह दुर्लभ ग्रन्थ ह। हिन्दुस्तान में भी लोगों को इसका बहुत कम पता है। इसम उन बातों का सरल और कुशल वर्णन है जिनको लेखक महत्वपूर्ण समझता है। पूरे ग्रन्थ को पढने पर यह रोचक प्रतीत होता है। इसका रचियता जहांगीर को मान लिया जाये तो पता चलता है कि वह साधारण योग्यता का आदमी नही था। वह अपनी कमजोरियो और दोषो को स्पष्ट स्वीकार करता था। ग्रन्थ को पढने स उसके चरित्र और उसकी बुद्धि के बारे में अच्छे विचार बनते हैं।"[1]

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से तुजुक ए जहांगीरी एक अमूल्य ग्रन्थ है क्योंकि इसमे हम जहांगीर के प्रशासन के विकास के बारे मे महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। अपने राज्य के 17 वें वर्ष तक स्वय सम्राट ने ही इसे लेखनीबद्ध किया और स्वास्थ्य बिगड जाने के कारण अठारहवें और उन्नीसवें वर्ष का विवरण मोतमिद खा से लिखवाया। आत्मकथा से अपने पिता के जीवनकाल म शाहजहा के उत्थान का अखण्डित ब्यौरा उपलब्ध है।[2]

जहांगीर ने 1605 ई० से लेकर 1627 ई० तक शासन किया। शासक बनते ही उसने खुसरो के विद्रोह का दमन किया। इसके पश्चात उसने मेवाड पर विजय प्राप्त की। जहांगीर ने स्वय स्वीकार किया है कि मेवाड पर विजय उसके

1– शर्मा, एस आर - भारत मे मुगल साम्राज्य, पृष्ठ 289-90 से उद्धत

2– सक्सेना, वी पी (डा०) – मुगल सम्राट शाहजहा पृष्ठ ख (प्रवेश)

लिये बडे गौरव की बात थी। उसका ग्रन्थ मुगल राजपूत सम्बन्धों पर भी प्रकाश डालता है। जहांगीर ने ग्रहमदनगर, कांगडा, तथा कन्धार के विरुद्ध सैनिक अभियान किये।

1. जहांगीर ने 1611 ई० में ईरानी विधवा मेहरुन्निसा के साथ विवाह कर लिया जो मलिका बनने पर नूरजहां के नाम से प्रसिद्ध हुई। नूरजहां ने शासन तन्त्र को चलाने के लिये एक गुट का निर्माण किया। 1611-1622 ई० तक शासन का संचालन उसने किया। इन वर्षों में राज्य की वास्तविक शक्ति नूरजहां के हाथ में केन्द्रित थी। जहांगीर नाम मात्र का शासक बनकर रह गया था। मध्यकालीन इतिहास में नूरजहां के समान अपने प्रेम के वशीभूत शासन तन्त्र पर नियन्त्रण स्थापित करने का अन्य कोई उदाहरण नहीं मिलता

जहांगीर पर नूरजहां के प्रभाव को हम दो भागों में बांट सकते हैं प्रथम काल (1611-22) - इस काल में नूरजहां के माता पिता जीवित थे। वे उसकी महत्वाकांक्षाओं पर नियन्त्रण रखते थे।

द्वितीय काल (1622-27 ई०) इस काल में राज्य की वास्तविक शक्ति नूरजहां के हाथ में थी। जहांगीर नाम मात्र का शासक था। सम्पूर्ण शासन की गतिविधियों का संचालन दलबन्दी पर आधारित था।

खुर्रम ने नूरजहां की चालों से तंग आकर विद्रोह कर दिया था। जब राजकुमार विद्रोही हो गया तब उसके प्रति जहांगीर का रुख बदल गया और उसने शाहजहां को ओजपूर्ण उपाधियों के बजाय 'बेदौलत' या भाग्यहीन कहना शुरू कर दिया।[1]

इसी तरह नूरजहां ने महाबत खां को भी विद्रोह करने के लिये बाध्य कर दिया था। इन विद्रोहों ने साम्राज्य में गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न कर दी थी।

यद्यपि जहांगीर शराब की मादकता और प्यार में डूबा रहता था तथापि उसकी धार्मिक उदारता की नीति न्यायप्रियता एवं बुद्धि की क्षमता की हम प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। जहांगीर के शासनकाल में उद्योग एवं व्यापार का बहुत अधिक विकास हुआ। चित्रकला के विकास के दृष्टिकोण से उसका युग मुगल साम्राज्य का स्वर्ण युग माना जाता था। साहित्य एवं कला के क्षेत्र में भी आशातीत विकास हुआ। साम्राज्य में शांति और समृद्धि थी।

1-- सक्सेना, बी०पी० (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहां, पृष्ठ 'ख' (प्रवेश)

मुहम्मदशाह के शासनकाल मे तुजुक ए-जहांगीरी के सम्पादन का काय मुहम्मद हादी न किया उसने इसमे जहांगीर के शासन के अन्तिम वर्षों का इतिहास और जोड़ दिया। अब इसमे जहांगीर का पूरा इतिहास प्राप्त है। तुजुक-ए-जहांगीरी को सर्व प्रथम 1864 ई० म सैयद अहमद खां ने मूलरुप मे प्रकाशित किया था।

तुजुक ए जहांगीरी से जहांगीर के समय के विद्रोहो, युद्धो एव विजयो के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। शाही नियमो का भी इसम विवरण दिया हुआ है। उसके समय म नियुक्त मुख्य-मुख्य सामन्तों और अधिकारियो का वणन किया गया है। सम्राट द्वारा की गई महत्वपूण, नियुक्तियाँ, पदोन्नतियो एव-पदच्युतियो का वणन भी इसमे उपलब्ध है।

जहांगीर की यह डायरी उसके शासन तथा व्यक्तित्व को जानने का प्रामाणिक स्रोत है। इससे सम्राट के निजी जीवन की घटनाओं के बारे मे भी जानकारी प्राप्त होती ह। परन्तु निम्न घटनाओं का वणन जहांगीर ने अपनी कृति म नही किया है — (1) जहांगीर का अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह एव (2) राजकुमार खुसरो की हत्या के लिये उत्तरदायी कारण।

जहांगीर के शासनकाल का इतिहास जानने हेतु तुजुक ए-जहांगीरी मूल्यवान ग्रन्थ है। चूकि सम्राट ने घटनाओ का सही ब्यौरा दिया है, इसलिये उसके ग्रन्थ का महत्व और भी अधिक बढ जाता है। जहांगीर की यह कृति न केवल सैनिक और राजनीतिक गतिविधियो पर प्रकाश डालती है अपितु इससे उस समय के सामाजिक सास्कृतिक एव आध्यात्मिक जीवन के बारे म भी जानकारी प्राप्त होती है। इससे हमे जहांगीर की मनुष्य को परखने की क्षमता के बारे म भी पता चलता है। अत यह जहांगीर के शासनकाल का एक मूल्यवान और विश्वसनीय स्रोत कहा जा सकता है।



10 शरीफ बिन दोस्त मुहम्मद मोतमिद खाँ: इकबालनामा-ए-जहाँगीरी

शरीफ बिन दोस्त मुहम्मद मोतमिद खा ईरान का निवासी था। अकबर की मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकार सघर्ष प्रारम्भ हुआ। उस समय मुहम्मद ने जहागीर का समर्थन किया था। अत जहागीर ने शासक बनने पर उसे अहमदियों का बख्शी नियुक्त किया तथा "मोतमिद खां" की उपाधि प्रदान की।

जहागीर ने अपने राज्यकाल के 17 वें वर्ष तक का विवरण लिखा। उसके पश्चात उसका स्वास्थ्य बिगड गया। अत उसने मोतमिद खां को आदेश दिया कि वह उसकी तुजुक-ए-जहागीरी को लिखता रहे। इस पर जहागीर के शासनकाल के 18 वें और 19 वें वर्ष के सस्मरण मोतमिद खा ने लिखे।

शाहजहा के शासनकाल मे वह दूसरे नम्बर का बख्शी था। शाहजहा ने अपने शासन के 10 वें वर्ष मे उसे मीर बख्शी के पद पर नियुक्त किया। 1639 40 मे उसकी मृत्यु हो गई।

मोतमिद खा ने अपने कृति मे 'अकबरनामा एव तबकाते अकबरी आदि ग्रथो का हवाला दिया है। उसने लिखा है कि उसने युवावस्था में ही जहागीर के इतिहास से सम्बन्धित तथ्यो को एकत्रित करना प्रारम्भ कर दिया था क्योकि वह उसके शासन का इतिहास बनावट एव अलकारो से पृथक करके प्रचलित भाषा म लिखना चाहता था ताकि लोग लाभान्वित हो सकें।

मोतमिद खा ने अपनी कृति की रचना विधि के बारे मे लिखा है कि इस विषय में मैं प्रयत्न करता रहा। घटनाओ एव वाकेआत के शोध के सम्बन्ध मे बडी सावधानी से काय करता रहा। जो कुछ मैंने अपनी आखों से देखा था उसे बिना घटाये बढाये लिख दिया। जो कुछ इस तुच्छ की जानकारी के पूर्व घटा था उसके विषय मे अबुल फजल के शोध को शेख निजामुद्दीन अहमद ख्वाजा एव ख्वाजा अता बेग की रचना मे मिलाकर विश्वस्त एव वृद्ध लोगों से सशोधित कराने के उपरात लिखा। किन्तु सवदा सेवा मे उपस्थित रहने तथा काय की अधिकता के कारण जो कुछ लिखा था, उसे सुव्यवस्थित करने का अवसर नही मिल सका।'

मोतमिद खां ने जहांगीर में 1620 ई० के बाद अपनी पाण्डुलिपि को पुस्तक का रूप दे दिया था। इकबालनामा ए-जहांगीरी को "जहांगीरनामा" के नाम से भी पुकारा जाता है। डी ने जहांगीर के शासनकाल के मामलों के लिये इसको प्रमाण के रूप में उद्धत किया है।

इलियट एवं डाउसन ने भारत का इतिहास (षष्ठम खण्ड) के पृष्ठ 299-300 पर इसका अनुवाद निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया है। इकबालनामा तीन भागों में विभक्त हैं :—

पहले भाग में खाकान राजवंश का इतिहास है। जिसमें बाबर और हुमायूं का शासन सम्मिलित है। मोतमिद खां ने अकबर के पूर्वजों का हाल अबुल फजल के आधार पर कुछ घटा बढ़ाकर लिख दिया है।

द्वितीय भाग में अकबर के शासनकाल का इतिहास है। मोतमिद खां ने अकबर का इतिहास अकबरनामा को आधार बनाकर लिखा है। उसने सरल भाषा में अपनी कृति की रचना की है ताकि घटनाएं आसानी से समझ में आ सकें। इस प्रकार मोतमिद खां ने अबुल फजल की जटिल भाषा की कठिनाई को दूर कर दिया है। उसने इस ग्रन्थ में अबुल फजल की अशुद्धियों को दूर करने का भी प्रयास किया है। परन्तु उसे अधिक सफलता नहीं मिली है। मोतमिद खां ने नवीन सामग्री भी अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत की है जिससे इस कृति का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है।

तृतीय भाग में जहांगीर का इतिहास है। प्रथम दो में भागों तो सुलभ नहीं है परन्तु तीसरा भाग सर्वत्र मिलता है।

"तीसरे भाग में जहांगीर के समस्त शासन का इतिहास दिया हुआ है। इसमें संस्मरणों के प्रथम उन्नीस वर्ष का इतिहास संक्षेप में हैं, जिसको जारी रखने के लिये और पूरा करने के लिये मोतमिद खां को आदेश हुआ था। इस ग्रन्थ में वह लिखता है कि जहांगीर ने उसको इकबालनामा लिखने का भी हुक्म दिया था। प्रायः ऐसा होता है कि सत्य का चाटुकारिता पर बलिदान कर दिया जाता है। इस देश के आलोचकों में इस ग्रन्थ का स्थान ऊंचा नहीं माना जाता। परन्तु दूसरे भाग से अधिक कोई पुस्तक प्रचलित नहीं हैं। इस शासन में लेखक बहुत ऊंचे पदों पर था और बड़े बड़े कामों में उसका हाथ था। इसलिये हमको मानना चाहिये कि यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।"

"यह ग्रन्थ कथा के रूप में है जैसे मआसिर ए-जहांगीरी" और अन्य प्रामाणिक आत्मकथायें हैं। प्रत्यक्ष रूप की घटनाओं को प्रायः संक्षेप किया हुआ है। परन्तु यह इतना संक्षिप्त है, कि उल्लेख के योग्य नहीं है। इस जिल्द का प्रारम्भ जहांगीर के सिंहासनारोहण से और अन्त उसकी मृत्यु पर होता है। इसमें शाही परिवार के सदस्यों के, विद्वानों के, हाकिमों के, और शासनकाल के कवियों के नाम दिये हुए है।[1]

डा० बी० पी० सक्सेना ने लिखा है कि मआसिर ए जहांगीरी के लेखक कामगार खां की अपेक्षा मोतमिद खां साहित्यिक चोरी का कहीं अधिक दोषी दिखाई पड़ता है। उसने तुजुक का वस्तुतः छायानुवाद ही किया है। मोतमिद खां 1633 ई० के बाद किसी समय अपना ग्रन्थ समाप्त किया। उसने तुजुक ए जहांगीरी को आधार बनाकर अपने ग्रन्थ की रचना की थी।[2]

1– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (षष्ठम खण्ड) पृष्ठ 299 300
2– सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहां, पृष्ठ ग (प्रवेश)

==*==

12 कामगार खां : मआसिर-ए-जहांगीरी

मिर्जा कामगार खां हुसैनी ने 1630 ई० में मआसिरे जहांगीरी नामक ग्रंथ की रचना की। मोतमिद खां की अपेक्षा कामगार खां अधिक सत्यवादी एवं विश्वसनीय है। कामगार खां ने "तुजुक-ए-जहांगीरी" को आधार बना कर अपने ग्रंथ की रचना की थी। यद्यपि कामगार अब्दुल्ला खां फिरोज जंग के प्रति पक्षपातपूर्ण है क्योंकि वह उसका रिश्तेदार था। दो अवसरों पर जब फिरोज जंग ने विश्वासघात किया, उसके लिये कामगार ने सफाई प्रस्तुत की है। प्रथम, तो बिलोचपुर के युद्ध के समय उसका दल बदलना एवं दूसरे, शाहजहां की बंगाल की वापसी के बाद उसका पक्ष त्यागना।[1]

यद्यपि इस ग्रन्थ में दोष विद्यमान हैं परन्तु फिर भी वे एक ऐसे अन्तराल के बारे में हमारी जानकारी परिपूर्ण करते हैं जो अन्यथा रिक्त ही रह जाता अर्थात् शाहजहां का विद्रोह तथा उसके राजतिलक के तुरन्त पूर्व का घटनाक्रम।[2]

इलियट एवं डाउसन ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि "मआसिर-ए-जहांगीरी" कई प्रकरणों में विभक्त है जो शासन के विभिन्न वर्षों में लिखे गये थे। इनके अतिरिक्त और कोई शीर्षक नहीं।"[3]

क्रिटिकल स्टैडीज के लेखक ने इस ग्रन्थ के बारे में लिखा है कि "इसमें छोटी छोटी बातों का विवरण नहीं है और इस विषय में यह ग्रन्थ इकबालनामा से मिलता जुलता है। इस जिल्द के पढ़ने मे जहांगीर के उन कार्यों का वर्णन है

1– सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहां, पृष्ठ "ग" (प्रवेश)
2– सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगलसम्राट शाहजहां, पृष्ठ "ग" (प्रवेश)
3– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (षष्टम खण्ड) पृष्ठ 331

जो उसने सिंहासन पर बैठने के पहले किये थे। इसके विषय में शाहनवाज खां का कहना है कि इसका ढंग बड़ा स्वतन्त्र और स्पष्ट है और इकबालनामा से तुलना करने पर यह अच्छा लगता है। इकबालनामा शाही अनुग्रह की प्राप्ति के लिये लिखा गया था परन्तु निम्नलिखित अवतरणों में जिस ढंग से अबुल फजल की मृत्यु का वर्णन किया गया है, उसको देखते हुए इस प्रशंसा की पुष्टि नहीं होती। घटना को तो स्वीकार किया गया है परन्तु इस कार्य की अपकीर्ति को छिपाने के लिये प्रत्येक प्रकार की दरबारी चापलूसी और लीपापोती की गई है।

13 अब्दुल हमीद लाहौरी : पादशाहनामा

डा० बी० पी० सक्सेना के अनुसार अब्दुल हमीद लाहौरी शाहजहाँ द्वारा नियुक्त तीसरा इतिहासकार था। लाहौरी ने शाहजहा की आकांक्षाओं की एक बड़ी सीमा तक पूर्ति करने में सफलता अर्जित की। उसने लेखनकार्य शाहजहा के राज्यकाल के बारहवें वर्ष में शुरु किया होगा। (यह भी सम्भव है कि 16 वें वर्ष में शुरु किया हो।) मोहम्मद वारिस ने लिखा है कि अब्दुल हमीद लाहौरी ने अपना कार्य 1648 ई० में समाप्त कर लिया और इसके लगभग 6 वर्ष बाद ही 30 अगस्त 1654 ई० को वह परलोक सिधार गया।[1]

मुहम्मद सालेह ने लिखा है कि अब्दुल हमीद लाहौरी अबुल फजल की शैली का उपासक था। वह अबुल फजल की तरह अपनी शैली की सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध था। शाहजहा ने लाहौरी को जब इतिहास लिखने का आदेश दिया, उस समय वह काफी वृद्ध हो चुका था।

पादशाहनामा की भाषा और शैली एवं ऐतिहासिक महत्व

लाहौरी ने बादशाहनामा में शाहजहा के शासनकाल के प्रथम 20 वर्षों का इतिहास लिखा है। उसने ग्रन्थ का प्रारम्भ तो अबुल फजल की शैली से किया है, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि शायद बाद में वह हिम्मत हार गया। डा० बी० पी० सक्सेना ने प्रथम दस वर्षों के वर्णन के बारे में लिखा है कि "प्रथम दस वर्ष का विवरण कजवीनी का ही पुनर्कथन है। नूरजहा पर उसकी टिप्पणी उतनी ही कठोर है जितनी की उसके पूर्वगामी की थी। दोनों का कश्मीर का चित्रण एक समान है। इस कृति का वास्तविक महत्व द्वितीय भाग में है जिसमें शाहजहा के राज्यकाल के दूसरे दौर की घटनाओं का वर्णन है। ऐतिहासिक दृष्टि से वृत्तान्त अमोघ है। परन्तु साहित्यिक दृष्टि से वह न तो चित्ताकर्षक है और न प्रशंसा के योग्य ही।"[2]

1– सक्सेना, बी० पी० (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहा, पृष्ठ घ (प्रवेश)।
2– सक्सेना, बी० पी० (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहा, पृष्ठ घ (प्रवेश)।

लाहौरी को सरकारी रेकार्डस देखने की सुविधा प्राप्त थी। उसने पूव मे लिखे हुए कुछ फारसी ग्रथों का भी अध्ययन किया। इस प्रकार उसने समकालीन दरबारियो, ऐतिहासिक ग्रथो और विश्वसनीय सूचनाओ के आधार पर अपने ग्रथ की रचना की है। इससे हमे शाहजहा के पूरे शासनकाल के बारे मे ऐतिहासिक सामग्री मिलती है। बाद के इतिहासकारो ने इस ग्रथ को आधार बनाकर शाहजहा के बारे म लिखा है।

पादशाहनामा की भूमिका मे लाहौरी ने निम्न दो बातो पर जोर दिया है, जिससे हमे उसके विचारों के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है।

(1) धर्म के नियमों का पालन करने पर ही बहिश्त (स्वर्ग) की प्राप्ति हो सकती है।
(2) सरकार के स्थायित्व का आधार राजा द्वारा प्रेरित श्रद्धा और भय है।

लाहौरी के इस कथन से स्पष्ट है कि वह यह चाहता था कि बादशाह इस्लामी नियमो के अनुसार शासन का सचालन करे। जनता से यह उम्मीद करता था कि वे राजा के प्रति भय और श्रद्धा की भावना रखे। इसी वजह से लाहौरी ने शाहजहा के द्वारा किये गये कट्टर धार्मिक कार्यो की प्रशंसा की है। दूसरे शब्दों मे हम कह सकते है, कि उसने शाहजहा की कट्टर धार्मिक नीति की प्रशसा करते हुए उसे धम का रक्षक कहा है।

लाहोरी ने बनारस एवं अन्य स्थानो पर शाहजहा के मन्दिरो को तोडने के आदेश प्रसारित किये और उसके इस आदेश की काफी प्रशसा की है। उसने शाहजहा के पुर्तगालियो के साथ किये गये व्यवहार को उचित माना है। विद्रोह करने वाले झुझारसिंह और खानजहा लोदी को वह कमीना एव हतभाग्य बताता है।

"इस पुस्तक की विषय सूचि यह है। भूमिका जिसमे लेखक अपना ग्रथ शाहजहां को भेट करता है। बादशाह की जन्म पत्रिका का वर्णन तैमूर से लेकर उसके पूवजो का सक्षिप्त वृतात सिंहासन पर बैठने से पहले शाहजहा के कार्यो का सक्षिप्त पर्यवेक्षण। शासन के प्रथम 20 वष का सविस्तार वर्णन जो 10-10 के दो भागो में विभक्त किया गया है। इस ग्रथ मे शाहजहा की नामावली और दरबारी सामन्तो के नाम दिये हुए हैं। इनको उनके पद के अनुसार जमाया गया

है। सब प्रथम 9 हजार के मनसबदार और अन्त में 500 के मनसबदारों के नाम हैं। फिर उन शेखों, विद्वानों, हकीमों और कवियों के नाम दिये हैं जो उस समय प्रसिद्ध थे।[1]

"शाहजहा के राज्य के लिये बादशाहनामा बड़ा प्रामाणिक ग्रन्थ है। मुहम्मद वारिस अब्दुल हमीद से छोटा और उसका प्रतिद्वन्द्वी लेखक था। इसने उसकी बहुत प्रशंसा की है। मुन्तखाब उल-लुबाब नामक ग्रन्थ के लेखक खाफी खां ने शाहजहां के शासन के प्रथम 20 वर्ष के इतिहास के लिये बादशाहनामा को ही आधार माना है। इस ग्रन्थ के विषय में सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि इसमें उस मिश्रित शैली का उपयोग किया गया है जिसको भारतवर्ष में नायक अबुल फजल और फैजी दोनों भाईयों ने जारी किया था। अब्दुल हमीद कहता है कि अबुल फजल की शैली उसे बहुत पसन्द थी। जब वह किसी ऐसे विषय का वर्णन करने लगता है जिसके लिये साहित्य की भाषा की आवश्यकता हो तो उसकी शैली में शब्द बाहुल्य, दुर्गमता, और अपने स्वामी की अत्युक्तिपूर्ण प्रशंसा आ जाती है। फिर भी वह सदा ही ऐसी शैली का अनुसरण नहीं करता। साधारण घटनाओं का वह साधारण भाषा में वर्णन करता है, परन्तु कभी कभी उसकी आलंकारिक भाषा उग्र पड़ती है, जिसके कारण वर्णन धुंधला हो जाता है।[2]

यह ग्रन्थ बहुत बड़ा है। बिबलियोथिका इण्डिका की दो जिल्दों में यह पूरा हुआ है और इसमें 1662 पृष्ठ हैं। यह बादशाह के कार्यों का विस्तारपूर्वक वर्णन है और छोटी छोटी बातों का भी समावेश करता है। इसमें शाही परिवार के लोगों की पदोन्नतियों का, भेंटों का सामन्तों को दी हुई उपाधियों का सवारों का तथा इसके अतिरिक्त सिंहासनारोहण, आदि अवसरों पर दी गई भेंटों का वर्णन है एवं इस ग्रन्थ में ऐसे विषय हैं सामन्तों के अतिरिक्त अन्य किसी की रुची नहीं हो सकती। परन्तु यह कहना भी न्यायसंगत नहीं होगा कि यह ऐसी ही तुच्छ बातों से भरा हुआ है। ऐसी बातें अत्यधिक हैं परन्तु इसमें ठोस ऐतिहासिक सामग्री भी है।"[3]

इलियट एवं डाउसन ने भारत का इतिहास सप्तम खण्ड के पृष्ठ 3 से 54 तक लाहौरी के बादशाहनामा का अनुवाद दिया है।

1– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 3
2– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास, (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 3 4
3– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 4

मुहम्मद वारिस कृत पादशाहनामा

पादशाहनामा तीन जिल्दों का एक बृहद्ग्रन्थ है इसमें प्रथम और द्वितीय भाग जिसमें शाहजहां के राज्य के 20 वर्षों का इतिहास है, को अब्दुल हमीद लाहोरी ने लिखा था। वृद्धावस्था के कारण जब लाहौरी अपना कार्य जारी रखने में असमर्थ हो गया तब उसके एक शिष्य मुहम्मद वारिस को यह कार्य भार सौंपा गया। उसने शाहजहां के शासनकाल के अंतिम दस वर्षों का इतिहास तीसरी जिल्द में लिखा है। शाहजहानाबाद की इमारतों का वर्णन अत्यन्त चित्ताकर्षक और जिज्ञासु रखीय है।[1]

इलियट एवं डाउसन ने लिखा है कि "इस ग्रन्थ का नाम शाहजहांनामा है। इसमें शाहजहां के शासन के 10 वर्ष तक का इतिहास है। यह 21 वें वर्ष से आरम्भ होता है और 30 वें वर्ष तक चलता है। इसी वर्ष शासन का अन्त हुआ था। अलाउमतमुल्क तूनी जिसको फाजिल खां की उपाधि प्राप्त थी और जो औरंगजेब के समय में वजीर बन गया था यह ग्रन्थ संशोधन के लिये दिया गया था। अल्लामी सादुल्ला खां की मृत्यु के पश्चात् इसका कुछ भाग सम्राट् के आदेशानुसार फाजिल खां ने लिखा था। मुहम्मद वारिस के विषय में कुछ पता नहीं है। परन्तु मआसिर-ए-आलमगीरी का लेखक लिखता है कि 10 रबी उल अव्वल 1091 हि० (1680 ई०) को एक पागल विद्यार्थी ने चाकू से बादशाहनामा की तीसरी जिल्द के लेखक वारिस खां को मार डाला। इस विद्यार्थी की वह परवरिश करता था और रात में उसे अपने पास सुलाता था। इस ग्रन्थ की शैली अब्दुल हमीद की सी है और यह बहुत लम्बा है। इसके अन्त में उन शेखों, विद्वानों और कवियों की सूची दी हुई है, जो दस वर्षों में जीवित थे।[2]

ग्रन्थ के दोष

(1) लाहौरी ने इस ग्रन्थ में शाहजहां की उपलब्धियों की अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से वर्णन किया है यानी प्रशंसात्मक वर्णन है, जबकि आलोचनात्मक वर्णन होना चाहिये था। जो ऐतिहासिक दृष्टि से नितान्त आवश्यक है।

1— सक्सेना, बी० पी० (डा०) मुगल सम्राट शाहजहां, पृष्ठ ड (प्रवेश)

2— इलियट एवं डाउसन — भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 185

(2) वारिस ने उस समय की सांस्कृतिक हलचलों का वर्णन किया है परन्तु उस समय के सामाजिक और आर्थिक जीवन के बारे में इस ग्रंथ से कुछ पता नहीं चलता।

(3) अन्य फारसी इतिहासकारों की भांति लाहौरी में भी यह कमी है कि उसने कारणों और परिणामों का विश्लेषण नहीं किया है।

इन दोषों के बावजूद भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि शाहजहां के शासनकाल का इतिहास जानने के लिये यह एक अमूल्य ग्रंथ है।



14 | मिर्जा मुहम्मद अमीन कजवीनी : पादशाहनामा

मुहम्मद अमीन कजवीनी शाहजहा के शासनकाल का प्रथम इतिहासकार था। जिसने पादशाहनामा नामक ग्रन्थ लिखा, परन्तु शाहजहा के राज्य के ग्रन्थ इतिहासों की भांति इसको प्राय "शाहजहानामा" कहा जाता है और कभी कभी "तारीख ए-शाहजहानी दहसाला" भी कहा जाता है। लेखक का पूरा नाम मुहम्मद अमीन बिन अब्दुल हसन कजवीनी है परन्तु वह अमीनाई कजवीनी या अमीनाई मुन्शी या मिर्जा अमीना के नाम के प्रसिद्ध है।[1]

शाहजहा ने अपने शासनकाल के 8 वें वर्ष में कजवीनी को अपने शासन काल का इतिहास लिखने का आदेश दिया था। उसने शाहजहा के राज्यकाल के प्रथम दस वर्ष का इतिहास लिखा, तब तक अपने पद पर बना रहा। इसके पश्चात अपने प्रतिद्वन्द्वियों की ईर्ष्या के कारण पद त्यागना पड़ा।

ग्रन्थ की भाषा एव शैली तथा ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व

कजवीनी ने पादशाहनामा की रचना सरल एव आकर्षक भाषा में की है। डा० सक्सेना ने इसे तत्कालीन युग की "विशुद्ध फारसी शैली का उत्कृष्ट नमूना कहा है।[2] लेखक ने भूमिका मे लिखा है कि उसने अपने ग्रन्थ को तीन भागो मे विभक्त किया है। (1) भूमिका-जिसमे सम्राट के जन्म से सिंहासनारोहण तक का हाल है। (2) मकाल जिसमे उसके शासन के प्रथम दस वर्ष तक का इतिहास है और (3) परिशिष्ट जिसमे धार्मिक और विद्वान लोगो का तथा तथा हकीमो का और कवियो का वृत्तान्त हैं। उसने यह भी लिखा है कि उसका विचार दूसरी जिल्द लिखने का भी है। जिसमें शाहजहा के राज्य के बीसवें वर्ष तक का इतिहास होगा, परन्तु यह प्रकट नही होता कि उसका विचार पूर्ण हुआ हो। उसकी नियुक्ति ऐसे पद पर हो गई थी जहा उसको बहुत व्यस्त रहना पड़ता

1— इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 1
2— सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहां, पृष्ठ घ (प्रवेश)

था। मुहम्मद सालीह ने लेखक की संक्षिप्त जीवनी लिखी है, जिसमे वह कहता है कि लेखक की गुप्त सूचना विभाग मे बदली कर दी गई थी।[1]

कजवीनी ने निष्पक्ष रहकर अपने ग्रन्थ की रचना की है। बाद के इतिहासकारों ने शाहजहा का इतिहास उसके ग्रंथ को आधार बनाकर लिखा है। "स्वभावत लेखक अपने आश्रयदाता सम्राट के प्रति पक्षपातपूर्ण है। उसके प्रारम्भिक जीवन, विशेषकर उसके विद्रोह का इतिवृत देते हुए वह सारा दोष नूरजहा पर ही थोप देता है तथा महारानी की आलोचना तीखे शब्दो मे ही करता है। वस्तुत विद्रोह का वृतान्त ही संक्षिप्त है और लेखक ने ग्रंथ विश्वासी आधारों पर उसकी सच्चाई भी प्रस्तुत की है।[2] तथापि शाहजहा की प्रारम्भिक शिक्षा और राज्यकाल के प्रथम दस वर्ष की घटनाओं के अध्ययन के लिये यह ग्रंथ बहुत ही उपयोगी है।

1— इलियट एव डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 1
2— सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहा, पृष्ठ ध (प्रवेश)



15 इनायत खा : शाहजहानामा

मुहम्मद ताहिर को इनायत खा की उपाधि मिली थी और उसका वास्तविक नाम असना था। इनायत खा के पिता का नाम जफर खा था जो जहांगीर का वजीर था। शाहजहा ने उसे काबुल और कश्मीर का शासक बना दिया था। शाहजहा के सिंहासनारोहण के समय इनायत खा का जन्म हुआ था। लेखक को शाहजहा के शासन के 7 वें वर्ष में मनसब प्राप्त हुआ था। उसे अपने पिता के साथ कश्मीर भेजा गया जहां उसका पिता गवर्नर था।

इनायत खां अपने पिता से भी अधिक योग्य एवं प्रतिभावान व्यक्ति था। उसने एक दीवान और तीन मसनवियों की रचना की थी परन्तु उसे प्रसिद्धि शाहजहा का इतिहास लिखने के कारण प्राप्त हुई।

इनायत खा शाहजहा का घनिष्ठ मित्र था तथा उसके दरबार में एक महत्वपूर्ण प्रशासकीय अधिकारी था। उसने शाहजहा के आदेशानुसार 'शाहजहा नामा' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इसमें पूर्ववर्ती इतिहासो को संक्षिप्त करते हुए 1657 58 ई० का ऐतिहासिक विवरण दिया हुआ है।

इनायत खा ने शाहजहानामा के प्राक्कथन में लिखा है कि 'इन पृष्ठों के लेखक को ऐसा प्रतीत होता है कि वह और उसके पूर्वज शाहीवंश के सक्रिय एवं योग्य कर्मचारी रह चुके थे इसलिये उसके लिये यह उत्तम होगा कि वह शाह -जहा के शासनकाल का इतिहास सरल और स्पष्ट शैली में लिखे। इसके साथ ही शेख अब्दुल हमीद ने तीन खण्डो में जो इतिहास लिखा है, उसे संक्षिप्त और सरल भाषा में पुन लिख दे।' कजवीनी का यह मानना था कि आगे चलकर यह एक महत्वपूर्ण और उपयोगी ग्रन्थ प्रमाणित होगा।

लेखक इनायत खा ने शाहजहानामा के पृथक भाग के आधारों को स्पष्ट स्वीकार किया है। प्रथम बीस वर्ष 'बादशाहनामा' से मिलते जुलते हैं लेकिन शैली अधिक सरल है। शाहजहानामा का इतिहास 1657-58 (1068 हि०) तक है। इसी वर्ष औरंगजेब को सम्राट घोषित किया गया था लेकिन लेखक

ने इसका कही उल्लेख नही किया है। लेखक यह नही कहता कि शाहजहानामा के अतिरिक्त और किसी पुस्तक को उसने अपने ग्रन्थ का आधार बनाया है और अन्तिम दस वर्षों का इतिहास उसकी स्वतन्त्र रचना है या नही।[1]

1— इलियट एवं डाउसन ने भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) के पृष्ठ 55 से 84 तक इनायत खां के शाहजहानामा का वर्णन किया है।

इनायत खां का शाहजहां से निकटतम सम्पर्क था, अतः उसे घटनाओं के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती थी। उसने सरल भाषा में अपने ग्रन्थ की रचना की है। उसके द्वारा वर्णित घटनाएं विश्वसनीय हैं। इसकी पुष्टि अन्य ग्रन्थ करते हैं। संक्षेप में, शाहजहां के शासनकाल के इतिहास को जानने के लिये उसका ग्रन्थ एक महत्वपूर्ण स्रोत कहा जा सकता है।[2]

2— इलियट एवं डाउसन : भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 55

16 मुहम्मद सादिक : शाहजहानामा

डा० बी० पी० सक्सेना के अनुसार मुहम्मद सादिक कृत "शाहजहा नामा" ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति है। डा० सक्सेना ने लिखा है कि "यद्यपि इस ग्रन्थ में अनेक आत्मचरितात्मक संकेत हैं तथापि लेखक के व्यक्तित्व की शिनाख्त निर्धारित करना बहुत कठिन है। शाहजहाँनामा सर्वश्रेष्ठ कृति तो नही मानी जा सकती फिर भी निस्सन्देह उस काल के इतिवृत के लिये उस अत्यधिक विश्वसनीय स्रोत तो मानना ही चाहिये। लेखक एक ऐसे पद पर नियुक्त था (वह दरोगा ए गुसलखाना था) जहा से वह उन घटनाओं का या कार्य कलापों को जिनका उसने वर्णन किया है, न केवल देख और समझ ही सकता था परन्तु जो कुछ उसने अपनी निजी जानकारी के बल पर लिखा है, उस सम्बन्ध में भी उसके ससूचन स्रोत सर्वथा निर्दोष ही है। उसने अपने चार चाचाओं का उल्लेख किया है। उसमें से तीन तो उच्च शाही सेवा में थे। इस हकबेग मजदी महारानी मुमताजमहल का मीर समान था, अमीर खा मीर तुजुक था तथा बाकी खा दीर्घकाल तक अकबराबाद (आगरा) का प्रान्तपति रहा। उसका चौथा चाचा केवल एक अहदी अर्थात कुलीन सैनिक था।[1]

मुहम्मद सादिक का लक्ष्य स्वार्थसिद्धि न था। न तो वह शाही इतिहासकार ही था और न वह किसी आश्रयदाता को प्रसन्न ही करना चाहता था। निस्सन्देह उसकी भावना शाहजहा के प्रति तो पक्षपातपूर्ण ही है, परन्तु इसके अलावा वह सामान्यत निष्पक्ष ही दिखाई पड़ता है। वह न तो उचित आलोचना करने में हिचकता है और न कडवे तथ्यों पर पर्दा ही डालता है। उसका वृतान्त जहांगीर की मृत्यु के समय से शुरु होता है और शाहजहा के कारावास पर समाप्त हो जाता है।'[2]

डा० सक्सेना ने इस ग्रन्थ की निष्पक्षता की पुष्टि के लिये कुछ उदाहरण दिये हैं। यथा "उसने खानेजहा लोदी के अनुचरों की यथेष्टसराहना की है यद्यपि संघर्ष के अन्तिम चरण में बारहा के सैयदों ने अधिक संख्या के बल पर उन्हें चित

1— सक्सेना बी पी (डा०) मुगल सम्राट शाहजहा, पृष्ठ ड (प्रवेश)
सक्सेना, बी पी (डा०) मुगल सम्राट शाहजहा, पृष्ठ ड (प्रवेश)

कर दिया। वह दक्षिणियों के तलवार चलाने की कला की प्रशंसा करता है। मुरारी पण्डित को तलवार का सूरमा बखान कर उसकी प्रशंसा करता है। नूरजहा को अपने दिवंगत पति के प्रति श्रद्धा की प्रशंसा करता है तथा कुछ हिन्दू पदाधिकारियों की, विशेष रूप से आसफ खा एवं दीवान मुकुन्दराय-की भूरि भूरि सराहना करता है। फिर भी वह स्पष्टरूप से यह स्वीकार करता है कि कन्धार में मुगलों की हार उनके निम्नकोटि के अग्निशस्त्रों के कारण हुई। दारा की पराजय के बाद शाहजहा और औरंगजेब में जो वार्ता हुई उसमें उसने स्वयं भाग लिया, अत उसका यह वृत्तान्त बहुत ही विश्वसनीय है।" 1

1- सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहा; पृष्ठ ङ एवं च (प्रवेश)

=●=

17 मिर्जा मुहम्मद काजिम : आलमगीरनामा

मुहम्मद काजिम के पिता का नाम मुहम्मद अमीन कजवीनी था जिसने "पादशाहनामा" नामक ग्रन्थ की रचना की। मुहम्मद काजिम ने 1688 ई० में "आलमगीरनामा" नामक ग्रन्थ लिखा था। लेखक ने अपनी कृति में स्वयं की काफी प्रशंसा की है और लिखा है कि उसकी आकर्षक शैली के कारण ही सम्राट औरंगजेब से उसका परिचय हुआ था। औरंगजेब ने उसे अपने शासनकाल के प्रथम वर्ष में मुन्शी के पद पर नियुक्त किया था। सम्राट औरंगजेब को मुहम्मद काजिम की लेखन शैली अच्छी लगी। इसलिये उसने उसको शासन से सम्बन्धित घटनाओं का रेकार्ड देखने की सुविधा उपलब्ध करवा दी। लेखक विश्वसनीय अधिकारियों से भी जानकारी प्राप्त कर सकता था। लेखक को स्वयं सम्राट से भी पूछताछ करने की स्वतन्त्रता प्राप्त थी। उसे यह आदेश दिया गया था कि वह जो कुछ भी लिखे उसे सम्राट के सामने पढ़कर सुनाये। यदि सम्राट उसमें कोई सुधार करे तो वह उसमें शामिल करें।

मुहम्मद काजिम 11 वर्ष बाद अपना यह ग्रन्थ लिख सका था किन्तु इस ग्रन्थ की रचना से औरंगजेब सन्तुष्ट नहीं था। इसे देखकर सम्राट ने आदेश दिया कि अब आगे न लिखा जाय। मूल पाण्डुलिपि जब औरंगजेब को बताई तब उसने सरकारी इतिहास को लिखने की स्वीकृति नामंजूर कर दी। औरंगजेब द्वारा पहले इतिहास लिखने की आज्ञा देकर फिर उसे बन्द करने का आदेश देना बड़ा विचित्र लगता है।

सर० जे० एन० सरकार ने लिखा है कि औरंगजेब ने आर्थिक कठिनाइयों के वशीभूत होकर ही मुहम्मद काजिम को इतिहास आगे न लिखने का आदेश दिया था परन्तु उनका तर्क उचित प्रतीत नहीं होता।

औरंगजेब के साम्राज्य में राजनीतिक गड़बड़ी, और चारों ओर विद्रोह हो रहे थे। इसलिये उसने दरबारी इतिहासकार नियुक्त करने की परम्परा को त्याग दिया था क्योंकि वह यह नहीं चाहता था कि साम्राज्य की बिगड़ती हुई अवस्था के बारे में जनसाधारण को जानकारी प्राप्त हो।

मुहम्मद काजिम ने आलमगीरनामा में औरंगजेब के शासनकाल के प्रथम दस वर्षों (1658-1668 ई०) का इतिहास लिखा है। लेखक ने घटनाओं का विस्तृत वर्णन अपनी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर लिखा है।

ग्रंथ की भाषा एवं शैली तथा ऐतिहासिक महत्व

मुहम्मद काजिम ने स्तुतिपूर्ण शैली में अपना ग्रंथ लिखा है। लेखक ने एक ओर औरंगजेब की आवश्यकता से अधिक प्रशंसा की है तो दूसरी ओर उसके भाग्यहीन भाइयों का मजाक उड़ाया है। इस ग्रंथ को भारत में प्रसिद्धि नहीं मिली।

मुहम्मद काजिम ने आलमगीरनामा नामक ग्रंथ सम्राट औरंगजेब को उसके शासन के 32 वें वर्ष में समर्पित किया। चूंकि लेखक ने सम्राट के संरक्षण में इस ग्रंथ की रचना की और उसे समर्पित भी किया। अतः इस ग्रंथ पर अधिक विश्वास नहीं किया जा सकता। लेखक ने इसमें एक तरफा विचार दिये हैं। उसने औरंगजेब की बहुत अधिक प्रशंसा की है और उसे आलमगीर की संज्ञा दी है।

अन्य समकालीन कृतियों के समान इसमें भी स्तुतियों की भरमार है। औरंगजेब ने लेखक को आदेश दे रखा था कि वह जो कुछ भी लिखे उसके सामने पढ़े। सम्राट उनको अपनी दृष्टि से जांचता था। लेखक को जिस जानकारी की आवश्यकता होती वह उसे दे देता था और उसी के अनुसार इतिहास लिखा जाता था। इतिहास में क्या लिखा जाए और क्या नहीं लिखा जाए यह सम्राट की इच्छा पर निर्भर था। यह चिन्तनीय है कि कौन सम्राट अपने को अपराधी या दोषी बताना चाहता था। स्पष्ट है कि ऐसे एक पक्षीय इतिहास पर पूर्णरूप से विश्वास नहीं किया जा सकता।

मूल्यांकन

आलमगीरनामा सम्राट के संरक्षण में लिखा गया इतिहास है। इसमें कई कमियां भी हैं। जैसे कि - इस ग्रंथ में निष्पक्षता का अभाव है। फिर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि औरंगजेब के साम्राज्य के प्रथम दस वर्ष की घटनाओं के लिये यह एक महत्वपूर्ण स्रोत है।



18 | मुहम्मद शाकी मुस्तइद खा : मआसिर-ए-आलमगीरी

मुहम्मद शाकी मुस्तइद खा ने 'मआसिर ए आलमगीरी' नामक ग्रंथ की रचना की थी। लेखक औरंगजेब की सेवा में चालीस वर्ष तक रहा था। उसने अपने ग्रंथ में बहुत सी आखों देखी घटनाओं का वर्णन भी किया है। मआसिर-ए-आलमगीरी की रचना औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात पूरी हुई थी।

लेखक ने घटनाओं का बहुत संक्षिप्त वर्णन किया है। इसमें 50 वर्षों का इतिहास 541 पृष्ठों में लिखा गया है। औरंगजेब के आदेशानुसार मुहम्मद शाकी मुस्तइद खा ने इतिहास लेखन कार्य आरंभ किया। यह ग्रंथ औरंगजेब की मृत्यु के तीन वर्ष पश्चात 1710 ई० में पूरा हुआ।

मआसिर ए-आलमगीरी दो भागों और एक छोटे से परिशिष्ट में विभाजित है।

प्रथम भाग - इसमें लेखक ने मिर्जा मुहम्मद काजिम की कृति आलमगीरनामा को आधार बनाकर औरंगजेब के शासनकाल के प्रथम दस वर्षों के इतिहास को संक्षिप्त रूप से लिखा है।

द्वितीय भाग - इसमें औरंगजेब के शासनकाल के चालीस वर्षों (1668 1707 ई०) का इतिहास है इसमें प्रत्येक वर्ष की घटनाओं का पृथक पृथक वर्णन किया गया है।

ग्रन्थ के दोष

(1) लेखक ने अपने ग्रंथ में उन स्रोतों का वर्णन नहीं किया है जहां से उसे जानकारी प्राप्त हुई थी।

(2) उसने औरंगजेब के शासनकाल की कई महत्वपूर्ण घटनाओं एवं महत्वपूर्ण अधिकारियों का वर्णन नहीं किया है।

मूल्यांकन

इन दोषों के होते हुए भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि लेखक ने सरल एवं स्पष्ट शैली में ग्रंथ की रचना की है तथा औरंगजेब के महत्वपूर्ण अभियानों का उल्लेख भी किया है। निस्सन्देह मआसिर ए आलमगीरी औरंगजेब के इतिहास को जानने का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

19 | खाफी खां : मुन्तखब-उल-लुबाब

खाफी खां ने मुन्तखब उल-लुबाब नामक ग्रन्थ की रचना की जिसे तारीखे खाफी खां के नाम से भी पुकारा जाता है। यह दो खण्डों में है, जिसमें लगभग एक हजार पृष्ठ हैं। इस ग्रन्थ में 1519 ई० में हुए बाबर के हमले से मुहम्मदशाह के शासन के 14 वें साल (1733 ई०) तक का इतिहास है। इसमें एक भूमिका भी है जिसमें मोहं से बाबर तक मुगलों और तातारों के इतिहास की रूपरेखा है। एक लेखक के रूप में प्रसिद्ध खाफी खां का वास्तविक नाम मुहम्मद हाशिम था। वह दिल्ली का निवासी था और एक अच्छे परिवार में पैदा हुआ था। उसने निजीतौर पर औरंगजेब के शासन की घटनाओं की एक सूचि तैयार की थी जिसको उसने बादशाह की मृत्यु के कुछ वर्ष बाद प्रकाशित किया। उसके पिता का नाम ख्वाजा मीर था, जो इतिहास का लेखक था तथा मुरादबख्श की नौकरी में उच्च श्रेणी का अधिकारी था। किन्तु जब शाहजादे की कारागार में हत्या हो गई तो ख्वाजा मीर ने औरंगजेब की अधीनता स्वीकार करली। मुहम्मद हाशिम खां औरंगजेब की सेवा में ही बड़ा हुआ था। उसे राजनीतिक और सैनिक काम के लिये नियुक्त किया जाता था। एक बार उसे गुजरात के सूबेदार ने बम्बई में अंग्रेजों के पास एक विशेष कार्यवश भेजा था, जिसका उसने रोचक वर्णन किया है।[1]

उसने कई विषयों में तो अंग्रेजों की प्रशंसा की है किन्तु यह भी लिखा है कि गम्भीर राजनीतिक चर्चा करते हुए भी वे यों ही हंसा करते हैं। खाफी खां ने जो कुछ देखा था या सुना, उसका उल्लेख करते हुए वह अपने लिये अन्य पुरुष का उपयोग करता है। फर्रुखसियर के शासनकाल में उसे हैदराबाद के प्रथम निजाम निजामुल्क ने अपना दीवान नियुक्त किया था। अतः लेखक इस उमराव के मामलों का रुचिपूर्वक और सहानुभूति के साथ वर्णन करता है। इसी कारण लेखक को कभी कभी निजामुलमुल्क भी कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि मुहम्मदशाह इस इतिहास को देखकर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने लेखक को "खाफी खां" अर्थात "गुप्त" की उपाधि से सम्मानित किया क्योंकि लेखक ने गुप्तरूप से अपना

1– खाफी खां मुन्तखब उल लुबाब, पृष्ठ 422 (भाग द्वितीय)

कार्य जारी रखा था। आधुनिक इतिहासकारों का भी यही मानना है कि इस नाम की उत्पत्ति इस प्रकार हुई और अंग्रेज इतिहासकार भी इसी कथन का समर्थन करते हैं। किन्तु यह बात उचित प्रतीत नहीं होती "खाफी" का नाम लेखक के कुटुम्ब और देश को घोषित करता है। खाफ अथवा खाफ नैशापुर के निकट खुरासान का एक जिला है। खाफी शब्द से एशिया के लोग अपरिचित नहीं हैं। शेख जैनुद्दीन खाफी, इमाम खाफी और ख्वाफी सैयद आदि नामों से परिचित हैं। इस बात की पुष्टि इससे भी होती है कि गुलामअली शाह मुहम्मद हाशिम को ख्वाजा मीर खाफी का पुत्र बताता है। इतना ही नहीं, लेखक स्वयं भी अपने पिता का नाम मीर खाफी लिखता है। यह मान लेना असम्भव नहीं होगा कि मुहम्मदशाह ने लेखक के असली नाम के सहारे पर मजाक किया हो और यह बताया हो कि अब वह वास्तव में खाफी हो गया है।[1]

रायल एशियाटिक सोसायटी हस्तलिखित ग्रंथों की सूचि में श्री मोरले ने प्रथम व्याख्या स्वीकार की है और लिखा है कि यह ग्रंथ बहुत अर्से तक छिपा रखा था। अतः इसके लेखक की उपाधि खाफी खां बन गई। किन्तु कर्नल लीज स्वतंत्र रुप से उसी परिणाम पर पहुंचा जिस पर सर एच० एम० ईलियट पहुंचा था। उसने बताया है कि खाफी जाति का नाम है और बहुत प्रचलित है। इसका अर्थ गुप्त इसलिये चल पड़ा है कि इसको भली भांति नहीं समझा गया। खाफी खां ने स्वयं लिखा है कि इस शब्द का हास्यास्पद अर्थ हो गया है और परिणामतः इसका वास्तविक अर्थ से उल्टा हो गया है। खाफी खां ने निस्संदेह लिखा है कि यह सब सामग्री उसने एक संदूक में बंद कर रखी थी, परन्तु यह संदूक उसकी "स्मृति" का संदूक था। अपने ग्रंथ को औरंगजेब की मृत्यु के बाद एक दो वर्ष तक खाफी खां छिपाये रखता, यह तो बात समझ में आती है परन्तु इस घटना के बाद लगभग तीस वर्ष तक उसे हवा न लगने देना इसका क्या कारण हो हो सकता है।[2]

ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व और मूल्यांकन

खाफी खां द्वारा लिखे गये ग्रंथ मुन्तखब-उल-लुबाब का ऐतिहासिक दृष्टि से काफी महत्व है। इसमें औरंगजेब के शासनकाल पूर्ण बताते हैं। औरंगजेब ने अपने शासन प्रबंध के इतिहास का लेखन निषेध कर दिया था। अतः उसके राज्य का पूरा और सम्बद्ध इतिहास दुर्लभ है। किन्तु इस निषेध के कारण

1— इलियट एवं डाउसन भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 43

2— इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 43

ही इस प्रकार का उत्तम और निष्पक्ष भारतीय इतिहास उपलब्ध हो सका है। इसलिये सम्राट आलमगीर के इस प्रकार के निषेध के लिये कृतज्ञता प्रकट की जानी चाहिये। इसमें तैमूरवंश का पूर्ण इतिहास है। इसमें मुगलों का इतिहास बाबर से मुहम्मदशाह के शासनकाल के 14वें वर्ष तक का अर्थात 1519 ई० से 1733 ई० तक का इतिहास उपलब्ध होता है प्रारम्भ में इसमें तैमूर वंश का स्पष्ट और संक्षिप्त वृतान्त लिखा गया है। यहां वंश संस्थापक 'बाबर से अकबर' के राज्यकाल तक का इतिहास है। इस भाग को संक्षिप्त रूप कर दिया गया है क्योंकि पिछले लेखकों द्वारा तमाम घटनाओं का पूर्ण वर्णन कर दिया गया था। इस ग्रन्थ का अधिकांश भाग अकबर की मृत्यु के बाद के 130 वर्ष का इतिहास है। लेखक ने लिखा है कि इसके अन्तिम 53 वर्ष का इतिहास स्वयं का आंखों देखा हुआ है या उन लोगों से जबानी सुना है, जिन्होंने घटनाओं को देखा था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि औरंगजेब ने जब निषेध का आदेश जारी किया उससे पूर्व ही इस ग्रन्थ का आधा भाग पूर्ण हो चुका था परन्तु लेखक चाहता था कि यह ग्रन्थ उसके जीवन की समाप्ति तक चलता रहे।

... ब्रिटीश ... का ओरियन्टल ट्रांसलेशन फण्ड के लिये अनुवाद और प्रकाशन किया गया था। इसका लेखक इस इतिहास के विषय में लिखता है कि इसमें उन विभिन्न कार्यों का पूरा और विशेष उल्लेख है जिनको लेखक ने स्वयं लिखा था। परन्तु साथ ही यह खेद भी है कि उसने इस ग्रन्थ को भी नहीं देखा। जब कर्नल डौ ने "हिस्ट्री आफ हिन्दुस्तान" लिखी तो यह औरंगजेब के शासन के दसवें वर्ष पर समाप्त कर दी गई, क्योंकि इससे आगे युग पर प्रकाश डालने वाली कोई सामग्री उपलब्ध नहीं थी। मिल महोदय को भी यही शिकायत थी कि औरंगजेब का पूरा इतिहास नहीं मिलता। इस त्रुटि को श्री स्टुअर्ट एलफिन्स्टन ने निवारण कर दिया है। खाफी खां ने इतिहास का विवेकपूर्ण उपयोग करके उसने औरंगजेब का और उसके बाद के उत्तराधिकारियों का इतिहास पूरा कर लिया है। मद्रास आर्मी के मेजर गॉर्डन ने जहांगीर के शासन के अन्त तक खाफी खां के इतिहास का अनुवाद किया था। एलफिन्स्टन ने इसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है। उसे खेद है कि यह अनुवाद पूरी पुस्तक का नहीं है। यह इतिहास वर्तमान काल तक का है और सारे युग का एक सही इतिहास है।[1]

खाफी खां औरंगजेब एवं मुहम्मदशाह का समकालीन था। उसने आंखों देखा वर्णन अपनी कृति में लिखा है। इसलिये उसका यह ग्रन्थ प्रामाणिक माना जाता है। उसने घटनाओं का सुन्दर यथा तथ्य और क्रमबद्ध विवरण दिया है।

1— इलियट एवं डाउसन – भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 150

उसने सरकारी दृष्टिकोण से अपना इतिहास लिखा है । इसलिये उसने शिवाजी को साम्राज्य का एक विद्रोही बताया । यद्यपि उनकी वीरता की प्रशंसा उसने की है । खाफी खां ने मनसबदारी प्रथा के कारणों का वर्णन किया है । इसके अतिरिक्त मराठों के कार्यकलापों जागीरदारों की स्थिति एवं केन्द्रीय प्रशासन का अच्छा विवरण दिया है । उसने एक लम्बे समय तक आमिल के पद पर कार्य किया था । अतः उसने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर राजस्व व्यवस्था का वर्णन करते हुए लिखा है कि उस समय आमिल रिश्वतखोर थे और कृषकों की स्थिति काफी दयनीय थी ।

बादशाह औरंगजेब के जीवनकाल में साम्राज्य के महत्वपूर्ण पद पर रहने के कारण खाफी खां का विवरण वास्तविकता एवं सजीवता से ओतप्रोत है । उसने अपनी रचना में आंखों देखा वर्णन प्रस्तुत किया है जो काफी आकर्षक है । हुगली में यूरोपियन लोगों का वर्णन करते हुए उसने लिखा है कि 'फिरंगियों ने अपनी एक व्यापारिक बस्ती हुगली में स्थापित कर ली थी जो बंगाल में राजमहल से 20 कोस पर है । पिछले समय में उन्होंने अपने रहने के लिये और अपना माल रखने के लिये एक भूखण्ड का पट्टा प्राप्त कर लिया था । वहां उन्होंने एक दुर्ग का निर्माण किया जिसमें प्राचीरें और बुर्जें थीं और उस पर तोपें चढ़ा दीं । उन्होंने एक पूजा घर भी बनवाया जो कलीसा कहलाता था । कुछ समय बाद वे अनुमति से अधिक कार्यवाही करने लगे । वे पास के मुसलमानों को तंग करते थे । यात्रियों को सताते थे और अपनी बस्ती को अधिकाधिक दृढ़ करते जाते थे । उनका सबसे बुरा कर्म यह था कि अपने अधीन समुद्र तट पर स्थित बन्दरगाहों में से अपनी मुसलमान प्रजा या हिन्दू प्रजा को जन धन की कोई क्षति तो नहीं पहुंचाते थे । परन्तु इनमें जब कोई छोटे छोटे बच्चे छोड़कर मर जाता था तो उसकी सम्पत्ति और सन्तान पर वे अपना अधिकार कर लिया करते थे और बच्चे चाहे सैयदों के हों, चाहे ब्राह्मणों के हों उन्हें वे इसाई दास बना लेते थे । दक्षिण में कोंकण के बन्दरगाहों में समुद्र तट पर जहां भी उनके दुर्ग थे, वहां ये लोग ऐसा ही किया करते थे । इन निर्दयी कामों को सब लोग जानते थे, तो भी सब जाति के हिन्दू, और मुसलमान जीविकोपार्जन के लिये उनकी बस्तियों में जाया करते थे । फिर भी लोग किसी फकीर को अपनी सीमा के अन्दर नहीं घुसने देते थे । यदि कोई भूला भटका वहां चला जाता और वह हिन्दू होता तो उसको ऐसी कठोर यातनायें दी जाती थी कि शायद ही कभी वह प्राण बचाकर वहां से निकलता था और यदि वह मुसलमान होता तो उसे बन्दी बनाकर कुछ दिन तक दुःख दिया जाता था और फिर वह छोड़ दिया जाता था । जब यात्री उनकी सीमा में प्रवेश करते थे तो सीमा शुल्क के कर्मचारी उनके सामान की तलाशी लेते थे और यदि तम्बाकू मिलती, तो कभी किसी प्रकार की

नरमी नही की जाती थी, क्योंकि तम्बाकू बेचने का लाईसेंस दिया जाता था और किसी को अपनी निजी आवश्यकता से अधिक तम्बाकू अपने पास रखने की अनुमति नही थी। इनके पूजा गृह हिन्दू मन्दिरो से भिन्न थे। विशेषता यह थी कि वहा पर अहर्निश कपूर की वत्तियां जला करती है। उनके अन्य सिद्धान्तों के अनुसार उन्होंने ईसा और मेरी की काष्ठ और मोम तथा दूसरे पदार्थों की चमकीली प्रतिमाए बना रखी हैं। परन्तु अंग्रेजों के गिर्जों मे इस प्रकार की प्रतिमाए नही हैं। यद्यपि ये ईसाई है। इन पृष्ठों का लेखक वहा पर कई बार गया और उनके विद्वानों से कई बार बातचीत की है और जो कुछ उसने देखा है, उसी का वर्णन किया है।[1]

घटनाओं का सूक्ष्म एव मार्मिक वर्णन

खाफीखा ने घटनाओं का वर्णन इतना सजीव किया है कि पाठ्य ग्रन्थ को पढते हुए ऐसा महसूस करता है कि जैसे घटना उसकी आंखों के सामने घटित हो रही हो। 1658 ई० की गर्मी में शाहजहा की रुग्णावस्था एव उस समय की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए खाफी खा ने लिखा है कि "आगरा की गर्मी सम्राट के अनुकूल नही थी।" ज्योही वह किंचित स्वस्थ हुआ तो वह दिल्ली के लिये रवाना हो गया। दाराशिकोह आरम्भ से ही इस प्रस्थान के विरुद्ध था और प्राय इसका विरोध किया करता था। अब राजा जसवन्त की पराजय का समाचार सुना तो वह भयभीत हो गया और अपने पिता को उसे प्रार्थनायें और शिकायतें करके बड़ा तग किया और वापिस लौट आने के लिये राजी कर लिया। अब सघर्ष होने ही वाला था। उसके लिये बडी शीघ्रता से तैयारियां की जाने लगी और अपने पिता के बडे बडे उमरावों और अनुचरों के साथ तथा नये व पुराने 60 हजार सैनिको को और भारी तोपखाना साथ लेकर उसने प्रयाण शुरु किया। ऐसा कहा जाता है कि सम्राट ने दारा शिकोह के प्रयाण का बार बार विरोध किया था और कहा था कि इसका भाईयों में परस्पर विरोध तथा सघर्ष के अतिरिक्त और कुछ परिणाम नहीं होगा। उसने यह भी विचार किया था कि वह दोनों भाइयों को समझाने के लिये जाये और दोनों में समझौता करे। इस

1– खाफी खा - मुन्तखब-उल-लुबाब, भाग दो पृष्ठ 468

हेतु यात्रा करने के लिये उसने तैयारी के आदेश भी दे दिये थे। परन्तु दाराशिकोह इससे सहमत नहीं था। खानजहा, शाईस्ता खा की सलाह से उसने अपने पिता का ध्यान इधर से दूसरी ओर फेर दिया। ऐसा भी लिखा है कि राजा जसवन्त की पराजय की तथा दक्षिण और अहमदाबाद की सेनाओं के सम्मेलन की सूचना आने से पूर्व सम्राट की इच्छा थी कि वह जाकर उनसे मिले और इस विषय में उसने कई बार खानेजहा से सलाह ली थी। खानेजहा औरगजेब का मामा था और उसकी ओर बहुत झुका हुआ था। उसने सम्राट की योजना का अनुमोदन नही किया और औरगजेब की बुद्धि तथा चरित्र की प्रशसा करता रहा। इसका कारण यह था कि औरगजेब के प्रति उसका स्वाभाविक स्नेह था। 'जब राजा जसवन्त की पराजय होने का समाचार आया, तो सम्राट खानेजहा से उसकी सलाह के विषय मे बहुत क्रुद्ध हुआ और उसकी छाती में छडी मारी और दो तीन दिन तक उससे नही मिला परन्तु उसका कृपा भाव पुन जागृत हो गया और फिर उससे अपने पुत्रों से मिलने के विषय मे परामर्श किया, किन्तु खानेजहा ने वही सलाह दी, जो पहले दी थी इसलिये यद्यपि तैयारियां तो कर ली गई थी, तथापि यात्रा नही की गई।"[1]

औरगजेब के शासन के चौथे वर्ष 1071 हिजरी (1661 ई०) का वर्णन करते हुए खाफी खा ने लिखा है कि 'शाहजादा मुहम्मद ने राजा रूपसिंह की पुत्री से विवाह किया (1071 हिजरी) असम प्रदेश बगाल के उत्तर और पूर्व मे लम्बी पर्वत श्रेणियों के मध्य मे स्थित है। इसकी लम्बाई 100 जरीबी कोस है और इसकी चौडाई उत्तर के पहाडो से दक्षिण तक 8 दिन की यात्रा है। ऐसा कहा जाता है कि यह देश अफरासियाब के वजीर पीरान वेसिया का था। यहा का राजा अपने को ईरान का वशज बताता है। आरम्भ मे राजा अग्निपूजक थे, फिर कालान्तर में मूर्तिपूजक हिन्दू बन गये। इस देश का यह रिवाज है कि कि प्रत्येक व्यक्ति राजा को प्रतिवर्ष एक तोला स्वर्ण रेणु दिया करता है। जब यहा का राजा या कोई बडा आदमी या जमीदार मरता है तो वे उसके लिये एक बडी कब्र बनाते हैं और उसमें उसकी पत्नियों उप पत्नियों घोडों सोने चादी के बर्तनों

---

[1] खाफी खा - मुन्तखब उल लुबाब, भाग दो, पृष्ठ 20

आदि को जिनका उस देश में उपयोग होता है तथा आभूषण, सुगन्धित पदार्थ आदि जो कई दिन तक चल सकें, रख देते हैं। वे समझते हैं कि ये वस्तुएं मृतक को यहां से परलोक तक पहुंचने के लिये चाहिये। इन सब चीजों को रखकर वे कब्र का द्वार बन्द कर देते हैं। इस रिवाज के कारण खानखाना को एक कब्र खोदने पर बहुत सा धन प्राप्त हुआ था। कामरूप देश आसाम की सीमा पर स्थित है। दोनों देशों में मित्रता है। गत 20 वर्ष से यहां के लोग उत्पात किया करते थे। ये बंगाल के शाही इलाकों पर आक्रमण करके वहां की मुसलमान प्रजा को बन्दी बनाकर ले आया करते थे। इस प्रकार जन और धन की बड़ी क्षति हुआ करती थी और मुसलमान धर्म बड़ा कलंकित हुआ करता था। शाहजहां के शासन काल में बंगाल के सूबेदार इस्लाम खां ने इस देश पर सेना चढ़ाई, परन्तु काम पूरा नहीं हुआ, उससे पहिले ही बुलाकर उसे वजीर के पद पर नियुक्त कर दिया गया।[1]

सम्राट औरंगजेब ने 1668 ई० में संगीत एवं नृत्य पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। उसका वर्णन करते हुए खाफी खां ने लिखा है कि सुप्रकृति सम्राट प्रतिदिन कुरान के कानून को कार्यान्वित कराने की चिन्ता में रहा करता था। वह चाहता था कि आदेशों और निषेधों का पूरा पालन हो। यह भी आदेश दिया गया कि राहदारी, जानदारी, और दूसरे कर जिनसे सरकार को लाखों रुपयों की आय होती थी बन्द कर दिये जायें। मद्यपान व्यभिचार के अड्डों और यात्राओं तथा मेलों का निषेध कर दिया गया था। इन यात्राओं एवं मेलों में हजारों हिन्दू स्त्री पुरुष इकट्ठे होते थे, बन्द कर दिये गये। इन मेलों में लाखों रुपये की चीजें खरीदी और बेची जाती थी, जिससे शाही कोष में बड़ी धनराशि पहुंचा करती थी। बड़े बड़े गायक और संगीतज्ञों को जो दरबार में नौकर थे, अपने व्यवसायों के प्रति लज्जित किया गया और उन्हें मनसब दिये गये। सार्वजनिक घोषणाओं द्वारा नाचने गाने पर रोक लगा दी गई। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन बहुत से गाने वाले और भाट जुलूस बनाकर एक जनाजा ले जाने लगे, उसके चारों ओर लोग रोते जाते थे। वे लोग झरोखा दर्शन के नीचे होकर निकले, जब सम्राट ने जनाजे के विषय में पूछा तो कहा गया कि संगीत का जनाजा है। तब औरंगजेब ने कहा कि इसको गहरा दफनाया जाए ताकि गाने की कोई आवाज सुनाई न दे।[2]

खाफी खां का वर्णन आवश्यक है। जब शिवाजी आगरा से वेश बदल कर रवाना हुए तो उस समय उन्होंने किस प्रकार से मार्ग में आने वाली बाधाओं से छुटकारा पाया। इसका वर्णन खाफी खां ने निम्न प्रकार से किया है। अपनी

1— खाफी खां - मुन्तखब-उल लुबाब, भाग द्वितीय पृष्ट 130

2— खाफी खां - मुन्तखब उल लुबाब, भाग द्वितीय पृष्ठ 212

दाढी मूछें साफ करवा कर और कपड़े बदलने के पश्चात् शिवाजी मथुरा से आगे चला। उसका वास्तव पुत्र और 40-50 अनुचर उसके साथ थे। इन सबन भी अपने चेहरों पर भस्म लगाकर हिन्दू साधुओं का सा वेश बना लिया था। बहुमूल्य रत्न, स्वर्ण मुद्रायें और हूण उन्होंने छडियों में छिपा रखे थे। ये इसी प्रयोजन से पोली की गई थी और इनके सिरों पर गाँठें बनी हुई थी। कुछ जवाहरात जूतों मे भी सिले हुए थे। अनुचरो ने तीन प्रकार के साधुओं का वेश बनाया था। वैरागी गुसाई और उदासी, ये सब इलाहाबाद के मार्गों से बनारस की ओर जा रहे थे। एक बहुमूल्य हीरा और कुछ हीरे लाल मोम में छिपाकर एक अनुचर के कपड़ों में थे। दूसरे रत्न अन्य अनुचरो के मुंह में थे। इस प्रकार चलते हुए वे लोग ऐसे स्थान पर जा पहुंचे जहां का फौजदार अलीकुली खां निजी और सरकारी तौर पर जानता थी कि शिवाजी भाग गया है। उसने सुना कि हिन्दू साधुओं की तीन मंडलियां आई हैं। तो उसन आदेश दिया कि उनको गिरफ्तार करके जांच की जाये। इनको और कुछ अन्य यात्रियों को एक रात और दिन हवालात में रखा गया, दूसरी रात के दूसरे पहर शिवाजी निजी तौर पर फौजदार से अकेला मिला और उससे कहा कि- मैं शिवाजी हूं और मेरे पास एक हीरा और एक लाल है, जिनका मूल्य एक लाख रुपये है। यदि तुम मुझे पकड़कर वापिस भेज दोगे या मेरा सिर काटकर रवाना कर दोगे, तो ये दोनों रत्न आपको नहीं मिलेंगे। यह मैं हूं और मेरा यह सिर हैं। परन्तु इस स्थिति में मुझ दुखिया पर अपना हाथ मत उठाओ। अलीकुली ने समझा कि जो रिश्वत तुरन्त मिल रही है, अच्छी है। भावी पुरस्कार का क्या भरोसा है। उसने दोनों रत्न ले लिये और अगले दिन प्रातःकाल कुछ जांच करके उन यात्रियों और साधुओं को छोड़ दिया।[1]

खाफी खां के औरंगजेब की रुग्णावस्था एवं मृत्यु के समय का विवरण उसकी चातुर्यता को प्रदर्शित करता है। इस वर्णन से ऐसा लगता है कि जैसे वह बादशाह के पास ही रहा करता था। सम्राट के अंगों में दर्द रहने लगा। उसकी रुग्णता से चिंता उत्पन्न हो गई परन्तु फिर भी वह परीश्रम करता था। दरबार में बैठता था, काम करता था और अपने लोगों को सान्त्वना देता था। तो भी उसकी रूग्णता बढ़ती गई, वह अचेत हो जाया करता था।

1.- खाफी खां - मुन्तखब उल-लुबाब, भाग दो, पृष्ठ 217

इसलिये चिन्ताजनक अफवाहें फैलने लगी। सेना शिविर में 10-12 दिन तक बडा सन्ताप रहा, परन्तु ईश्वर की दया से वह अच्छा होने लगा और कभी कभी दरबार में आने लगा। शाही सेना शत्रु के देश में पडी हुई थी। उसके निवास का कोई ठिकाना नही था। लोगों को भय था कि यदि कोई दुखद घटना घटी तो उस पर्वतीय देश में क्रुद्ध काफिरो के हाथ से कोईनहीं बच सकेगा। हकीमो की सम्मति से उसने चोबचीनी खाई। सप्ताह म तीन चार बार वह औषधि खाता था और प्रतिदिन दान देता था। स्वास्थ्य प्राप्ति पर उसने हकीमो को खूब पुरस्कृत किया और भगवान को धन्यवाद दिया। रजब मास के मध्य मे कलीच खा को सूबेदार बनाकर उसने बहादुरगढ की ओर जो बीरगाव भी कहलाता था, प्रयाण करना शुरु किया। धीरे-धीरे बडी कठिनता के साथ उसने चलना शुरु किया और शाबान के अन्त म वह बीरगाव पहुचा। फिर रोजों के दिनो म सेना को आराम देने के निमित्त उसने वहा पर 40 दिन ठहरने का आदेश दिया।[1]

शुक्रवार 28 जिलकाद, को नामन के 51 वें वर्ष में जो 1118 हिजरी (21 फरवरी, 1707 ई०) को पडता था), प्रातःकाल की नमाज और कलमा पढने के बाद एक पहर दिन चढे सम्राट की मृत्यु हो गई। वह 90 वर्ष और कुछ मास का था और 50 वर्ष तथा ढाई मास राज्य कर चुका था। उसे दौलताबाद के समीप शेख बुरहानुद्दीन और अन्य धार्मिक फकीरों और शाह जरीज बख्श की कब्रों के निकट दफनाया गया और इस कब्र का काम चलाने के लिये बुरहानपुर के कुछ जिले नियत कर दिये गये। तैमूर वंश के शासकों में बल्कि दिल्ली के सुलतानों में सिकन्दर लोदी के सिवाय अपनी भक्ति और तत्व और न्याय के विषय में औरगजेब के अतिरिक्त कोई इतना प्रसिद्ध नहीं हुआ। साहस, कष्ट सहन और ठीक ठाक न्याय के लिये वह अनुपम था। वह दण्ड देता था तो कुरान के अनुसार ही देता था। दण्ड के बिना प्रशासन भी नही चल सकता था। पारस्परिक ईर्ष्या के कारण उसके अमीरों में फूट फैल गई थी, इसलिये उसने जो भी योजना बनाई व्यर्थ हुई और जो भी काम अपने हाथ में लिया उसको पूरा करने में बहुत समय लगा और उद्देश्य पूरा नही हुआ। यद्यपि वह 90 वर्ष तक जीवित रहा, तथापि उसकी समस्तइन्द्रिया अक्षुण्ण रही। केवल कर्णेन्द्रिय म किंचित निर्बलता आई थी, जो भी दूसरों को मालुम नही पडती थी। वह कई रातें भगवान की भक्ति और प्रार्थना में व्यतीत किया करता था और मनुष्योचित स्वाभाविक सुखों से दूर रहता था।[2]

1– खाफी खा - मुतखब उल-लुबाब, भाग द्वितीय, पृष्ठ 535

2– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 277

खाफी खा ने बहादुरशाह के समय से हुए मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों का वर्णन किया है। उसने यह भी लिखा है कि फरुखसियर को सैयद अब्दुल्ला और हुसैन अली को राज्य मे उच्च असैनिक और सैनिक पद नहीं देना चाहिये था क्योंकि उन्हे प्रशासकीय मामलों का कोई अनुभव नहीं था। खाफी खा ने लिखा है कि मैंने निष्पक्ष रहकर अपने ग्रन्थ की रचना की है, न तो मैंने मित्रो का समर्थन किया है और न ही शत्रुओ की निन्दा की है। मैंने जो कुछ देखा अथवा लोगो से सुनने के पश्चात सत्य लगा, उसी को लिखा है।

ग्रन्थ के दोष

(1) खाफी खा शिया मुसलमान था इसलिये वह तुर्रानी सामन्तों से ईर्ष्या करता था। यही कारण था कि उसने अपने ग्रन्थ मे शिया सामन्तों के प्रति पक्षपात किया है। निजामुल मुल्क इसमे अपवाद है।

(2) खाफी खा ने कारणों और परिणामों मे समन्वय करने का प्रयास नहीं किया है।

मूल्यांकन

इन दोषों के बावजद भी यह स्वीकार करना पडेगा कि खाफी खा ने घटनाओ का यथातथ्य एव क्रमबद्ध विवरण दिया है। उसने मुगल साम्राज्य के पतन के कारणों का आलोचनात्मक वर्णन किया है। औरगजेब के शासन का सम्पूर्ण विवरण होने से इस ग्रन्थ का महत्व और भी बढ गया है। सक्षेप मे यह ग्रन्थ बाबर के भारतवर्ष पर आक्रमण से लेकर मुहम्मदशाह के शासनकाल के 14 वें वर्ष तक की घटनाओ को जानने के लिये एक महत्वपूर्ण स्रोत है।



20 मुहम्मद कासिम : इबरतनामा

मुहम्मद कासिम ने "इबरतनामा" नामक ग्रन्थ की रचना की जो "तारीखे बहादुरशाही" के नाम से भी प्रसिद्ध है। लेखक ने अपनी कृति में लिखा है कि वह अमीर-उल उमरा सैयद हुसैन अली का आश्रित था। यह ग्रन्थ 224 पृष्ठों का है। जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर 18 पंक्तियां लिपीबद्ध हैं। इसी नाम के दूसरे ग्रन्थ की ओर अपूर्ण प्रतिलिपि प्राप्त हुई है। यह उसी लेखक की है। दोनों की भाषा में थोड़ा बहुत अन्तर है। इससे ज्ञात होता है कि सम्भवत यह प्रथम कृति का दूसरा संस्करण हो, विशेषकर इसलिये कि इसका आकार प्रकार अधिक सजा हुआ है तथा इसकी शैली भी अपेक्षाकृत अधिक परिमार्जित है। किन्तु इस नाम के अन्य कई ग्रन्थ हैं और इसके पीछे के इतिहास का भी यही नाम है।[1]

ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व -

इस ग्रन्थ में औरंगजेब की मृत्यु से लेकर कुतुबुल मुल्क सैयद अब्दुल्ला की मृत्यु तक का इतिहास है। लेखक का उद्देश्य था कि बारहा के दोनो महान् सैयदों का इतिहास लिखें, जो पूर्ण हो चुका था। इसकी विषय सूचि में प्रत्येक प्रकरण के पृष्ठ भी दिये गये हैं। इलियट एवं डाउसन की पुस्तक भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) में यह सूचि इस प्रकार दी हुई है। इबरतनामा लिखने के कारण, लेखक अमीर उल उमरा सैयद हुसैन अली का शहीद का दरबारी बना इसके कारण, औरंगजेब आलमगीर की मृत्यु का वृतान्त तथा बहादुरशाह के शाही सिंहासन पर बैठने का शुभ अवसर, मुहम्मद आजमशाह का प्रयाण तथा मुहम्मद मुअज्जम बहादुरशाह से युद्ध करने के उद्देश्य से और आगरा के समीप जाजू की की रणभूमि में सेनाओं का मुकाबला,-मुहम्मद आजमशाह में और मुहम्मद मुअज्जम बहादुरशाह तथा उसके पुत्रों में लड़ाई और बहादुरशाह की विजय। बहादुरशाह की विजय पर उत्सव और पुराने तथा नये सेवकों एवं दितेदारों को पुरस्कार, बहादुरशाह का मुहम्मद कामबख्श के विरुद्ध दक्खिन को प्रयाण, अपने छोटे भाई कामबख्श पर विजय प्राप्त करके उसकी वापसी, पंजाब में सिक्खों की

1— इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 411

गडबड तथा सरहिन्द का विनाश, एवं नानकशाह फकीर की प्रशंसा, लाहौर में शालीमार बाग के समीप चारों शाहजादों में युद्ध, दो शाहजादे जहांदरशाह, और रफी उस्मान तथा मुहम्मद मुइज्जुद्दीन जहांदरशाह से युद्ध, दिल्ली के तख्त पर मुहम्मद मुइज्जुद्दीन जहांदरशाह का आरोहण, लाहौर के समीप चार शाहजादों की लड़ाई का समाचार सुनकर अपने पिता और भाई का बदला लेने के लिये फरुखसियर की तैयारी, जहांदरशाह के पुत्र सुलतान आज्जुद्दीन की सेना की दोनों सैयदों से हार और उसका पलायन, मुहम्मद फरुखसियर का आगरा में सिंहासन रोहण, दोआब का जमींदार ईसा खां एवं उसका परिवार और परिजन तथा कसूर के अफगान, शाहदाद खां द्वारा सबका वध, फरुखसियर के शासन में गड़बड़ के कारण अजमेर के राजपूतों और अमीरों के मामलों के नियन्त्रण, नवाब सैयद हुसैन अली खां की नियुक्ति और फरुखसियर के वास्ते राजा अजीतसिंह की पुत्री को रावी के तट पर लाने का आदेश, रावी नदी के तट पर फरुखसियर का राजा अजीतसिंह राठौड़ की पुत्री से विवाह, दक्खिन की सूबेदारी हुसैन अली खां को और पूर्व प्रान्त की सूबेदारी हमला, बहादुर को दी गई, मुहम्मद रफीउद्दरजात, को तख्त पर बिठाया गया और फरुखसियर की मृत्यु शाहजादा नेकुसियर को तख्त पर बिठाया गया व रफीउद्दौला शाहजहां द्वितीय के साथ हुसैन अली खां का आगरा को प्रयाण तथा आगरा दुर्ग पर विजय। सैयदों की सहायता से फतेहपुर में मुहम्मद गाजी का तख्त पर बैठना, राजा छबीलेराम के भाई गिरधर बहादुर द्वारा इलाहाबाद में उत्पात व उसके विरुद्ध हैदर कुली खां को भेजा जाना, तथा राजा रतन बहादुर का प्रस्थान मुहम्मदशाह का दक्खिन को प्रयाण, तथा एक मुगल के कपट से सैयद हुसैन अली खां की मृत्यु सैयद हुसैन अली के वध की सूचना, उसके भाई सैयद अब्दुल्ला को मिली, उसका सन्ताप, मुहम्मद अमीन खां और सैयद अब्दुल्ला खां कुतुब उल मुल्क में लड़ाई तथा उपर्युक्त सैयद की गिरफ्तारी।[1]

1– इलियट एवं डाउसन - भारत का इतिहास (सप्तम खण्ड) पृष्ठ 411-412

21 भीमसेन : नुस्खा-ए-दिलकुशा

जिन हिंदू इतिहासकारों ने फारसी भाषा में औरंगजेब के शासनकाल का ऐतिहासिक विवरण दिया है, भीमसेन उनमें से एक है। वह कायस्थ जाति का था तथा बुरहानपुर का रहने वाला था। उसके पिता का नाम रघुनाथदास था जो मुगल सेना के तोपखाने में मुशरिफ के पद पर कार्य करता था। उसके पिता 1657 ई० में औरंगाबाद में नियुक्त थे। इसलिये भीमसेन ने वहां पहुंचकर फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। उसने पिता के वृद्ध हो जाने पर उनके मुशरिफ का कार्य स्वयं न देखना प्रारम्भ कर दिया किंतु 1670 ई० में उसके पिता ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। इसके पश्चात् कुछ समय भीमसेन सेनापति दाऊद खां कुरैशी एवं महाराजा जसवंतसिंह की सेवा में रहा। 1686 ई० में उसने अपने परिवार के साथ रहना प्रारम्भ कर दिया। फिर भी उसने औरंगजेब के सेनापति दलपतसिंह बुन्देला के अधीन कई वर्षों तक मुगल सेना में अपनी सेवायें दीं। उसने दक्षिण के युद्धों में भी भाग लिया था। 1700 ई० में जब मुगल सेना ने पनहाला दुर्ग को घेर रखा था, तब भीमसेन ने अपने ग्रन्थ के लेखन का कार्य प्रारम्भ किया था। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्रों में राज्यप्राप्ति के लिये उत्तराधिकार संघर्ष प्रारम्भ हो गया। जिसमें भीमसेन के स्वामी दलपतराव बुंदेला ने आज़म का पक्ष लिया और वह जाजऊ के युद्ध में लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ। इस पर भीमसेन भी सेवानिवृत्त होकर अपने परिवार के साथ रहने दतिया चला गया।

ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व

भीमसेन के पूर्व भी औरंगजेब के शासनकाल का इतिहास लिखा जा चुका था किन्तु संक्षिप्त होने के कारण उसमें पूरी जानकारी प्राप्त नहीं होती। औरंगजेब के समय में हुए दक्षिणी भारत एवं उत्तरी भारत के परिवर्तन, घटनाओं,

के कारण, और परिणाम, का इस ग्रन्थ मे विस्तृत विवेचन किया गया है। इसके अतिरिक्त उस समय की प्रजा और देश की दशा के बारे मे इस ग्रन्थ से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है भीमसेन ने अपना जीवन दक्षिण मे मुगलों के साथ नगरो एव छावनियों मे व्यतीत किया था तथा कुमारी अंतरीप से दिल्ली तक के प्रदेशो की यात्रायें की थी।

सर जदुनाथ सरकार ने लिखा है कि भीमसेन एक महान् सस्मरण हिंदू लेखक था, जिसके ग्रन्थ से उस समय की घटनाओ और ऐतिहासिक व्यक्तियों के बारे मे जानकारी प्राप्त होती है। इसलिये सरकार ने उसके ग्रन्थ को अद्वितीय एव अमूल्य माना है। भीमसेन मुगल सेना मे बाबू (क्लर्क) के पद पर कायरत था इस वजह से उच्च पदाधिकारियो से उसका निकटत्तम सम्पर्क स्थापित हुआ। यही कारण था कि उसे घटनाओ की सही जानकारी प्राप्त होती रही। और कई राज्यों के गुप्त भेद भी मालुम होते रहे। प्रथम तो वह मुगल शासक की राजधानी से बहुत दूर था एव द्वितीय उसने किसी मुगल बादशाह के सरक्षण मे अपने ग्रन्थ की रचना नही की थी। अत उसने घटनाओ को छिपाने या तथ्यो को तोड मरोड कर लिखने का प्रयास नही किया है और न ही उसने मुगल सम्राट या किसी दरबारी की खुशामद मे पूर्ण प्रशसा की है।

इस प्रकार भीमसेन की कृति मे हमे वे बुराइया देखने को नही मिलती जो कि अन्य दरबारी इतिहासकारों की कृतियों मे पायी जाती हैं। उसने घटनाओं का सत्य विवरण ही प्रस्तुत किया है। ऐतिहासिक व्यक्तियों के चरित्र का वर्णन करते हुए उनके दोषों को भी प्रकट किया है। उसने एक तटस्थ इतिहासकार की भांति औरंगजेब के समय की घटनाओं के सही कारणों और परिणामों का वर्णन किया है।

भीमसेन ने खिरकी का हाल भी लिखा है। उसका कथन है कि इस नगर का सस्थापन मलिक अम्बर ने किया था। औरंगजेब ने इसका नाम बदलकर औरंगाबाद कर दिया। शाहजादा की बीमारी के बाद जो घटनायें घटी, विशेषत दारा से उनसे सम्बन्धित दिया गया वृत्तान्त तो अत्यन्त विश्वसनीय है।[1]

1– सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहां, पृष्ठ ज (प्रवेश)

भीमसेन दक्षिण में मुगल सेना के साथ था। अत उसकी कृति से दक्षिण के मुगल युद्धों के बारे में विस्तृत एव महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। उसने उस समय की खाद्य पदार्थों की कीमतें, सड़कों की दशा लोगों के सामाजिक जीवन एव मनोरजन के साधनो का विवरण भी दिया है। ऐसा विवरण हमें अन्य समकालीन इतिहासकारों की कृतियों में प्राप्त नही होता। 17 वी शताब्दी के दक्षिण के इतिहास को जानने के लिये यह एक अमूल्य साधन है।

भीमसेन का चरित्र प्रभावशाली, विनम्र, स्पष्ट तथा दृढ था। उसके ग्रन्थ में कुछ दोष भी हैं जैसे कि अपने रिश्तेदारों के प्रति असीम स्नेह। भीमसेन हिन्दू था इसलिये उसकी हिन्दू धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी। भीमसेन ने अपनी कृति में कई शब्दों की जो व्याख्यायें दी हैं, वे अत्यन्त रोचक हैं। जैसा कि उसने भौसला शब्द के विषय में लिखा है कि इस वंश का संस्थापक राजा उग्रसेन था। वह चित्तौड से चलकर दक्षिण भारतवर्ष मे आया और परिन्दा में स्थित भौंसा ग्राम में रहने लगा। इसी गांव के नाम पर उसके वंशज भौंसला कहलाए। इस ग्रन्थ से शिवाजी के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त होती। लेखक ने कुछ घटनाओं की तिथिया सही नहीं दी हैं। भीमसेन ने शिवाजी के संगठन सम्बन्धी प्रतिभा की काफी प्रशंसा की है। मराठों ने मुगलों के विरुद्ध जो विद्रोह किया, उसका कारण बताते हुए उसने लिखा है कि मराठा किसानों का शोषण होने के कारण उन्होंने विद्रोह का मार्ग अपनाया और मराठों की सेनाओं में शामिल हो गये।

22 ईश्वरदास नागर : फुतूहाते आलमगीरी

ईश्वरदास नागर भी हिन्दू इतिहासकार था जिसने फारसी भाषा में फुतूहाते आलमगिरी नामक ग्रन्थ की रचना की। वह गुजरात में पाटन नगर का रहने वाला था। यह उसकी सुप्रसिद्ध कृति है।

ग्रन्थ का एतिहासिक दृष्टि से महत्व

इस ग्रन्थ मे सात अध्याय हैं, जिनमें औरंगजेब के उत्थान से लेकर उसके राज्यकाल के 34 वें तक विस्तृत इतिहास है। फुतूहाते शाहजहा के बीमार होने से प्रारम्भ होती है तथा उसमे शासन हस्तगत करने के लिये दारा शिकोह के प्रयासों का भी उल्लेख हे। राजा जयसिंह और सुलेमान शिकोह द्वारा शुजा की पराजय का भी संक्षिप्त विवरण है। इसके अतिरिक्त लेखक ने मुरादद्वारा अली नकी के वध की सफाइ प्रस्तुत की है, उसका कथन है कि अलीनकी दारा से सांठ गाठ किये हुए था।

दूसरे अध्याय में सबसे चित्ताकर्षक तथ्य है। औरंगजेब का मुराद से यह वायदा करना कि वह उसको गद्दी पर बिठाने के बाद संसार से 'विरक्त' हो जायेगा। लेखक का यह भी कथन है कि खलीलुल्ला खां ने दारा को हाथी से उतरने का परामर्श देकर उसके साथ विश्वासघात किया। परन्तु उसका यह कथन किसी ठोस साक्ष्य पर आधारित न होने के कारण पूर्णरूपेण विश्वसनीय नही है। इसमें राजपूतो सम्बन्धी विवरण बहुत महत्वपूर्ण है।[1]

1– सक्सेना, बी पी (डा०) – मुगल सम्राट शाहजहा पृष्ठ 6 (प्रवेश)



23 सुजानराय : खुलासत-उत-तवारीख

सुजानराय खत्री ने 1695-96 ई० में खुलासत उत-तवारीख नामक ग्रन्थ की रचना की। वह पंजाब स्थित पटियाला नगर का निवासी था। इलियट ने अपनी पुस्तक भारत का इतिहास -(अष्टम खण्ड) में गलती से उसका नाम सुभानराय लिखा है। युवावस्था में वह उच्च शाही अधिकारियों का मुंशी रहा था। वह इतिहास में अपने उप नाम "भण्डारी" के नाम से भी प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति में 534 पृष्ठ हैं तथा यह भारत के अतिरिक्त यूरोप में भी उपलब्ध है। इस ग्रन्थ की अनेक प्रतियां ब्रिटिश म्युजियम, कलकत्ता, पटना एवं सहारनपुर में प्राप्य हैं। इसके अतिरिक्त दो प्रतियां रोयल एशियाटिक सोसायटी की लाईब्रेरी में हैं। यह भारत का प्रसिद्ध इतिहास है। इसमें पाण्डवों से लेकर औरंगजेब के शासनकाल तक का इतिहास है।

ग्रन्थ का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व

सुजानराय ने अपनी रचना के सम्बन्ध में रामायण से लेकर तारीखे बहादुरशाही तक आधारभूत ग्रन्थों की भी लम्बी तालिका प्रस्तुत की है। यह कहता है कि क्योंकि औरंगजेब तक जितने शासक हुए हैं उनके राज्यकाल का उसने संक्षिप्त विवरण ही दिया है। इसी कारण उसका नाम "खुलासत" रखा।[1]

इस ग्रन्थ के प्रमुख अध्याय निम्न प्रकार हैं हिंदुस्तान, उसकी पैदावार, यहां के निवासी एवं सूबों का वर्णन (प्राचीन हिन्दू राजा, गजनवी के सुलतान, दिल्ली के मुस्लिम सुलतान, बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां एवं औरंगजेब के शासनकाल का विवरण) सुजानराय ने लिखा है कि उसने 27 ग्रन्थ पूर्ववर्ती ग्रन्थों को आधार बनाकर इस ग्रन्थ की रचना की है। जिसमें तारीखे फीरोजशाही भी सम्मिलित है। परन्तु इलियट ने इस कथन को सही नहीं माना

1— सक्सेना, बी पी (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहां, पृष्ठ क (प्रवेश)

है। शाहनवाज खां ने अपनी कृति मआसिर उल-उमरा में इस ग्रंथ के बारे में लिखा है कि इसका लेखक एक हिन्दू था। इलियट का मानना है कि यह ग्रंथ 'मुन्तखिब-उत-तवारीख' नामक ग्रंथ की नकल है। सुजानराय ने अपने ग्रंथ की भूमिका में लिखा है कि मैंने किसी से कुछ नहीं चुराया है और अपने आप इस ग्रंथ की रचना की है। इस कथन से इलियट को यह सन्देह हो गया था। खुलासत उत-तवारीख का उर्दू में अनुवाद मीर शेर अली जाफरी ने किया जिसका उपनाम "अफसोस" था। यह अनुवाद ऐराइशे महफिल के नाम से भी प्रसिद्ध है।

खुलासत उत तवारीख में औरंगजेब की मृत्यु का विवरण भी दिया गया है। जबकि लेखक ने यह लिखा है कि उसने इस ग्रंथ की रचना 1695 96 ई० में की थी, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि 1696 ई० के बाद का इतिहास इस ग्रंथ में किसी दूसरे लेखक ने लिखा है। आधे ग्रंथ में तो लगभग सूर्यों और चगताई शासकों के पूर्ववर्ती हिन्दू और मुस्लिम सुलतानों का विवरण है। हिन्दुओं के कुम्भ के मेले का वर्णन करते हुए उसने लिखा है कि यह प्रति 12 वर्ष में बाद हरिद्वार में होता है। इस ग्रंथ के प्रारम्भिक अध्याय बहुत अच्छे लिखे हुए हैं। जिनमें हिन्दुस्तान की भौगोलिक स्थिति, एवं पैदावार का विवरण दिया गया है। गजनी वंश के शासकों का हिन्दुस्तान से सम्बन्ध का भी विस्तृत वर्णन किया गया है। दिल्ली के मुस्लिम सुलतानों (तुर्क) का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। सुजानराय ने प्रथम चार मुगल सम्राटों बाबर, हुमायूं, अकबर एवं जहांगीर का अच्छा वर्णन किया गया है। लेखक ने शाहजहां का इतिहास बहुत संक्षिप्त लिखने का कारण यह बताया है कि चूंकि वारिस खां ने शाहजहां का विस्तृत इतिहास लिखा है, इसलिये अधिक विवरण देना अनावश्यक है। औरंगजेब और उसके भाईयों के उत्तराधिकार के युद्ध का वर्णन बहुत ही विस्तृत किया गया है।

सुजानराय ने इतिहास के महत्व के बारे में लिखा है कि दुनिया में ईश्वरीय ज्ञान के बाद कोई ज्ञान है तो वह है इतिहास का ज्ञान। उसने हिन्दुस्तान के प्रान्तीय राज्यों का वर्णन मुस्लिम बादशाहों के शासन के साथ मिलाकर किया। उनका अलग अलग वर्णन नहीं किया है। शाहजहां ने अपने भाई खुसरो खां का वध करवाया था या नहीं, इस विषय में लेखक संदिग्ध है। उत्तराधिकार युद्ध

का वृतान्त देते हुए सुजानराय लिखता है कि जसवन्तसिंह इसलिये हारा कि राजा जयसिंह सिसोदिया और राजा सुजानसिंह चन्द्रावत ने उसका साथ छोड़ दिया था। वह यह भी लिखता है कि दारा खलील उल्लाह के कहने से हाथी से नहीं उतरा। दारा के सिंध में गुजरात भागने के बाद की घटना से सहसा ग्रन्थ समाप्त हो जाता है और लेखक यह कह देता है कि 92 वर्ष की अवस्था में औरंगजेब दक्षिण में परलोक सिधारा।[1]

1– सक्सेना, बी पी (डा०) मुगल सम्राट शाहजहां, पृष्ठ ३५ (प्रवेश)



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(अ) हिन्दी

1 इलियट एण्ड डाउसन - भारत का इतिहास (भाग 1 से 8 तक)
2- ईश्वरी प्रसाद (डा०) - भारतीय मध्य युग का इतिहास (1200 1526 ई०)
3- ठाकुर, केशवकुमार - बाबरनामा (अनु०)
4- निगम, एस० बी० पी० (डा०) तैमूर का इतिहास
5- नागोरी, एस० एल० (डा०) - राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत -
6 रिजवी, सैयद अतहर अब्बास (i) आदि तुर्ककालीन भारत
(ii) खिलजीकालीन भारत
(iii) तुगलककालीन भारत भाग एक एवं दो
(iv) उत्तर तैमूरकालीन भारत भाग एक एवं दो
(v) मुगलकालीन भारत
7- लूनिया, बी० एन० - अकबर महान्
8- शर्मा, एम० एल० (डा०) (i) तुजुक ए बाबरी (अनु०)
(ii) अकबरनामा (शेख अबुल फजलकृत का अनु
9 सक्सेना, आर० के० (डा०) - तुजुक-ए-तैमूरी (अनु०)
10 सक्सेना, बी० पी० (डा०) - मुगल सम्राट शाहजहाँ
11- श्रीवास्तव, ए० एल० (डा०) - अकबर महान् भाग प्रथम

(ब) अंग्रेजी

1- Basu, K K - English Tr or Traikh-I-Mubarakshahi
2- Beveridege A S, (I) Memories of Babar
(II) Gulbadan Begum s Humyaun Namah
3- Habib Mohammad - Life and works of Hazarat Amir Khusrau
4- Mirza M W - Life and works of Amir - Khusrau
5- Smith V A - Akbar the Great Mughal



डॉ एस एल नागोरी
4 जुलाई, 1949 को
डूगला जिला चित्तौड़गढ़
(राज०) म जन्म।

* 1972 म बी ए प्रथम श्रेणी म
* 1974 मे एम ए इतिहास प्रथम श्रेणी म प्रथम रहकर स्वर्णपदक प्राप्त किया और उदयपुर विश्वविद्यालय में कीर्तिमान स्थापित किया।
* 1978 म 'अलवर राज्य का इतिहास' विषय पर पीएच डी।
* विगत ग्यारह वर्षों से स्नातक एव स्नातकोत्तर कक्षाओ म अध्यापन।
* सम्प्रति राजकीय महाविद्यालय, सिरोही (राज०) के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग म प्राध्यापक।

प्रकाशित कृतियाँ

* अलवर राज्य का इतिहास
* विश्व का इतिहास
* विश्व की प्राचीन सभ्यताओ का इतिहास
* भारतीय सभ्यता एव संस्कृति का इतिहास
* राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत
* आधुनिक विश्व का इतिहास
* भारतीय संस्कृति
* प्राचीन भारत

शीघ्र प्रकाश्य

* भारत के स्वतन्त्रता सेनानी
* आधुनिक भारत
* भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन